अध्याय I

परिचय

1.1 जनपद की रूपरेखा

अल्मोड़ा उत्तराखण्ड के पूर्व में स्थित कुमाऊँ मण्डल का एक पहाड़ी जनपद है। समुद्रतल से लगभग 1638 मीटर की दूरी पर स्थित इस जनपद के पूर्व में पिथौरागढ़, पश्चिम में गढ़वाल मण्डल, उत्तर में बागेश्वर और दक्षिण में नैनीताल जनपद स्थित हैं। जनपद का कुल क्षेत्रफल 3139 वर्ग किमी है, जिसमें लगभग 1309 वर्ग किमी वन क्षेत्रफल है। जनपद अल्मोड़ा अपने समृद्ध इतिहास, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक विरासत, सुंदर परिदृश्य, हस्तशिल्प और भोजन के लिए जाना जाता है। इतिहासकार ई.टी. एटकिंसन के अनुसार, अल्मोड़ा शहर की स्थापना चंद राजवंश के 43 वें शासक, राजा भीष्म चंद ने 1530 ई0 में की थी। सन् 1864 में ब्रिटिश शासन के तहत छावनी, चर्च और सर्किट हाउस आदि जैसे कई आर्किटेक्चर बनाए गए थे। अल्मोड़ा नगरपालिका उत्तराखण्ड की सबसे पुरानी नगर पालिका है। जनपद में बर्फ और जंगल से ढके ऊँचे पहाड़ और उपजाऊ घाटियां हैं। सरयू, रामगंगा, कोसी, गगास और सुयाल अल्मोड़ा जनपद से होते हुए बहने वाली प्रमुख नदियाँ हैं।

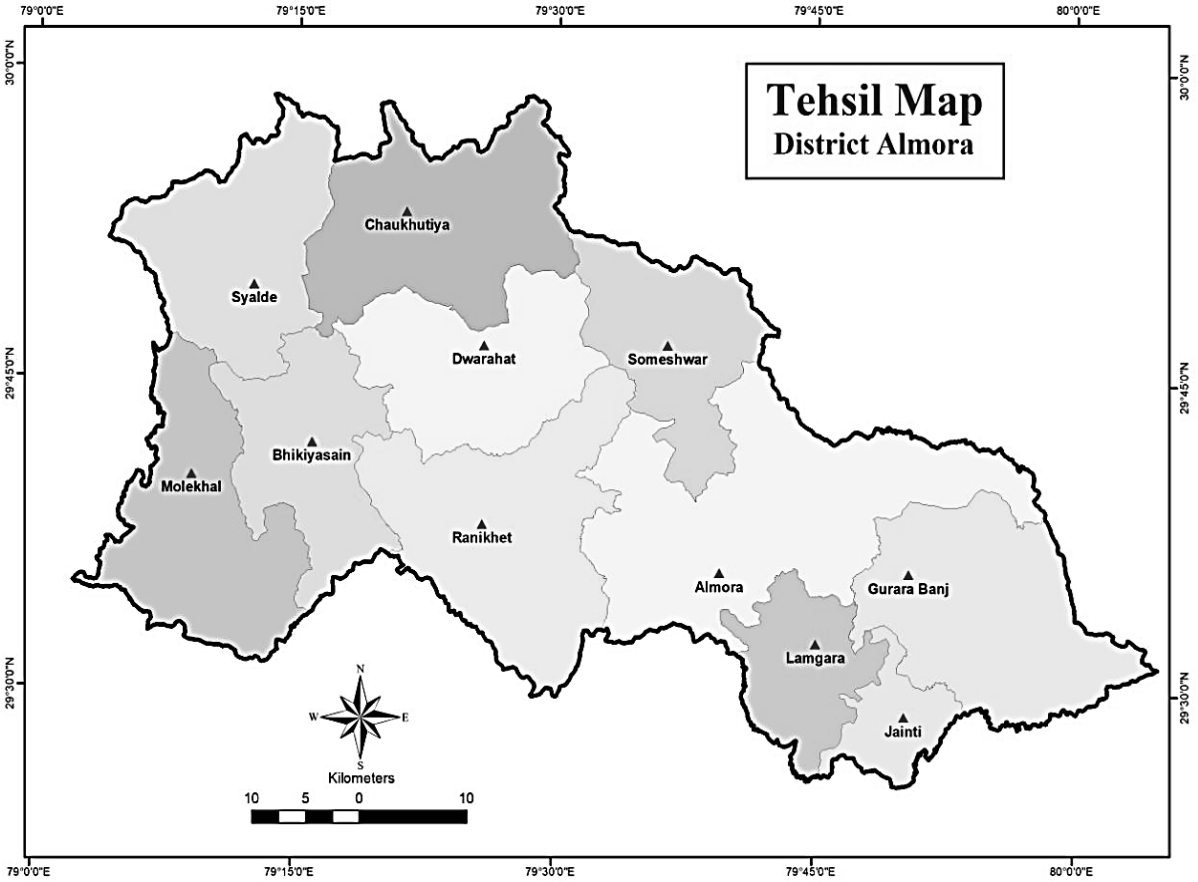

Figure 1Image source: https://almora.nic.in/

1.2 जनसंख्या :–

वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार जनपद की कुल जनसंख्या 6,22,506 है, जिसका जनसंख्या घनत्व प्रति व्यक्ति 198 वर्ग किमी0 है। जनपद की 89% आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। वर्ष 2016–17 के लिए औसत जन्म दर और मृत्यु दर क्रमशः 15.80% और 6% है। जनपद में 1,40,577 परिवार हैं जो कि राज्य में कुल परिवारों का 6.83% है। 2001–2011 के दौरान जनपद की जनसंख्या में ऋणात्मक वृद्धि दर अर्थात –1.64 प्रतिशत दर्ज की गई है।

पिछली कई जनगणनाओं में जनपद की आबादी में लगातार गिरावट देखी गई है। वर्ष 1981–1991 में जनसंख्या वृद्वि दर 8.94% थी, जो कि 2001 में घटकर 3.67% हुई तथा 2011 की जनगणना में यह दर –1.64% रह गई है। साथ ही कुल परिवारों की संख्या 1981 में 1,12,528 थी,जो 1991 में 1,23,618 तथा 2001 में यह संख्या 1,31,525 हो गयी है।

1.3 प्रषासनिक व्यवस्था :–

जनपद को प्रशासनिक सुविधा की दृष्टिकोण से 6 उपखण्डों जैसे – अल्मोड़ा, जैंती, द्वाराहाट, रानीखेत, भिकियासैंण, और सल्ट में विभाजित किया गया है। 12 तहसीलें, 2 उप–तहसीलें, और 11 विकासखण्ड हैं, इसके अतिरिक्त जनपद में 95 न्याय पंचायते, 1166 ग्राम पंचायतें और 2289 ग्राम हैं।

जनपद	उपखण्ड	तहसील	विकासखण्ड
अल्मोड़ा	1. अल्मोड़ा 2. जैंती 3. द्वाराहाट 4. रानीखेत 5. भिकियासैंण 6. सल्ट	1. सोमेश्वर 2. जैंती 3. भनोली 4. लमगड़ा (उप तहसील) 5. द्वाराहाट 6. चौखुटिया 7. जल्ली 8. बगवाली पोखर 9. रानीखेत 10. भिकियासैंण 11. स्याल्दे 12. सल्ट 13. मछौर (उप तहसील)	1. स्याल्दे 2. चौखुटिया 3. भिकियासैंण 4. ताड़ीखेत 5. सल्ट 6. ताकुला 7. भैंसियाछाना 8. हवालबाग 9. लमगड़ा 10. धौलादेवी 11. द्वाराहाट

Source: https://almora.nic.in/

1.4 भू–संरचना :–

जनपद की स्थलाकृति समुद्र तल से 750 मीटर से 2000 मीटर की ऊँचाई तक स्थापित है। इसे पहाड़ी तथा घाटी दो क्षेत्रों में विभाजित किया गया है। पहाड़ी क्षेत्रों के अर्न्तगत डोटियाल (मनीला), मलिखेत (स्याल्दे), बौंखाल (सल्ट), चौबटिया, बिनसर आदि हैं, ये क्षेत्र बुराँश, बाँज, चीड़, देवदार, काफल आदि सदाबहार एवं पर्णपाती घने जंगलों से घिरे हैं। दूसरी ओर, समुद्र तल से 600 मीटर से 1200 मीटर

की ऊँचाई पर नदियों के किनारे का क्षेत्र घाटी क्षेत्र कहलाता है। अर्थात इस क्षेत्र को स्थानीय रूप से सेरा कहा जाता है, जैंसे बौसुलीसेरा, रावलसेरा, बेरातसेरा, सोमेश्वरसेरा, चौखुटिया, मासीसेरा आदि। ये सेरा (घाटियाँ) बहुत उपजाऊ हैं और इनमें सिंचाई के लिए गूल एवं सूक्ष्म नहरें भी उपलब्ध हैं।

1.5 जलवायु :–

जलवायु की परिस्थिति क्षेत्र की ऊँचाई पर निर्भर करती है। यहाँ का वार्षिक तापमान -2°C से 36°C तक होता है। अधिक ऊँचाई वाले क्षेत्रों में सर्दियों में बर्फबारी का आनन्द भी लिया जाता है, यहाँजुलाई से सितम्बर के तक बरसात का मौसम रहता है, एवं अन्य महीनों में मौसम सुहावना होता है।

1.6 शहरी केन्द्र :–

जनपद में अल्मोड़ा तथा रानीखेत दो शहरी केन्द्र हैं तथा दोनों ही छावनी क्षेत्र भी हैं। अल्मोड़ा जनपद का मुख्यालय के साथ ही एक पर्यटक गंतव्य भी है। कई महापुरूषों जैसे महात्मा गांधी, रवीन्द्र नाथ टैगोर, स्वामी विवेकानन्द, प0 रविशंकर आदि द्वारा भ्रमण कर जनपद की प्रशंसा की गई है तथा इसे सांस्कृतिक और आध्यात्मिक गंतव्य माना गया है।

रानीखेत एक छावनी क्षेत्र और कुमाऊँ रेजीमेंट का केन्द्र है। यह एक सुन्दर शहर है औरघास के मैदानों के लिए प्रसिद्ध है। रानीखेत हर साल हजारों पर्यटकों को आकर्षित करता है।

1.7 प्रक्रिया एवं पद्वति :–

यह रिपोर्ट जनपद के सामाजिक–आर्थिक मानकों का विस्तार से जाँच करती है, विशेषतः उन कारणों के संदर्भ में जो ग्रामीण क्षेत्रों से पलायन पर असर डालती हैं। द्वितीयक जानकारी जनपद के अर्थ एवं सांख्यिकी विभाग एवं रेखीय विभागों के जनपदस्तरीय अधिकारियों की प्रकाशित और अप्रकाशित रिपोर्टों से ली गई हैं। प्रारम्भिक जानकारी आयोग की टीम, खण्ड विकास अधिकारियों, और ग्राम विकास अधिकारियों के द्वारा क्षेत्र भ्रमण से संगृहीत की गई सूचनाओं पर आधारित है। प्रत्येक विकासखण्ड से ग्राम स्तरीय आंकड़े एकत्र कर विश्लेषण किया गया है। आंकड़े और जानकारी आयोग के विशिष्ट प्रश्नावली प्रारूप पर ग्राम विकास अधिकारियों और खण्ड विकास अधिकारियों द्वारा किये गये प्राथमिक सर्वेक्षण पर आधारित हैं।

इस रिपोर्ट में जनपद की ग्रामीण सामाजिक–अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के लिए सिफारिशें प्रस्तुत की गई हैं, जिससे पलायन कम होगा। पलायन से प्रभावित लगभग 20 ग्रामों/तोकों के लिए योजना तैयार की गई है, जहाँ सामाजिक–आर्थिक विकास के लिए आर्थिक गतिविधियों को बढावा दिया जा सकता है। इससे स्थानीय सामाजिक–अर्थव्यवस्था को भी बढावा मिलेगा एवं पलायन पर भी अकुंश लगेगा।

संदर्भ

- https://almora.nic.in/
- जनगणना 2011, कार्यालय उत्तराखण्ड़ रजिस्ट्रार जनरल और जनगणना आयुक्त।
- अर्थ एवं सांख्यिकी विभाग, उत्तराखण्ड़।
- सांख्यिकी पत्रिका, अल्मोड़ा

अध्याय II

विकासखण्ड वार सामाजिक–आर्थिक आकड़ों का विष्लेषण एवं रूझान

2.1 जनसांख्यिकी

जनपद अल्मोड़ा राज्य के कुल भौगोलिक क्षेत्र का लगभग 5.78% है। जनगणना 2011 के अनुसार, जनपद की जनसंख्या 6,22,506 है, जिसमें पुरूष जनसंख्या 2,91,081 और महिला जनसंख्या 3,31,425 है। जनपद की जनसंख्या राज्य की आबादी का लगभग 6.15% है और 90% से अधिक जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। 2001 की जनगणना में जनपद का जनसंख्या घनत्व 170 था जो वर्ष 2011 में बढ़कर 198 हो गया है, जिससे यह राज्य का पांचवा सबसे घनी आबादी वाले जनपदों की श्रेणी में शामिल हुआ है। अल्मोडा में लिंगानुपात 1139 है, जो राज्य और राष्ट्रीय औसत से अधिक है। जनपद में वर्ष 2016–17 तक औसत जन्म दर प्रति हजार जनसंख्या पर 15.80 और 6.00 की मृत्यु दर है।

2.2 जनसंख्या

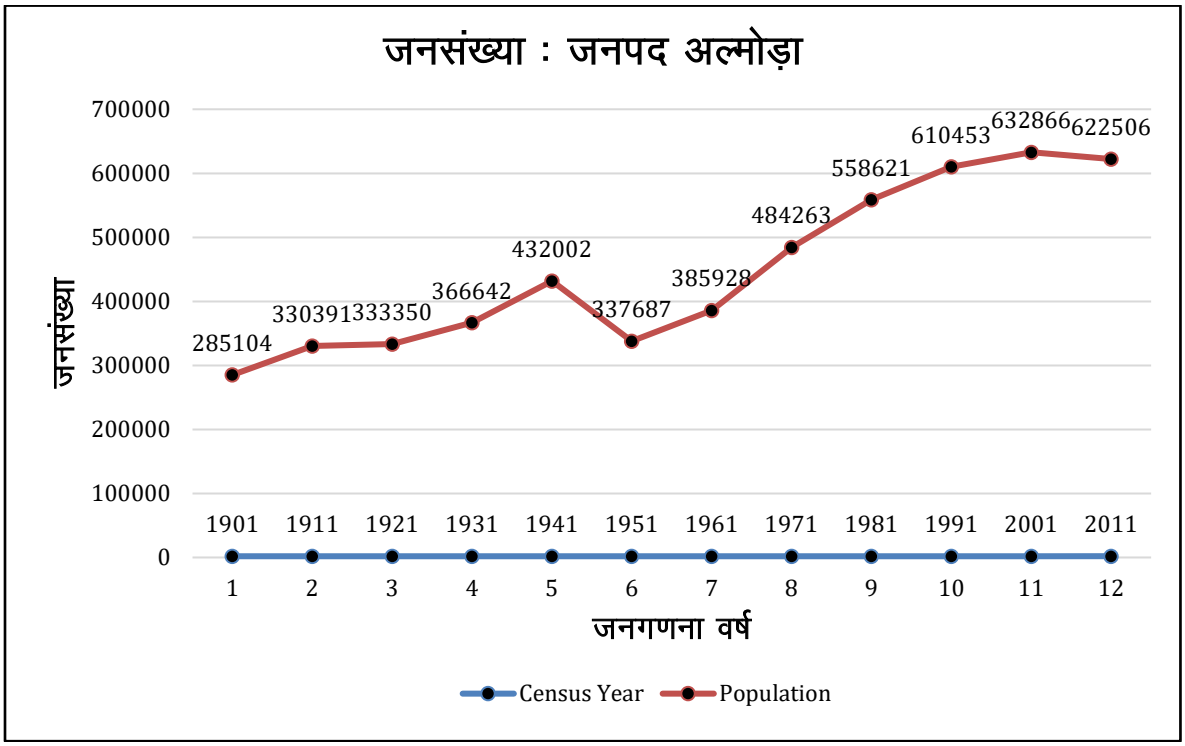

Figure 2.1: Source: https://almora.nic.in/

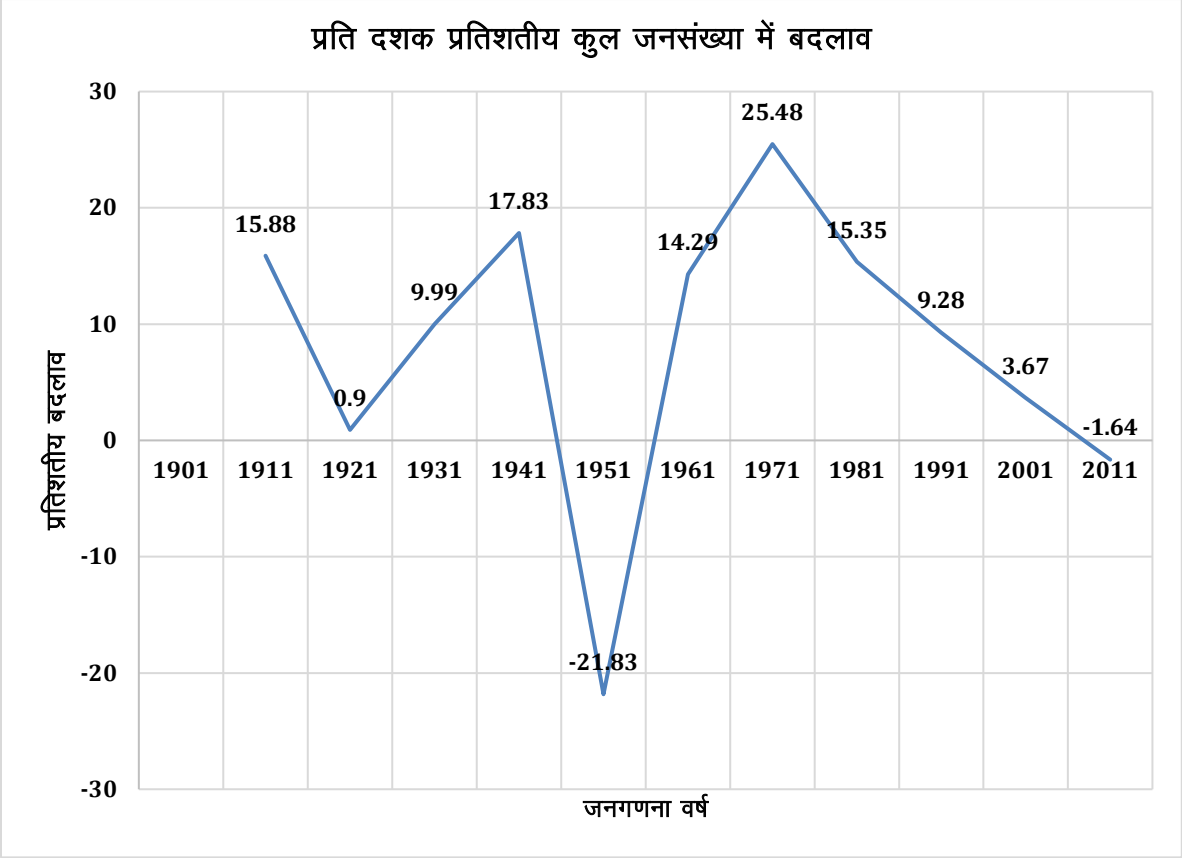

Figure 2.2: Source: Statistical Magazine, Almora

ग्राफ 2.1 स्पष्ट रूप से आकडें प्रस्तुत करता है कि जनपद की कुल जनसंख्या में गिरावट हुई है। जनपद ने 2001–2011 की जनगणना अवधि के लिए –1.64% की नकारात्मक गिरावट का अनुभव किया है। इस अवधि के लिए जनसंख्या 2001 में 6,30,567 से घटकर 2011 में 6,22,506 हो गई है। ग्रामीण आबादी कुल जनसंख्या का 90% से अधिक है और 2001–2011 की जनगणना के दौरान शहरी आबादी में 25.51% की वृद्धि हुई है। ग्रामीण क्षेत्रों के लिए लिंगानुपात 1177 है और शहरी क्षेत्रों के लिए यह 1000 पुरूषों पर 848 महिलाएं है। देश के सर्वोच्च लिंगानुपात वाले शीर्ष जनपदों में अल्मोड़ा भी शामिल है। जनपद की औसत जन्म दर और मृत्यु दर वर्ष 2016–17 के लिए क्रमशः 15.80 और 6.00 प्रति हजार जनसंख्या है।

ग्राफ 2.1 जनपद की विकासखण्ड वार जनसंख्या वितरण को दर्शाती है। 11 विकासखण्डों में से 7 में नकारात्मक जनसंख्या वृद्धि रही है। हालांकि, जनपद की दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर –1.64% है, लेकिन ग्रामीण आबादी के लिए यह –4.20% है अर्थात ग्रामीण आबादी शहरी केन्द्रों की ओर पलायन कर रही है। जनपद की अधिकांश आबादी अर्थात् 39.35% का रोजगार कृषि है, उसके बाद 34.13% दैनिक मजदूरी है। राज्य में पलायन की स्थिति पर, आयोग की रिपोर्ट के अनुसार, लगभग 42.22% प्रवासी 26–35 वर्ष के आयु वर्ग में आते हैं। इस रिपोर्ट के अध्याय 3 में एक विस्तृत जानकारी दी गई है।

तालिका 2.1 : जनपद में जनसंख्या वितरण						
वर्ष / विकासखण्ड	क्षेत्रफल (वर्ग.किमी.)	कुल जनसंख्या	ग्रामीण जनसंख्या	शहरी जनसंख्या	ग्रामीण जनसंख्या में % परिवर्तन	शहरी जनसंख्या में % परिवर्तन
1991	**3697**	**610453**	**562718**	**47735**	**8.41%**	–
2001	**3139**	**632866**	**578361**	**54505**	**2.78%**	**14.18%**
2011	**3139**	**622506**	**554096**	**68410**	**–4.20%**	**25.51%**
विकासखण्ड वार (2011)						
स्याल्दे	241.4	44747	44747	–	–9.17%	–
चौखुटिया	192.1	46039	46039	–	–6.08%	–
भिकियासैंण	214.06	28962	28962	–	–21.78%	–
ताड़ीखेत	241.32	64063	64063	–	–7.45%	–
सल्ट	302	56095	56095	–	–8.85%	–
द्वाराहाट	207.4	60066	60066	–	–2.42%	–
ताकुला	113.6	45883	45883	–	1.23%	–
भैंसियाछाना	96.4	26634	26634	–	0.85%	–
हवालबाग	198.76	67447	67447	–	0.28%	–
लमगड़ा	214.2	52169	52169	–	10.18%	–
धौलादेवी	324.4	60620	60620	–	–3.54%	–
योग विकासखण्ड	2345.64	552725	552725	68967	–4.20%	–
वन	751.2	814	814	–	–0.25%	–
ग्रामीण क्षेत्रफल	**3096.84**	**553539**	**553539**	**68967**	**–4.20%**	–
शहरी क्षेत्रफल	**42.16**	**68967**	**0**	–	–	**25.51:**
योग जनपद	**3139**	**622506**	**553539**	**68967**	**–4.20%**	

स्रोतः डीईएस, अल्मोड़ा

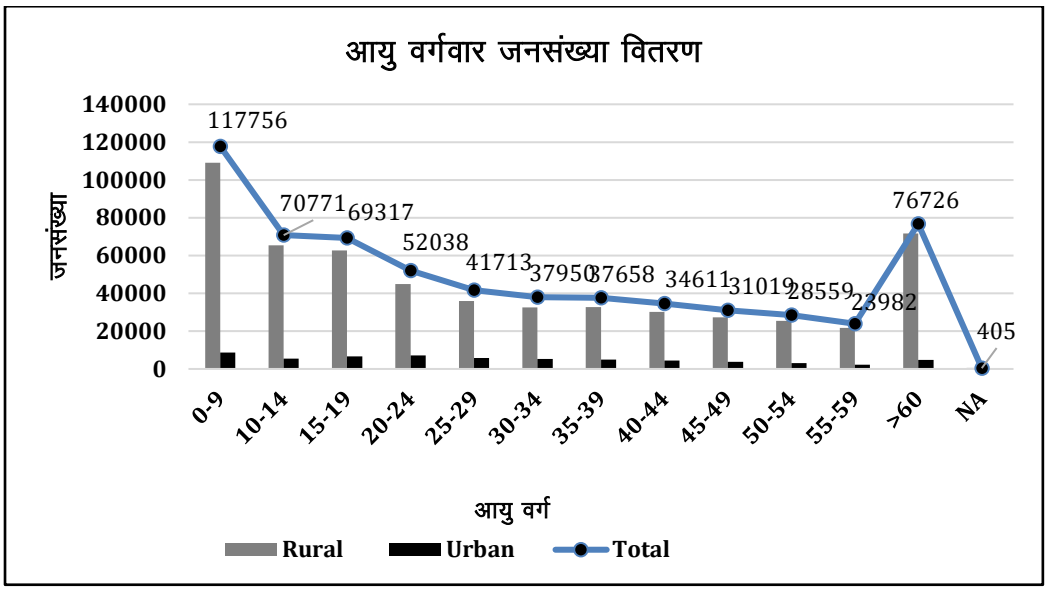

ग्राफ 2.3 : स्रोत सांख्यकीय पत्रिका, अल्मोड़ा

इसके अलावा, अगर हम जनपद की आयु वार जनसंख्या के आंकड़ों को देखें, जैसा कि आंकड़ा ग्राफ 2.3 में है, जिससे स्पष्ट होता है कि 20–49 वर्ष का आयु वर्ग कुल जनसंख्या का केवल 38% है। जो कि कामकाजी आबादी है और आजीविका, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि में बेहतर अवसरों के लिए राज्य, देश या विदेश के शहरी केन्द्रों की ओर पलायन कर गई है। 20 वर्ष से कम आयु वर्ग की जनसंख्या, कुल जनसंख्या का 41.42% है।यदि वर्तमान सामाजिक–आर्थिक स्थितियों में सुधार नहीं किया गया तो निकट भविष्य में यह आयु वर्ग जनपद से प्रवासियों की आने वाली पीढ़ी होगी।

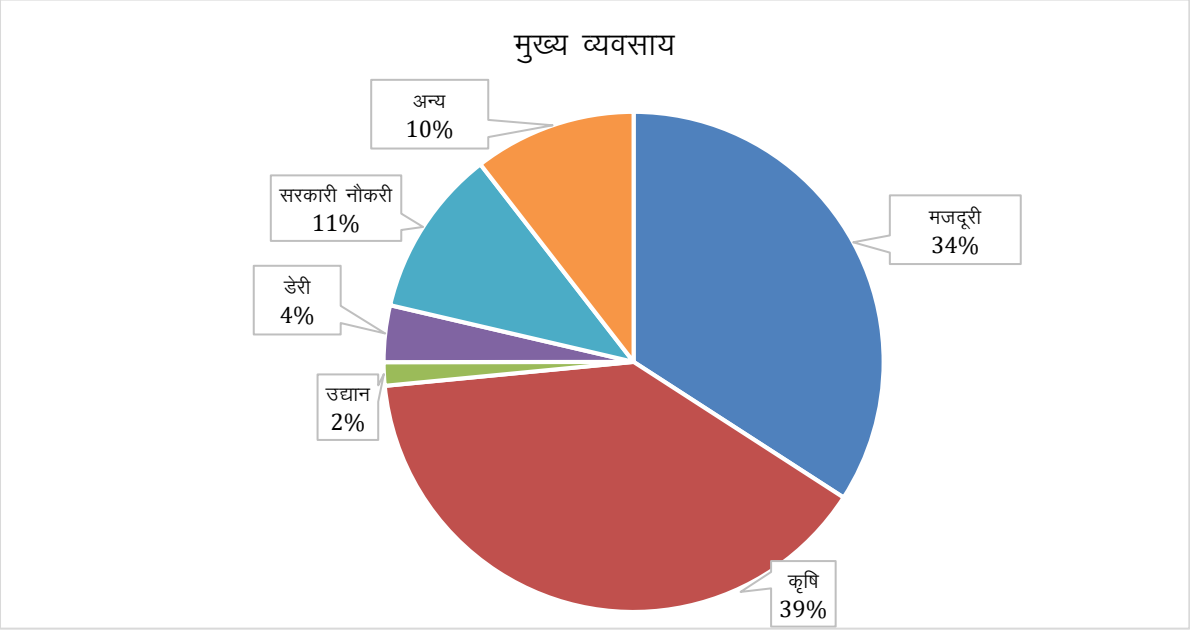

ग्राफ 2.4 : स्रोत सांख्यकीय पत्रिका,अल्मोड़ा

2.3 षिक्षा और साक्षरता :–

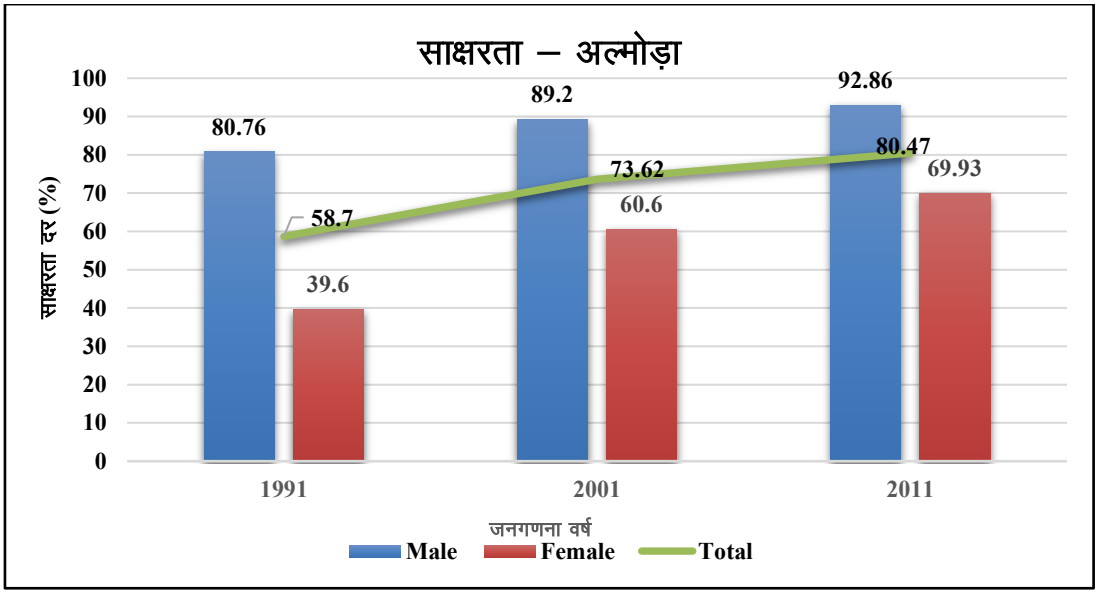

ग्राफ 2.5 : स्रोत सांख्यकीय पत्रिका, अल्मोड़ा

जनपद की साक्षरता दर 80.47% है, जिसमें पुरूष और महिला साक्षरता दर क्रमशः 92.86% और 69.93% है। साक्षरता दर में दशकीय परिवर्तन का आंकड़ा ऊपर ग्राफ 2.5 में दिखाया गया है। जनपद के भीतर, विकासखण्ड हवालबाग और ताड़ीखेत में साक्षरता दर क्रमशः 83.69% और 83.36% है। निम्न तालिका 2.2 जनपद में प्राथमिक विद्यालय से लेकर पीजी कॉलेज तक शैक्षिक संस्थानों के विकासखण्ड वार संख्या को दर्शाया गया है।

तालिका 2.2: जनपद अल्मोड़ा में विकासखण्ड वार षिक्षण संस्थाएं									
वर्ष / विकासखण्ड	जूनियर बेसिक स्कूल	उच्च बेसिक स्कूल		उच्च माध्यमिक स्कूल		डिग्री कॉलेज		पीजी कॉलेज	
		योग	बालिकाएं	योग	बालिकाएं	योग	बालिकाएं	योग	बालिकाएं
2014–15	1458	194	29	311	36	5	0	4	0
2015–16	1458	194	29	360	39	5	0	4	0
2016–17	1458	159	29	363	39	6	0	7	0
विकासखण्ड वार 2016–17									
स्याल्दे	131	12	2	36	3	0	0	1	0
चौखुटिया	124	12	3	22	2	2	0	0	0
भिकियासैंण	107	13	3	47	3	1	0	0	0
ताड़ीखेत	140	15	2	29	2	0	0	0	0
सल्ट	165	21	2	48	2	0	0	1	0
द्वाराहाट	115	20	1	27	4	0	0	1	0
ताकुला	92	5	2	30	4	0	0	1	0
भैंसियाछाना	80	7	1	17	2	0	0	0	0
हवालबाग	133	6	2	27	4	1	0	0	0
लमगड़ा	140	10	2	26	1	0	0	1	0
धौलादेवी	169	18	4	42	5	1	0	0	0
योग ग्रामीण	**1396**	**139**	**24**	**351**	**32**	**5**	**0**	**5**	**0**
योग शहरी	62	20	5	12	7	1	0	2	0
योग जनपद	**1458**	**159**	**29**	**363**	**39**	**6**	**0**	**7**	**0**

स्रोतः डीईएस, अल्मोड़ा

तालिका 2.3 : अल्मोड़ा जनपद में विकासखण्ड वार प्रषिक्षण संस्थान									
वर्ष / विकासखण्ड	पॉलिटेक्निक संस्थान			औद्योगिक प्रषिक्षण संस्थान			अध्यापक प्रषिक्षण संस्थान		
	इकाई	उपलब्ध सीट	प्रवेष	इकाई	उपलब्ध सीट	प्रवेष	इकाई	उपलब्ध सीट	प्रवेष
2014–15	8	770	494	16	1202	751	1	50	43
2015–16	12	820	515	18	1460	805	1	50	41
2016–17	12	748	441	18	1764	856	1	50	39
विकासखण्ड वार 2016–17									
स्याल्दे	1	0	0	1	20	10	0	0	0
चौखुटिया	1	0	0	1	52	27	0	0	0
भिकियासैंण	1	40	20	1	56	26	0	0	0

ताड़ीखेत	0	0	0	2	152	60	0	0	0
सल्ट	1	80	39	3	200	69	0	0	0
द्वाराहाट	1	208	179	1	52	26	0	0	0
ताकुला	2	80	36	1	68	27	0	0	0
भैंसियाछाना	1	50	33	1	52	22	0	0	0
हवालबाग	0	0	0	2	176	59	0	0	0
लमगड़ा	2	65	25	1	120	52	0	0	0
धौलादेवी	1	25	18	2	168	67	0	0	0
योग ग्रामीण	**11**	**548**	**350**	**16**	**1116**	**445**	**0**	**0**	**0**
योग शहरी	**1**	**200**	**91**	**2**	**648**	**411**	**1**	**50**	**39**
योग जनपद	**12**	**748**	**441**	**18**	**1764**	**856**	**1**	**50**	**39**

स्रोतः डीईएस, अल्मोड़ा

उपरोक्त तालिका 2.3 जनपद में प्रशिक्षण संस्थानों की संख्या को दर्शाती है। विकासखण्ड़ ताड़ीखेत और हवालबाग में कोई पॉलिटेक्निक संस्थान नहीं है, विकासखण्ड़ स्याल्दे और चौखुटिया में पॉलिटेक्निक संस्थान हैं, लेकिन गैर–कार्यात्मक हैं। सम्पूर्ण जनपद में 748 पॉलिटेक्निक सीटों में से केवल 441 सीटों पर ही छात्र हैं, अर्थात् 58.95% की प्रवेश हुए। आईटीआई के लिए भी 1764 सीटों में से केवल 856 सीटों पर ही प्रवेश हुए, अर्थात् 48.52% छात्रों द्वारा ही प्रवेश लिया गया। ये संस्थान छात्र संख्या की दृष्टि से अपनी क्षमता एवं दक्षता के अनुरूप कार्य करने में असमर्थ हो रहे हैं।

2.4 स्वास्थ्य :–

तालिका 2.4 :जनपद अल्मोड़ा में विकासखण्ड वार चिकित्सालय एवं स्वास्थ्य केन्द्र						
वर्ष / विकासखण्ड	एलोपैथिक चिकित्सालय / औधालय (संख्या)	प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र (संख्या)	कुल बेडों की संख्या	कुल कर्मचारी		
				डॉक्टर	पैरामेडिकल	अन्य
2014–15	45	28	704	12	496	395
2015–16	43	24	704	132	496	395
2016–17	58	24	712	132	496	395
विकासखण्ड वार 2016–17						
स्याल्दे	4	1	28	3	35	12
चौखुटिया	2	2	46	5	38	14
भिकियासैंण	5	3	58	9	42	21
ताड़ीखेत	4	2	24	6	52	14
सल्ट	4	3	32	7	47	15
द्वाराहाट	8	2	62	15	54	21
ताकुला	4	2	24	4	40	13
भैंसियाछाना	2	2	16	4	25	12
हवालबाग	2	4	20	6	46	17
लमगड़ा	3	0	30	7	43	14
धौलादेवी	4	3	32	8	48	18

योग ग्रामीण	42	24	372	74	470	171
योग शहरी	16	0	340	58	26	224
योग जनपद	58	24	712	132	496	395

स्रोतः डीईएस, अल्मोड़ा

तालिका 2.4 जनपद में एलोपैथिक स्वास्थ्य सेवाओं के बारे में है। आकडें स्पष्ट करते है कि प्रति 5000 जनसंख्या पर 1 डॉक्टर या प्रति लाख जनसंख्या पर 22 डॉक्टर्स हैं, राष्ट्रीय औसत वर्ष 2016 के लिए प्रति लाख आबादी पर 80 डॉक्टर्स हैं। 2016–17 के अनुसार, जननद अल्मोड़ा में 4 बड़े अस्पताल, 9 सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, 1 टीबी अस्पताल, 6 महिला अस्पताल, 1 बेस अस्पताल, 1 संयुक्त अस्पताल और 2 सहायता प्राप्त निजी अस्पताल हैं।

एच.डी.आर. 2018 के अनुसार 2017 में जनपद की जन्म के समय जीवन प्रत्याशा 71.9 वर्ष है वहीं राज्य औसत 71.3 वर्ष है। पुरूषों की जीवन प्रत्याशा 69.2 वर्ष तथा महिलाओं के लिए यह 75 वर्ष है।

2.5 अर्थव्यवस्था :–

अल्मोड़ा एक पर्वतीय जनपद है, अर्थव्यवस्था का अधिकांश भाग परंपरागत कृषि, बागवानी, पशुधन, वन एवं लॉगिंग, खनन और उत्खनन पर निर्भर करता है। मौजूदा कीमतों पर अर्थव्यवस्था का आकार यानी GDDP वर्ष 2011–12 में रू0 4,28,018 लाख, वर्ष 2012–13 में रू0 4,90,303 लाख, 2013–14 में रू0 5,63,108 लाख, अनुमानित है। वर्ष 2014–15 में रू0 5,58,426 लाख, वर्ष 2015–16 के लिए रू0 5,98,345 लाख और वर्ष 2016–17 के लिए रू0 6,60,378 लाख है। प्रतिशत वृद्धि के संदर्भ में अर्थव्यवस्था का आकार वर्ष 2012–13 में 14.55% , वर्ष 2013–14 में 14.85%, वर्ष 2014–15 में –0.83%, वर्ष 2015–16 में 7.15% और वर्ष 2016–17 में क्रमशः पिछले वर्षों से बढ़कर 10.37% हुआ है। अर्थव्यवस्था की वृद्वि अर्थात GDDP स्थिर कीमतों पर वर्ष 2011–12 में रू0 4,28,018 लाख, वर्ष 2012–13 में रू0 4,58,385 लाख, वर्ष 2013–14 में रू0 5,06,144 लाख, वर्ष 2014–15 में रू0 4,88,369 लाख, वर्ष 2015–16 के लिए रू0 5,11,911 लाख और वर्ष 2016–17 के लिए रू0 5,45,139 लाख है। प्रतिशत वृद्धि के संदर्भ में, GDDP स्थिर मूल्य पर अर्थात 2012–13 में 7.09%, वर्ष 2013–14 में 10.42%, 2014–15 में –3.51%, वर्ष 2015–16 में 4.82% और वर्ष 2016–17 में 6.49% क्रमशः पिछले वर्षों के संबंध में वृद्धि दर्ज हुई है।

एच.डी.आर. 2018 की रिपोर्ट में दर्शाया गया है कि जनपद की 30.7% आबादी गरीबी रेखा से नीचे रहती है,राज्य स्तर पर यह आंकड़ा 15.6% है

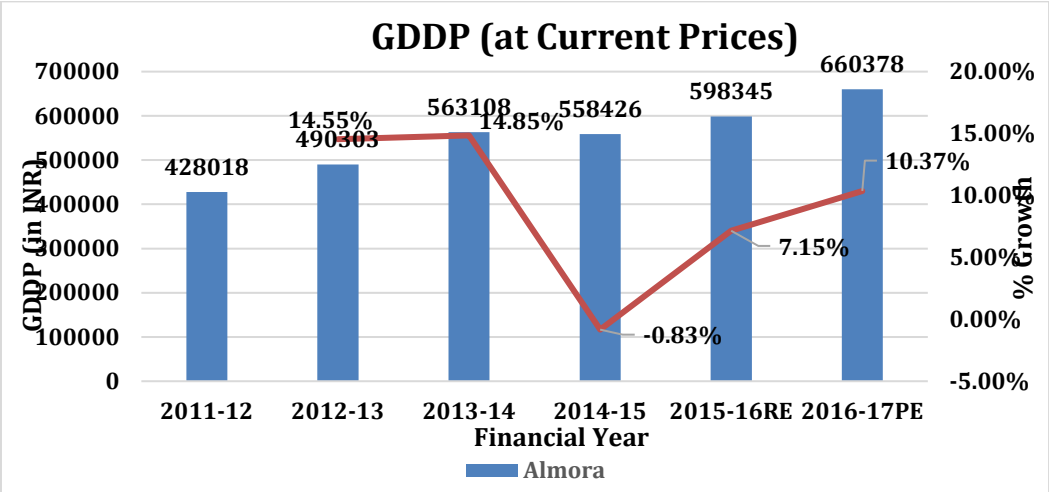

ग्राफ 2..6 : स्रोतः डीईएस, अल्मोड़ा

वर्ष 2011–12 में प्रति व्यक्ति आय रू0 60,550, वर्ष 2012–13 में रू0 70,056, वर्ष 2013–14 में रू0 79,866, वर्ष 2014–15 में रू0 80,512, वर्ष 2015–16 में रू0 86,961, वर्ष 2016–17 के लिए रू0 96,786 है। प्रतिशत वृद्धि के संदर्भ में, वर्तमान मूल्य प्रति व्यक्ति NDDP वर्ष 2012–13 में प्रति व्यक्ति आय 15.70%, वर्ष 2013–14 में 14.00%, वर्ष 2014–15 में 0.81%, वर्ष 2015–16 में में 8.01%, पिछले वर्ष के संबंध में क्रमशः वर्ष 2016–17 में 11.30% में वृद्धि दर्ज हुई है। वर्ष 2016–17 के लिए जनपद की प्रति व्यक्ति आय रू0 96,786 है, जबकि हरिद्वार के लिए यह रू0 2,54,050 है यानी अल्मोड़ा जनपद से 2.5 गुना अधिक है। अगर हम एक ग्रामीण परिवार की आय लेते हैं, तो उनमें से लगभग 73% प्रति माह रू0 5000 से कम कमाते हैं। यह जनपद उत्तरकाशी(स्रोतः डीईएस, अल्मोड़ा) के बाद सबसे कम आय है।

तालिका 2.5 : ग्रामीण परिवार की मासिक आय			
अल्मोड़ा	5,000रू0 से कम	5,000रू0 से 10,000रू0	10,000 रू0 से अधिक
	73.30%	16.24%	10.46%

स्रोतः आर्थिक सर्वेक्षण 2017

2.5.1 प्राथमिक क्षेत्र :–

हालांकि कृषि आजीविका का प्राथमिक स्रोत है, परन्तु वर्तमान समय में खेती और प्राथमिक क्षेत्र का योगदान दोनों घट रहा है। कृषि का योगदान GSDP में 2011–12 में 31% से घटकर 2016–17 में 21% हो गया है। 3,139 वर्ग किमी के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल में से केवल 17.11% खेती योग्य भूमि है। जनपद में प्रमुख फसलें जैसे मंडुआ, धान, गेहूं, दाल, तिलहन आदि की खेती की जाती है। जनपद की प्राकृतिक विविधता और जलवायु बागवानी जैसी गतिविधियों के लिए उपयुक्त है, लेकिन वर्तमान में जनसंख्या का केवल 1.51% जनसंख्या ही इस क्षेत्र में लगी हुई है। इस क्षेत्र में अपार सम्भावनाएं हैं जिसका उपयोग किया जाना उचित होगा।

2.5.2 माध्यमिक क्षेत्र :–

यह क्षेत्र GSDP में योगदान के लिए वर्ष 2011–12 और 2016–17 के बीच लगभग 34% तक स्थिर रहा है। माध्यमिक क्षेत्र के न बढ़ना कम ग्रामीण आय को दर्शाता है। कृषि की उत्पाकता में कमी तथा आजीविका के विकल्पों की अनुपलब्धता के कारण, कामकाजी आयु वर्ग के युवा बेहतर अवसरों के लिए नजदीकी शहरों या राज्य की ओर पलायन कर रहें हैं। जनपद में सूक्ष्म, लघु और कुटीर उद्योगों को आगे बढ़ाने की आवश्यकता है। इसके अलावा, जनपद में कुछ कपड़ा और लकड़ी के काम करने वाले क्लस्टर हैं जिन्हें व्यक्तिगत कारीगरों और एसएचजी के माध्यम से बढ़ावा दिया जा सकता है, ताकि बड़े बाजारों से जोड़ा जा सके।

2.5.3 तृतीयक क्षेत्र :–

तृतीयक क्षेत्र 2011–12 में 36% से बढ़कर 2016–17 में 44% हो गया है। यह काफी हद तक पर्यटन और संबद्ध सेवाओं तथा सुविधाओं की उपलब्धता के कारण है। इस क्षेत्र में होटल और रेस्तरां, होमस्टे, परिवहन सेवाएं जैसे बस/टैक्सी आदि शामिल हैं। पर्याप्त पर्यटन स्थल के कारण यह GSDP के

लिए अधिकतम योगदान देता है। यह सेवा क्षेत्र रोजगार देने में अपनी अहम भूमिका रखता है, जिस कारण स्थानीय आजीविका को इस माध्यम से बढ़ाया जा सकता है।

जनपद स्तरीय मानव विकास सूचकांक (एच.डी.आई.) में अल्मोड़ा जनपद राज्य के सबसे निचले जनपदों में शामिल है, 0.715 से 0.662 के बीच।

उत्तराखण्ड़ सरकार द्वारा प्रकाशित आर्थिक सर्वेक्षण रिपोर्ट, 2018–19 के अनुसार राज्य के पहाड़ी और मैदानी जनपदों के बीच काफी विषमताएं हैं। "विभिन्न आयाम और समग्र सूचकांक" ने सभी 13 जनपदों में से जनपद अल्मोड़ा को 9 वें स्थान पर रखा है। जनपद अलमोड़ा ने आर्थिक, मूलभूत सुविधायें तथा जनसांख्यिकी जैसे मापदण्ड़ों पर खराब प्रदर्शन किया है।जिन अन्य मापदण्ड़ों पर जनपदों का मूल्यांकन किया गया वे कृषि, स्वास्थ्य सेवा और शिक्षा हैं।

2.6 कृषि :–

यद्यपि जनपद की सकल घरेलू उत्पाद में कृषि की हिस्सेदारी घट रही है, लेकिन अभी भी जनपद की लगभग 39% आबादी अपने मुख्य व्यवसाय के रूप में कृषि में लगी हुई है। जनपद में प्रमुख फसलें हैं जैसे धान, गेहूं, जौ, मक्का, मंडुआ, झंगोरा, आदि और दलहन में जैसे उड़द, मसूर, चना, तथा तिलहन में जैसे सरसों, सोयाबीन, तिल, तथा आलू और हल्दी। पहाड़ी इलाकों में सिंचाई की सुविधा संभव नहीं है, लेकिन फिर भी जनपद के घाटी इलाकों में नदियों को नहरों से जोड़कर सिंचाई की जा रही है। जनपद में कुल 5751.00 हेक्टेयर क्षेत्र सिचाई के अधीन है। कृषि विभाग ने सिंचाई की उपलब्धता के आधार पर कृषि भूमि को दो श्रेणियों में विभाजित किया है, तलाउ भूमि और उपरारू भूमि। तलाउ भूमि एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ सिंचाई की सुविधाएं मौजूद हैं और किसान रबी, खरीफ, जायद की तीनों फसलें ले सकते हैं। उपरारू भूमि एक असिंचित क्षेत्र है जहाँ केवल खरीफ की फसल ली जा सकती है लेकिन रबी की नहीं।

तालिका 2.6 जनपद के भूमि उपयोग पैटर्न को दर्शाती है। कुल क्षेत्रफल का लगभग 51% भाग वन के अंतर्गत आता है और 10% भूमि या तो बंजर भूमि है या परती है। पहाड़ी इलाकों होने के कारण और सिंचाई सुविधाओं की अनुपलब्धता, अधिकांश कृषि क्षेत्र वर्षा पर आधारित होने के कारण, खरीफ के मौसम में सकल बोया गया क्षेत्रफल अधिक होता है। सिंचाई के अलावा, किसानों को जंगली जानवरों जैसे बंदर, जंगली सूअर आदि की समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है, जिसके परिणाम स्वरूप जनपद के किसानों के बीच कृषि में निराशाजनक रूचि है।

जनपद की भूमि उपयोग(स्रोत : सांख्यिकीय पत्रिका, डीईएस, अल्मोड़ा)

तलिका 2.6 : भूमि उपयोग (हे0 में क्षेत्रफल)															
वर्ष / विकासखण्ड	कुल क्षेत्रफल	वन	कृषि बंजर भूमि	वर्तमान में बंजर भूमि	अन्य बंजर भूमि	बंजर और कृषि भूमि जो अनुपयुक्त है	कृषि के अलावा भूमि उपयोग	चरागाह भूमि	बग बगीचे के पेड़ों और झाड़ियों द्वारा कवर	कुल शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल	एक बार से अधिक बार बोया गया क्षेत्रफल	कुल बोया गया क्षेत्रफल			
												कुल	रबि की फसल	खरीफ की फसल	जयद की फसल
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
2013-14	**464942**	**236184**	**38140**	**2264**	**6110**	**24051**	**12299**	**29214**	**38590**	**78090**	**36742**	**114832**	**40743**	**74089**	**0**
2014-15	**464942**	**236184**	**38140**	**2340**	**6114**	**24051**	**12302**	**29214**	**38587**	**78005**	**39225**	**117230**	**43127**	**74103**	**0**
2015-16	**464942**	**236184**	**38149**	**2036**	**6137**	**24051**	**12308**	**29214**	**38585**	**78278**	**37518**	**115796**	**41183**	**74613**	**0**
विकासखण्ड वार 2015–16															
स्याल्दे	38391	2411	10458	332	1380	6838	696	3239	2492	10545	2830	13398	3183	10215	
चौखुटिया	18902	7727	2200	166	482	1672	299	52	1454	4850	4662	9489	5028	4461	
भिकियासैंण	25723	378	8655	293	1095	2029	675	1847	2302	8449	2408	10874	2709	8165	
ताड़ीखेत	28952	3751	1608	145	354	3134	2810	2738	6262	8150	3652	11804	4013	7791	
सल्ट	47375	1997	10319	337	1272	3875	1182	11123	2505	14765	1906	16722	2272	14450	
द्वाराहाट	22282	7096	233	123	209	798	343	3518	3607	6355	5303	11636	5725	5911	
ताकुला	12315	2200	1306	142	336	1060	322	396	2452	4101	2970	7061	3237	3824	
भैंसियाछाना	11479	1346	1205	136	295	784	258	1289	1477	4689	2441	7128	2689	4439	
हवालबाग	22011	5707	1149	133	297	1496	376	3849	3511	5493	4099	9577	4443	5134	

लमगड़ा	23439	5725	163	106	161	1321	314	908	8735	6006	2890	8896	3179	5717	
धौलादेवी	21031	9335	853	123	256	1044	502	255	3788	4875	4357	9211	4705	4506	
योग ग्रामीण	**271900**	**47673**	**38149**	**2036**	**6137**	**24051**	**7777**	**29214**	**38585**	**78278**	**37518**	**115796**	**41183**	**74613**	**0**
वन क्षेत्रफल	188511	188511	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
शहरी	4531	0	0	0	0	0	4531	0	0	0	0	0	0	0	
योग जनपद	**464942**	**236184**	**38149**	**2036**	**6137**	**24051**	**12308**	**29214**	**38585**	**78278**	**37518**	**115796**	**41183**	**74613**	**0**

तालिका 2.7 : अल्मोड़ा में प्रमुख फसलों के तहत क्षेत्रफल (क्षेत्रफल हे0 में)										
प्रमुख फसलें वर्ष / विकासखण्ड	धान	गेहूं	जौ	मक्का	मंडुवा (रागी)	सवाण	कुल दालें	सोयाबीन	कुल तिलहन	आलू
	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
2013-14	**15597**	**34854**	**2490**	**1623**	**33882**	**14375**	**1756**	**389**	**1123**	**1325**
2014-15	**16897**	**35964**	**2692**	**1999**	**33569**	**12886**	**1975**	**386**	**1210**	**1163**
2015-16	**17526**	**35411**	**2790**	**1689**	**34518**	**12198**	**2075**	**545**	**1167**	**389**
विकासखण्ड वार (2015–16)										
स्याल्दे	2429	3793	363	152	3373	1090	248	47	100	22
चौखुटिया	1903	3284	220	72	2517	895	185	55	116	37
भिकियासैंण	1243	3203	260	148	3239	1428	207	48	101	41
ताड़ीखेत	1373	4014	252	162	3593	1045	132	46	99	40

सल्ट	2304	4579	319	164	5027	1729	197	51	109	15
द्वाराहाट	1811	4246	307	132	3165	1324	206	53	119	65
ताकुला	1416	1845	218	154	2049	774	135	49	99	30
भैंसियाछाना	1137	2084	182	152	1954	944	148	46	101	25
हवालबाग	1244	2927	229	202	3222	1097	368	55	114	36
लमगड़ा	1438	2597	214	194	2944	903	127	54	107	38
धौलादेवी	1228	2839	226	157	3435	969	122	41	102	40
कुल ग्रामीण	**17526**	**35411**	**2790**	**1689**	**34518**	**12198**	**2075**	**545**	**1167**	**389**
कुल शहरी	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
कुल जनपद	**17526**	**35411**	**2790**	**1689**	**34518**	**12198**	**2075**	**545**	**1167**	**389**

स्रोत :– डी0ई0एस0, अल्मोड़ा

तालिका 2.7 जनपद में प्रमुख फसलों के तहत क्षेत्रफल को दर्शाती है। गेहूँ और मंडुआ जैसी फसलों की खेती के तहत सबसे बड़ा क्षेत्र है अर्थात क्रमशः 33% ओर 31%, इसके बाद धान 16% है। तिलहन में सोयाबीन, सरसों और तिल की फसलें होती हैं। प्रत्येक कॉलम में हाइलाइट किया गया बॉक्स संबंधित फसलों के तहत अधिकतम तीन विकासखण्ड़ हैं। तालिका बताती है कि विकासखण्ड सल्ट और द्वाराहाट में अन्य विकासखण्डों की तुलना में विभिन्न फसलों के तहत काफी बड़ा क्षेत्रफल है।

तालिका 2.8 में प्रमुख फसलों के उत्पादन और उत्पादकता को देखते हुए धान के उत्पादन में मामूली वृद्वि हुई है, लेकिन उत्पाकदता में कमी आई है। गेहूँ की फसल के लिए कुल उत्पादन और उत्पादकता में भी 50 प्रतिशत से अधिक की गिरावट आई है।

तालिका 2.8 :प्रमुख फसलों का उत्पादन और उत्पादकता					
फसलें	उत्पादन (मैट्रिक टन)			उत्पादकता (कु0/हे0)	
	2013–14	2014–15	2015–16	2014–15	2016–17
चावल	18545	19776	19096	11.70	10.90
गेहूं	45099	41250	17464	11.47	4.93
मंडुवा	39550	40898	41322	12.68	11.97
मक्का	1962	2303	1120	11.52	6.63
दालें	1331	1406	1751	7.12	8.44
तिलहन	1030	694	820	5.69	7.03

स्रोत :– डी0ई0एस0, अल्मोड़ा

2.7 भूमि जोत स्वामित्व :–

जनपद के अर्न्तगत भूमि स्वामित्व का विवरण नीचे तालिका 2.9 में दिखाया गया है जिसमें स्पष्ट होता हैं कि 75 प्रतिशत से अधिक किसान सीमांत किसान हैं, जिनके पास 1.00 हेक्टेयर से कम भूमि है और 95 प्रतिशत से अधिक भूमि स्वामित्व 2.00 हेक्टेयर से कम हैं। वहीं, बड़े भूमि स्वामित्व अर्थात 2.00 से अधिक हेक्टेयर वाले कम हो रहे है तथा छोटी भूमि स्वामित्व में तबदील हो रहें हैं।

तालिका 2.9 : जनपद में भूमि जोत स्वामित्व की संख्या							
वर्ष	<0.5 हे0	0.5–1 हे0	1–2 हे0	2–4 हे0	4–10 हे0	>10 हे0	कुल
2000–01	59305	34968	21798	5734	501	16	**122322**
2005–06	48775	36130	23148	5449	427	11	**113940**
2010–11	43532	38511	22451	4570	201	3	**109268**

स्रोत :– डी0ई0एस0, अल्मोड़ा

2.8 बागवानी:–

तालिका 2.10 : अल्मोड़ा में बागवानी का आधारभूत ढांचा					
वर्ष/ विकासखण्ड	कुल बाग (उद्यान)	बागवानी के अर्न्तगत क्षेत्रफल (हे0)	फल संरक्षण केंद्र	फल–प्रसंस्करण केन्द्र	नर्सरी की संख्या
1	2	3		4	
2014–15	2	24158	34	6	8
2015–16	2	24162	34	6	8
2016–17	3	24174	36	6	8

स्रोत :– डी0ई0एस0, अल्मोड़ा

अल्मोड़ा एक पर्वतीय जनपद है, जहाँ फल और सब्जियों के लिए एक बेहतर जलवायु उपलब्ध है। जिसमें लगभग 24,174 हेक्टेयर क्षेत्रफल बागवानी के अर्न्तगत है। फलों में प्रमुख बागवानी फसलें हैं सेब, नाशपाती, आड़ू, बेर, खुमानी, अखरोट, आम और नीबू, जबकि सब्जियों में मटर, बीन्स, गोभी, टमाटर आदि प्रमुख फसलें हैं। तीन बागानों में से द्वाराहाट में एक तथा धौलादेवी में दो बागान हैं। अन्य विकासखण्डों में एक भी बागान नहीं है। ताड़ी खेत में दो फल–प्रसंस्करण इकाइयां हैं तथाविकासखण्ड भिकियासैंण, द्वाराहाट, ताकुला, हवालबाग में एक–एक इकाई है।

तालिका 2.11 अल्मोड़ा में औद्यानिक कलस्टर

जनपद	फल		सब्जी		मसालें		फूल		योग	
अल्मोड़ा	कलस्टर	ग्राम	कलस्टर	ग्राम	कलस्टर	ग्राम	कलस्टर	ग्राम	कलस्टर	ग्राम
	70	670	55	576	29	332	3	14	157	1592

तालिका 2.12 जनपद अल्मोड़ा में प्रमुख फलों के क्षेत्रफल और उत्पादन को दर्शाता है। आम और खट्टे फलों की खेती के अर्न्तगत अधिकतम क्षेत्रफल हैं जबकि खट्टे फलों में नाशपाती का अधिकतम उत्पादन होता है। जनपद के अर्न्तगत केवल एक कोल्ड स्टोरेज विकासखण्ड हवालबाग में है, जो पिछले कई वर्षों से कार्यात्मक स्थिति में नहीं है।

अल्मोड़ा में विकासखण्डवार प्रमुख फसलों का क्षेत्रफल एवं उत्पादन

2.12 : प्रमुख बागवानी फसलों का क्षेत्रफल एवं उत्पादन (क्षेत्रफल हे0 में और उत्पादन मैंट्रिक टन में)

विकासखण्ड	सेब		नाषपाती		आडू		बेर		खुमानी		अखरोट		नीबू		आम		लीची	
	क्षेत्रफल	उत्पादन	क्षेत्रफल	उत्पादन	क्षेत्रफल	उत्पादन	क्षेत्रफल	उत्पादन	क्षेत्रफल	उत्पादन	क्षेत्रफल	उत्पादन	क्षेत्रफल	उत्पादन	क्षेत्र	उत्पादन	क्षेत्र	उत्पादन
2014–15	**1570**	**9448**	**3324**	**35100**	**1640**	**13674**	**2582**	**20347**	**2288**	**17898**	**2831**	**8476**	**4355**	**33779**	**4648**	**41642**	**279**	**72**
2015–16	**1577**	**14137**	**3322**	**35081**	**1642**	**20942**	**2625**	**20544**	**2291**	**17885**	**2811**	**8474**	**4345**	**33592**	**4642**	**23639**	**279**	**80**
2016–17	**1551**	**14073**	**3326**	**35082**	**1644**	**20490**	**2616**	**20544**	**2294**	**17885**	**2813**	**8476**	**4347**	**33591**	**4643**	**23640**	**279**	**82**
विकासखण्ड वार (2015–16)																		
स्याल्दे	21	240	198	2602	42	331	274	2180	228	1883	253	765	320	2500	762	2622	58	17
चौखुटिया	7	50	216	2680	51	416	175	1370	154	1201	229	650	251	2017	712	2033	43	11
भिकियासैंण	19	118	235	2687	53	420	182	1431	170	1344	238	720	313	2529	687	2811	73	19
ताड़ीखेत	262	2561	375	3915	209	3685	308	2340	264	2072	266	854	602	4265	409	3117	30	10
सल्ट	60	364	237	2681	62	495	201	1530	174	1220	254	760	315	2549	518	2090	40	11
द्वाराहाट	180	1380	382	3711	206	3745	259	1799	224	1831	286	858	490	3919	400	1573	15	4
ताकुला	105	680	325	3325	103	824	222	1719	195	1360	272	816	421	3299	187	1802	0	0
भैंसियाछाना	110	959	220	2584	105	836	195	1550	174	1300	245	769	351	2799	429	2254	13	5
हवालबाग	121	720	417	3926	105	837	223	2034	248	1982	202	620	434	3467	103	1006	0	0
लमगड़ा	365	4196	415	3806	405	4487	352	2801	260	1872	280	800	340	2423	103	1002	0	0
धौलादेवी	301	2805	306	3165	303	4414	225	1790	203	1820	288	864	510	3824	333	3310	7	5
जनपद	**1551**	**14073**	**3326**	**35082**	**1644**	**20490**	**2616**	**20544**	**2294**	**17885**	**2813**	**8476**	**4347**	**33591**	**4643**	**23620**	**279**	**82**

स्रोत :– डी0ई0एस0, अल्मोड़ा

2.9 पषुपालन

कृषि के साथ–साथ पशुपालन जनपद में आजीविका के सबसे महत्वपूर्ण स्रोतों में से एक है। ग्रामीण आबादी अभी भी कृषि उपयोग हेतु, दुधारू पशुओं, भेड़ और बकरियाँ आदि को पालती है। जनपद में प्रमुख पशुधन नीचे दी गई तालिका में उल्लेखित किये गये हैं।

तालिका 2.13: अल्मोड़ा में पषुधन आबादी (संख्या में)

वर्ष/विकासखण्ड	गाय	भैंस	भेड़	बकरी	घोड़ा और खच्चर	सुअर	मुर्गी पालन
1	2	3	4	5	6	7	9
2003	**237743**	**109728**	**4890**	**171732**	**916**	**771**	**62579**
2007	**256164**	**117938**	**4721**	**186391**	**2124**	**454**	**83931**
2012	**197326**	**96662**	**3732**	**189184**	**2573**	**1035**	**106046**
विकासखण्डवार (2015–16)							
स्याल्दे	7089	6025	491	5732	91	0	3830
चौखुटिया	18669	13268	20	5485	156	0	11868
भिकियासैंण	11416	9928	1147	11097	278	12	9641
ताड़ीखेत	26180	9612	2	20406	335	0	8459
सल्ट	13456	12163	2056	22265	107	0	7053
द्वाराहाट	25283	6023	0	12180	70	0	5245
ताकुला	17011	3367	16	5854	150	0	6492
भैंसियाछाना	14066	4472	0	15905	175	0	5632
हवालबाग	28156	10309	0	31607	532	16	26203
लमगड़ा	10578	7204	0	13513	357	0	3450
धौलादेवी	24284	14229	0	44588	319	0	14247
कुल शहरी	1138	62	0	552	3	1007	3926
जनपद	**197326**	**96662**	**3732**	**189184**	**2573**	**1035**	**106046**

स्रोत :– डी0ई0एस0, अल्मोड़ा

जनपद के अर्न्तगत 38 पशु चिकित्सालय, जिसमें प्रत्येक विकासखण्ड में लगभग 2 से 3, जनपद में 72 कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र और 8 उप–चारा बैंक हैं। एक पोल्ट्री इकाई है, जिसमें हवालबाग विकासखण्ड में 1000 मुर्गियों की क्षमता है। अल्मोड़ा में एक मिल्क यूनियन फेडरेशन है जिसका प्रति दिन 20,000 लीटर दूध का संग्रह है। महासंघ के पास 15,832 दुग्ध उत्पादकों के साथ 240 दुग्ध सोसायटी हैं।

2.10 पर्यटन :–

हिमालय की गोद में, बर्फ से ढके पहाड़ों और मनोरम परिदृश्यों से घिरा, जनपद अल्मोड़ा, जिसे कुमाऊं की सांस्कृतिक राजधानी भी कहा जाता है, प्राकृतिक सुंदरता से सम्पन्न है। समय के साथ अल्मोड़ा

एक प्रसिद्व आध्यात्मिक, सांस्कृतिक तथा धार्मिक स्थल रहा है। अल्मोड़ा अपने व्यंजनों, सांस्कृतिक इतिहास, परंपराओं, मेलों तथा त्योहारों के लिए जाना जाता है। अल्मोड़ा के महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल निम्नलिखित हैं।

क. जागेष्वरधाम :–

अल्मोड़ा–पिथौरागढ़ राजमार्ग पर अल्मोड़ा शहर से लगभग 36 किमी दूर स्थित, यह भगवान शिव को समर्पित 124 मंदिरों का एक समूह है। पूर्व–मध्ययुगीन युग की एक आकर्षक स्थापत्य कला, लगभग 2500 साल पीछे पौराणिक, सुरम्य देवदार जंगलों के बीच स्थित है। जागेश्वरधाम के आसपास के अन्य धार्मिक स्थल हैं, जैसे वृद्धजागेश्वर मंदिर और झाकरसैंण मंदिर, जिनका अपना अलग ही महत्व हैं।

ख. कसार देवी :–

अल्मोड़ा शहर से मात्र 5 किमी की दूरी पर स्थित यह मंदिर कई महापुरूषों द्वारा सराही गई है। यह 1960–70 के दशक में हुए हिप्पी मूवमेंट का केन्द्र रहा है। मंदिर के आप–पास कई होमस्टे हैं जिनमें देश व विदेश से कई पर्यटक आते हैं। अल्मोड़ा शहर के शीर्ष पर स्थित यह मंदिर हिमालय के मनमोहक दृश्य के साथ–साथ ग्रामीण संस्कृति, खानपान तथा कला को दर्शाता है।

ग. कटारमल सूर्य मंदिर :–

ओडिशा के कोणार्क में सूर्य मंदिर के बाद, यह एक मात्र सूर्य मंदिर है जो सूर्य देव को समर्पित है। यह 800 साल पुराना मंदिर अल्मोड़ा शहर से केवल 17 किमी दूर है और 2116 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है।

घ. रानीखेत :–

रानीखेत एक छावनी क्षेत्र है और अपने खूबसूरत परिदृश्य के लिए प्रसिद्ध है। हिमालय के शानदार दृश्य और सुंदर मैदानी क्षेत्रों के लिए पर्यटक यहाँ आते हैं।

ड. गैराडगोलू देव मंदिर :–

शहर के बाहर स्थित है, यह जनपद के प्रसिद्ध मंदिरों में से एक है और स्थानीय लोगों में एक महान विश्वास और भक्ति के रूप में जाना जाता है।

च. द्वाराहाट :–

उत्तराखण्ड के मंदिर शहर के रूप में जाना है, द्वाराहाट अल्मोड़ा से 70 किमी दूर है और रामगंगा नदी घाटी में स्थित है। द्वाराहाट कभी कत्यूरी राजवंश का गढ था और इसका ऐतिहासिक और पुरातात्विक महत्व है।

छ. मानीला :–

मानीला एक हिल स्टेशन है और रानीखेत से 85 किमी दूर है। जंगल के बीच स्थित मानीला देवी मंदिर और हिमालय का दृश्य शानदार अनुभव प्रदान करता है।

ज. बिनसर महादेव :–

रानीखेत से 15 किमी दूर एक बड़ा बिनसर मंदिर है। बिनसर भी एक वन्यजीव अभ्यारण्य है।

जनपद अल्मोड़ा में कई अन्य पर्यटन स्थल हैं जैसे गणनाथ मंदिर, कसार देवी मंदिर, नन्दा देवी मंदिर, झूला देवी मंदिर, शीतलाखेत, जालाना, विवेकानन्द आश्रम, जीबी पंत संग्रहालय आदि। जनपद अल्मोड़ा में आयोजित प्रसिद्व मेले/त्यौहार हैं :–

नन्दा देवी महोत्व :–

सितम्बर के महीने में आयोजित यह शहर का प्रसिद्व मेला है। ऐसा माना जाता है कि "नन्दा" कभी चन्द राजवंश की पारिवारिक देवी हुआ करती थी। 17 वीं शताब्दी में अल्मोड़ा के इस स्थान पर ड्योट चंद द्वारा नन्दा देवी का मंदिर बनवाया गया था। वर्तमान में यह मंदिर उत्सव का मुख्य केन्द्र बना हुआ है। त्यौहार की अवधि पांच दिन है और लगभग पच्चीस हजार लोग इस उत्सव में भाग लेने आते हैं।

दषहरा उत्सव अल्मोड़ा :–

यह त्यौहार रावण पर भगवान राम की जीत का उत्सव मनाता है। बाहरी इलाकों से लगभग पांच से छह हजार पर्यटक अल्मोड़ा शहर में इस उत्सव में भाग लेने आते हैं। यह त्यौहार आम तौर पर अक्टूबर के महीने में मनाया जाता है।

जागेष्वर मानसून महोत्सव :–

इस त्यौहार का एक बडा धार्मिक और ऐतिहासिक महत्व है। जागेश्वर मानसून महोत्सव 15 जुलाई से 15 अगस्त तक आयोजित किया जाता है। भारत में भगवान शिव के बारह "ज्योतिर्लिंग" में से एक भगवान जागनाथ का मंदिर, प्राचीन काल के 124 छोटे और बड़े मंदिरों के समूह में अपने पुरातात्विक महत्व रखते हैं। यह त्यौहार कुमाऊँनी समाज के लिए काफी धार्मिक महत्व का है। इस त्यौहार के महीने में पर्यटकों की संख्या का दैनिक प्रवाह लगभग एक हजार रहता है।

सोमनाथ मेला, जन्माष्टमी मेला, महाशिवरात्रि मेला, दूनागिरी मेला, देवीधुरा मेला आदि मेले एक महत्वपूर्ण सामाजिक और आर्थिक महत्व के साथ स्थानीय मेले हैं।

अल्मोड़ा सड़क मार्गों द्वारा अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है, निकटतम 80 किलोमीटर पर रेलवे स्टेशन काठगोदाम और 120 किमी पर हवाई अड्डा पंतनगर है। अल्मोड़ा, नैनीताल से सटा हुआ जनपद है, जहाँ नैनीताल में वर्ष 2017 में 10.70 लाख पर्यटकों द्वारा आगमन किया गया है वहीं जनपद अल्मोड़ा में 2.60 लाख पर्यटकों ने भ्रमण किया। अल्मोड़ा कई पर्यटन स्थलों का केन्द्र है। जनपद में सांस्कृतिक, धार्मिक और ईको–टूरिज्म विकसित करने की काफी संभावनाएं है। निम्न तालिका पर्यटन के बुनियादी ढांचे की जानकारी देती है और पर्यटकों की संख्या, जो जनपद अल्मोड़ा का भ्रमण करतें हैं। बड़ी संख्या में पर्यटकों के ठहरने हेतु विकासखण्ड हवालबाग के कसार देवी क्षेत्र में कई होमस्टे कार्यरत हैं। इन होमस्टे में मार्च–जून तथा अक्टूबर–दिसम्बर माह में अधिक पर्यटकों का आगमन होता है। पर्यटकों में देशी तथा विदेशी पर्यटक शामिल हैं जहाँ एक ओर देशी पर्यटकों की संख्या अधिक है वहीं दूसरी ओर विदेशी पर्यटकों द्वारा बितायें गये दिनों की संख्या अधिक है।

तालिका 2.14 : अल्मोड़ा में होमस्टे की संख्या							
क0स0	वर्ग	शहरी क्षेत्र			ग्रामीण क्षेत्र		
		इकाई	कुल कमरे	कुल बिस्तर	इकाई	कुल कमरे	कुल बिस्तर
1	गोल्ड	0	0	0	3	8	16
2	सिल्वर	3	10	18	62	230	460
3	ब्रोंज़	0	0	0	1	4	8
कुल		**3**	**10**	**18**	**66**	**242**	**484**

स्रोत :– उत्तराखण्ड़ पर्यटन

तालिका 2.14 : जनपद अल्मोड़ा में पर्यटकों की संख्या				
क0स0	पर्यटन स्थल का नाम	वर्ष 2017		
		स्वदेषी	विदेषी	कुल
1	अल्मोड़ा	108178	4524	112702
2	रानीखेत	145233	1514	146747

स्रोत :– उत्तराखण्ड़ पर्यटन

क0स0	तालिका 2.15 : पर्यटन सुविधाएं	
1	प्रमुख पर्यटन स्थल	4
2	विकसित पर्यटन स्थल	7
3	टूरिस्ट रेस्ट हाउस	12
4	नाइट शेल्टर	2
5	टूरिस्ट रेस्ट हाउस में बिस्तरों की संख्या	410
6	नाइट शेल्टर में बिस्तरों की संख्या	20
7	होटल और पेइंग गेस्ट हाउस	153
8	धर्मशाला की संख्या	1

स्रोत :– डी0ई0एस0, अल्मोड़ा

2.11 उद्योग :–

अधिकांश आबादी का लगभग 39.35% का रोजगार कृषि है एवं लगभग 34.13% दैनिक मजदूरी के रूप में उनकी आय का मुख्य स्रोत है। उद्योग की उपस्थिति छोटे और सूक्ष्म उद्योग तक सीमित है, वह भी सीमित संख्या में।

तालिका में 2.16 : अल्मोड़ा में औद्योगिक इकाइयां						
क0स0	इकाई का नाम	पंचायत द्वारा	औद्योगिक सहकारी समिति द्वारा	पंजीकृत संस्था द्वारा	व्यक्तिगत व्यवसायी	कुल
1	खादी उद्योग	0	0	0	0	**0**
2	खादी ग्रामोद्योग द्वारा प्रचारित	0	2	3	1569	**1574**
3	लघु उद्योग	0	0	0	0	**0**
3.1	अभियांत्रिकी	2	0	0	287	**289**

3.2	रासायनिक	0	0	0	56	**56**
3.3	प्रसंस्करण	0	0	0	0	**0**
3.4	हथकरघा	3	0	0	53	**56**
3.5	रेशम	0	0	0	0	**0**
3.6	जूट	0	0	0	0	**0**
3.7	हस्तशिल्प	1	0	0	147	**148**
3.8	अन्य	0	0	0	1826	**1826**
4	**कुल**	**6**	**2**	**3**	**3938**	**3949**
5	**लघु उद्योग में नियोजित व्यक्ति**	**25**	**167**	**27**	**10576**	**10795**

स्रोत :– डी0ई0एस0, अल्मोड़ा

तालिका 2.17 : अल्मोड़ा में एम0एस0एम0ई0 पर आकडें				
	उद्योग के प्रकार	**2016–17**	**2017–18**	**2018–19**
कुल उद्योग	सूक्ष्म	143	162	121
	लघु	15	18	16
	मध्यम	2	4	2
	कुल	**160**	**184**	**139**
कुल निवेष (लाख में)	सूक्ष्म	48.48	78.2	71.5
	लघु	78.1	62.7	41.7
	मध्यम	72.6	146	41.3
	कुल	**199.18**	**286.9**	**154ण्5**
कुल रोजगार	सूक्ष्म	390	450	389
	लघु	105	87	112
	मध्यम	28	76	20
	कुल	**523**	**613**	**521**

स्रोत :– डी0आई0सी0, अल्मोड़ा

तालिका 2.16 से पता चलता है कि पिछले 3 वर्षों में अधिकतम रोजगार सूक्ष्म उद्योगों द्वारा उत्पन्न किया गया है। हालांकि जनपद में एम0एस0एम0ई0 उद्योगों के विकास में कोई खास रूझान नहीं है।

जनपद में "सिडकुल" (स्टेट इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड इंडस्ट्रियल डेवलपमेंट कॉरपोरेशन ऑफ उत्तराखण्ड लिमिटेड) के तहत एक औद्योगिक इकाई मरचूला में है। मरचूला, कॉर्बेट नेशनल पार्क के पास, रामगंगा नदी के तट पर वेलनेस होटल तथा स्पा विकसित करने के लिए पट्टे पर भूमि प्रदान करता है।

तालिका 2.18 : अल्मोड़ा में औद्योगिक इकाइयां						
वर्ष / विकासखण्ड	पंजीकृत उद्योग		लघु औद्योगिक इकाइयां		खादी औद्योगिक इकाइयां	
	इकाइयों	व्यक्तियों को रोजगार दिया	इकाइयों	व्यक्तियों को रोजगार दिया	इकाइयों	व्यक्तियों को रोजगार दिया
2014–15	11	114	2070	4103	1240	4943
2015–16	11	71	2215	4613	1461	5386
2016–17	11	114	2375	5135	1575	5660
विकासखण्ड वार (2015–16)						
स्याल्दे	0	0	80	147	47	168
चौखुटिया	0	0	130	263	61	348
भिकियासैंण	0	0	135	285	47	249
ताड़ीखेत	4	30	245	613	121	337
सल्ट	1	16	84	266	29	118
द्वाराहाट	0	0	152	442	110	378
ताकुला	1	10	162	327	129	384
भैंसियाछाना	0	0	132	218	116	419
हवालबाग	3	35	320	660	533	2013
लमगड़ा	0	0	106	193	129	390
धौलादेवी	0	0	158	346	253	856
कुल ग्रामीण	**9**	**91**	**1704**	**3760**	**1575**	**5660**
शहरी	2	23	671	1375	0	0
जनपद	**11**	**114**	**2375**	**5135**	**1575**	**5660**

स्रोत :– डी0ई0एस0, अल्मोड़ा

जनपद में कोई औद्योगिक समूह नहीं है लेकिन मुख्य रूप से कपड़ा क्षेत्र में कुछ कारीगर समूह हैं। जनपद को खादी और हथकरघा के लिए जाना जाता है। निम्न तालिका विवरण दर्शाती है :–

तालिका 2.19 : अल्मोड़ा में कारीगर समूह				
क्र0 स0	समूह का नाम	उत्पाद वर्गीकरण	उत्पाद	विवरण
1	अल्मोड़ा	कपड़ा उद्योग	ऊनीवस्त्र	रजाई, ठुमला, दन, गद्दा, पंखी, शॉल
2	अल्मोड़ा	कपड़ा उद्योग	ऊनीवस्त्र	रजाई, ठुमला, दन, गद्दा, पंखी, शॉल
3	अल्मोड़ा	कपड़ा उद्योग	ऊनी वस्त्र	रजाई, ठुमला, दन, गद्दा, पंखी, शॉल
4	अल्मोड़ा	कपड़ा उद्योग	कपड़ा हैंडलूम	साड़ी, चद्दर, शॉल, कम्बल
5	अल्मोड़ा	कपड़ा उद्योग	दरी	दरी
6	अल्मोड़ा	कपड़ा उद्योग	हस्त शिल्प	हस्त शिल्प
7	अल्मोड़ा	कपड़ा उद्योग	नॉट पाइल कारपेट	वॉल हेंगिग, कालीन

8	अल्मोड़ा	लकड़ी उद्योग	फर्नीचर	फर्नीचर
9	अल्मोड़ा	लकड़ी उद्योग	फिक्स्चर	फिक्स्चर
10	अल्मोड़ा	टोकरी, चटाई, बुनाई, और बेंत, लेखन सामाग्री	स्ट्रा ग्लास	मॉस्था, बहुउद्देशीय फर्श की सफाई, विभिन्न आकृतियों और आकारों के कंटेनर, ट्रे
11	अल्मोड़ा		रिंगाल	अन्य उपयोगिता वाली वस्तु

स्रोत :– एम0एस0एम0ई0 का मंत्रालय,

जनपद अल्मोड़ा स्लेट, चूना पत्थर, मैग्नेसाइट, सल्फर, लिग्नाइट, ग्रेफाइट इत्यादि खनिज तथा अन्य प्राकृतिक संसाधन उपलब्ध है। भूकंप का संवेदनशील क्षेत्र होने कारण और जैव–विविधता को नुकसान होने की वजह से इन संसाधनों का दोहन नहीं किया गया है।

2.12 रोजगार और कौषल विकास :–

पिछले जनगणना वर्षों में जनपद की जनसंख्या में गिरावट देखी गई है और 2011 की जनगणना में जनपद में नकारात्मक वृद्धि हुई है। इस प्रवृत्ति के बाद, काफी स्पष्ट हो जाता है कि कुशल जनशक्ति की मांग और आपूर्ति में भारी अंतर है। इस सम्बन्ध में NSDC (राष्ट्रीय कौशल विकास निगम) द्वारा अध्ययन करवाया गया। इनकी रिपोर्ट "उत्तराखण्ड़ राज्य के लिए जिला कौशल गैप 2017–2022" के अनुसार 2022 तक लगभग 1.77 लाख की वृद्धिशील जनशक्ति की आपूर्ति होगी।

तालिका 2.20 : अल्मोड़ा में अनुमानित जनषक्ति वितरण			
वर्ष	**2012**	**2017**	**2022**
कुल जनसंख्या	6,20,844	6,15,455	6,10,112
जनसंख्या कार्यशील आयु	3,85,272	4,09,405	4,35,049
श्रमबल	2,40,769	3,21,100	4,18,429
कार्यबल	2,34,108	3,08,621	4,06,852
वृद्विषील जनषक्ति आपूर्ति		**80,331**	**1,77,689**

Source: District Skill Gap for the State of Uttarakhand, NSDC

NSDC की रिपोर्ट के अनुसार कृषि (0.21 लाख), शिक्षा और कौशल विकास (0.18लाख), खाद्य प्रसंस्करण (0.15लाख), पर्यटन, यात्रा, आतिथ्य और व्यापार (0.09लाख) और भवन निर्माण और रियल एस्टेट सेवा (0.07लाख) जैसे इन शीर्ष पांच क्षेत्रों में वर्ष 2022 तक मानव संसाधन की वृद्धिशील मांग होगी। 2022 तक अर्द्ध–कुशल और कुशल जनशक्ति की मांग क्रमशः 0.07 लाख और 0.19 लाख होने की उम्मीद है। अध्ययन यह भी बताता है कि युवाओं को प्राथमिक क्षेत्र में काम करने के लिए कोई दिलचस्पी नहीं है। और बेहतर अवसर प्राप्त करने के लिए अन्य जनपदों और राज्यों में पलायन करते हैं। युवाओं ने जनपद स्तर पर विभिन्न क्षेत्रों के लिए लगातार प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रदान करने पर भी जोर दिया है।

सन्दर्भः–

- https://www.almora.nic.in/
- Uttarakhand Migration Commission Report, 2018
- https://www.doiuk.org/easeofdoingbusiness.php
- Ministry of MSME, Government of India
- https://www.who.int/hrh/resources/16058health_workforce_India.pdf
- District Statistical Magazine, 2017; Department of Economics & Statistics (DES), Almora
- https://uttarakhandtourism.gov.in/
- https://www.nsdcindia.org/sites/default/files/files/uttarakhand-sg-report.pdf
- Uttarakhand Economic Survey, 2017-18

अध्याय III

पलायन की स्थिति

इस अध्याय में राज्य के विभिन्न ग्राम पंचायतों में कराए गए सर्वेक्षण के आधार पर एकत्र किये गये आकड़ों का विश्लेषण कर राज्य में पलायन के कई पहलुओं को सामने लाया गया है।

3.1 मुख्य व्यवसाय

आकड़ों के विश्लेषण से पता चलता है कि राज्य के ग्रामों में रहने वाले लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि है, तत्पश्चात मजदूरी और सरकारी सेवा है। जनपद तथा राज्य में ग्राम पंचायत स्तर से प्राप्त आकड़ों को नीचे दी गई तालिकाएं स्पष्ट करती हैं।

तालिका 3.1 मुख्य व्यवसाय							
जनपद का नाम	जनपद अल्मोड़ा में मुख्य व्यवसाय (प्रतिषत में)						
	मजदूरी	कृषि	बागवानी	डेरी	सरकारी सेवा	अन्य	योग
अल्मोड़ा	34.13	39.35	1.51	3.66	10.86	10.50	100.00

तालिका 3.2 मुख्य व्यवसाय (राज्य)							
राज्य का नाम	मुख्य व्यवसाय (प्रतिषत में)						
	मजदूरी	कृषि	बागवानी	डेरी	सरकारी सेवा	अन्य	योग
उत्तराखण्ड़	32.22	43.59	2.11	2.64	10.82	8.63	100.00

3.2 अस्थायी और स्थायी पलायन

इस खण्ड के अन्तर्गत अस्थायी और स्थायी पलायन की जानकारी का मूलरूप से विश्लेषण किया गया है। पिछले 10 वर्षो में 1022 ग्रामों/तोकों से कुल 53,611 व्यक्तियों द्वारा अस्थायी रूप से पलायन किया गया है, हालांकि वे समय–समय पर अपने घरों में आना–जाना करते हैं क्योंकि उनके द्वारा स्थायी रूप से पलायन नहीं किया गया है।

पिछले 10 वर्षों में 646 ग्राम/तोकों से 16,207 व्यक्तियों द्वारा पूर्णरूप से स्थायी पलायन किया गया है, जो कि गम्भीर चिन्ता का विषय है। आकड़ें दर्शातें हैं कि राज्य के सभी जनपदों में स्थायी पलायन की तुलना में अस्थायी पलायन अधिक हुआ है।

तालिका 3.3 पिछले 10 वर्षों में जनपद अल्मोड़ा में विकासखण्ड वार पलायन					
जनपद का नाम	विकासखण्ड का नाम	ऐसी ग्राम पंचायत / ग्राम / तोक जहां से आजीविका के लिए अस्थायी पलायन हुआ है।	पिछले 10 वर्षों में आजीविका के लिए अल्पकालिक पलायन करने वाले लोग	ऐसी ग्राम पंचायत / ग्राम / तोक जहाँ से स्थायी पलायन हुआ है अर्थात भूमि बेच दी गई है, या गांवों के घरों में आने की सम्भावनायें नहीं हैं।	पिछले 10 वर्षों में स्थायी पलायन करने वाले लोग जिन्होंने भूमि बेच दी है या जिनकी गांवों में आने की सम्भावनायें नहीं है
अल्मोड़ा	भैंसियाछाना	51	3,493	37	1,215
अल्मोड़ा	भिकियासैंण	91	5,752	74	1,344
अल्मोड़ा	चौखुटिया	91	5,657	35	1,148
अल्मोड़ा	धौलादेवी	93	4,948	39	1,013
अल्मोड़ा	द्वाराहाट	121	9,038	92	3,507
अल्मोड़ा	हवालबाग	78	2,023	50	555
अल्मोड़ा	लमगड़ा	99	4,229	77	1,599
अल्मोड़ा	सल्ट	123	3,480	77	1,379
अल्मोड़ा	स्याल्दे	88	4,723	47	1,098
अल्मोड़ा	ताकुला	82	6,498	61	2,056
अल्मोड़ा	ताड़ीखेत	105	3,770	57	1,293
कुल		**1022**	**53,611**	**646**	**16,207**

तलिका 3.4: राज्य में पिछले 10 वर्षों से ग्राम पंचायतों में पलायन				
राज्य का नाम	ऐसी ग्राम पंचायत / ग्राम / तोक जहां से आजीविका के लिए अस्थायी पलायन हुआ है।	पिछले 10 वर्षों में आजीविका के लिए अल्पकालिक पलायन करने वाले लोग	ऐसी ग्राम पंचायत / ग्राम / तोक जहां से स्थायी पलायन हुआ है अर्थात भूमि बेच दी गई है, या गांवों के घरों में आने की सम्भावनायें नहीं हैं।	पिछले 10 वर्षों में स्थायी पलायन करने वाले लोग जिन्होने भूमि बेच दी है या जिनकी गांवों में आने की सम्भावनायें नहीं है
उत्तराखण्ड़	**6,338**	**3,83,726**	**3,946**	**1,18,981**

3.3 पलायन के मुख्य कारण

पलायन का मुख्य कारण आजीविका / रोजगार की समस्या के साथ–साथ शिक्षा, स्वास्थ्य और आधारभूत सुविधाओं में कमी है। विस्तृत आकड़ें नीचे दी गई तालिका में प्रस्तुत है।

तालिका 3.5 विकासखण्ड़वार ग्राम पंचायतों से पलायन के मुख्य कारण										
जनपद	विकासखण्ड़	ग्राम पंचायतों से पलायन के मुख्य कारण (प्रतिशत में)								योग
		आजीविका/रोजगार की कमी (% में)	स्वास्थ्य सुविधाओं में कमी (% में)	शिक्षा सुविधाओं में कमी(% में)	बुनियादी सुविधाओं में कमी (सड़क, बिजली, पानी, आदि) (% में)	कृषि उत्पादन में कमी (% में)	देखा देखी का पलायन (% में)	जंगली जानवरों के आतंक से परेशान होकर किया गया पलायन (% में)	अन्य कारण (%में)	
अल्मोड़ा	भैंसियाछाना	70.86	3.77	5.43	0.93	8.66	0.02	10.09	0.23	100.00
अल्मोड़ा	भिकियासैंण	48.45	8.01	13.32	3.37	10.53	3.15	11.39	1.77	100.00
अल्मोड़ा	चौखुटिया	45.75	11.68	13.51	2.35	4.95	3.88	12.23	5.65	100.00
अल्मोड़ा	धौलादेवी	36.63	6.68	19.27	4.27	11.85	1.97	12.79	6.55	100.00
अल्मोड़ा	द्वाराहाट	38.58	8.61	13.52	3.01	10.34	5.74	13.97	6.23	100.00
अल्मोड़ा	हवालबाग	41.15	10.15	11.85	4.44	8.44	1.11	8.96	13.89	100.00
अल्मोड़ा	लमगड़ा	34.84	12.48	12.43	8.65	13.94	2.68	11.77	3.22	100.00
अल्मोड़ा	सल्ट	48.45	11.00	8.72	3.69	6.19	0.88	16.39	4.70	100.00
अल्मोड़ा	स्याल्दे	65.00	4.79	4.17	1.48	1.68	1.73	5.00	16.15	100.00
अल्मोड़ा	ताकुला	60.71	6.81	15.71	2.95	4.16	2.29	4.94	2.43	100.00
अल्मोड़ा	ताड़ीखेत	46.70	7.87	8.47	4.56	9.18	3.26	9.67	10.30	100.00

तलिका 3.6 जनपद में ग्राम पंचायतों से पलायन के मुख्य कारण									
जनपद	ग्राम पंचायतों से पलायन के मुख्य कारण (प्रतिशत में)								योग
	आजीविका/रोजगार की कमी (% में)	स्वास्थ्य सुविधाओं में कमी (% में)	शिक्षा सुविधाओं में कमी(% में)	बुनियादी सुविधाओं में कमी (सड़क, बिजली, पानी, आदि) (% में)	कृषि उत्पादन में कमी (% में)	देखा देखी का पलायन (% में)	जंगली जानवरों के आतंक से परेशान होकर किया गया पलायन (% में)	अन्य कारण (%में)	
अल्मोड़ा	**47.78**	**8.61**	**11.75**	**3.81**	**8.37**	**2.68**	**10.99**	**6.02**	**100.00**

तालिका 3.7 राज्य में ग्राम पंचायतों से पलायन के मुख्य कारण									
राज्य	ग्राम पंचायतों से पलायन के मुख्य कारण (प्रतिशत में)								योग
	आजीविका/रोजगार की कमी (% में)	स्वास्थ्य सुविधाओं में कमी (% में)	शिक्षा सुविधाओं में कमी(% में)	बुनियादी सुविधाओं में कमी (सड़क, बिजली, पानी, आदि) (% में)	कृषि उत्पादन में कमी (% में)	देखा देखी का पलायन (% में)	जंगली जानवरों के आतंक से परेशान होकर किया गया पलायन (% में)	अन्य कारण (%में)	
उत्तराखण्ड	50.16	8.83	15.21	3.74	5.44	2.52	5.61	8.48	00.00

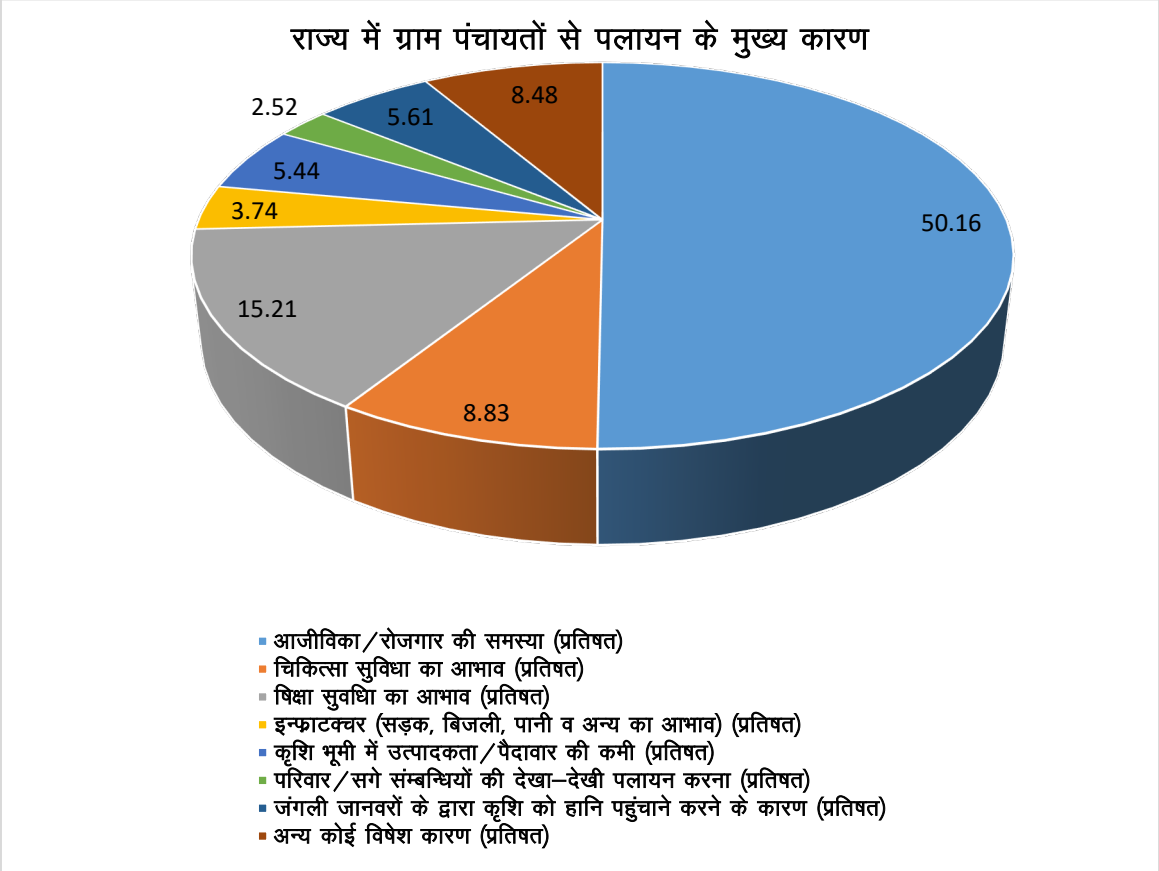

3.4 आयु वर्गवार पलायन

इस खण्ड में ग्राम पंचायतों से पलायन करने वालों की आयु का विश्लेषण किया गया है आकड़ों में स्पष्ट हुआ है कि ग्रामों से लगभग 42 प्रतिशत पलायन 26 से 35 वर्ष के आयु वर्ग द्वारा किया गया है। विभिन्न विकासखण्डों और जनपद की विस्तृत जानकारी निम्न तालिका में दी गई है।

तालिका 3.8 विकासखण्ड़ों में ग्राम पंचायतों से पलायन आयु वर्गवार					योग
जनपद	विकासखण्ड	ग्राम पंचायतों से पलायन आयु वर्गवार (प्रतिषत में)			
		25 साल से कम (वर्तमान में)	26 से 35 साल तक (वर्तमान में)	35 साल से ऊपर (वर्तमान में)	
अल्मोड़ा	भैंसियाछाना	10.17	72.13	17.70	100.00
अल्मोड़ा	भिकियासैंण	30.38	45.42	24.20	100.00
अल्मोड़ा	चौखुटिया	27.04	45.24	27.72	100.00
अल्मोड़ा	धौलादेवी	23.50	37.61	38.89	100.00
अल्मोड़ा	द्वाराहाट	33.62	37.52	28.86	100.00
अल्मोड़ा	हवालबाग	12.58	44.56	42.86	100.00
अल्मोड़ा	लमगड़ा	32.19	40.21	27.60	100.00
अल्मोड़ा	सल्ट	29.21	36.43	34.37	100.00
अल्मोड़ा	स्याल्दे	44.92	39.13	15.94	100.00
अल्मोड़ा	ताकुला	26.60	45.50	27.90	100.00
अल्मोड़ा	ताड़ीखेत	42.97	38.44	18.59	100.00

तालिका 3.9 जनपद में ग्राम पंचायतों से पलायन आयु वर्गवार				योग
जनपद	ग्राम पंचायतों से पलायन आयु वर्गवार (प्रतिशत में)			
	25 साल से कम (वर्तमान में)	26 से 35 साल तक (वर्तमान में)	35 साल से ऊपर (वर्तमान में)	
अल्मोड़ा	**29.19**	**42.22**	**28.59**	**100.00**

तालिका 3.10 राज्य में ग्राम पंचायतों से पलायन आयु वर्गवार				योग
राज्य का नाम	ग्राम पंचायतों से पलायन आयु वर्गवार (प्रतिशत में)			
	25 साल से कम (वर्तमान में)	26 से 35 साल तक (वर्तमान में)	35 साल से ऊपर (वर्तमान में)	
उत्तराखण्ड़	**28.66**	**42.25**	**29.09**	**100.00**

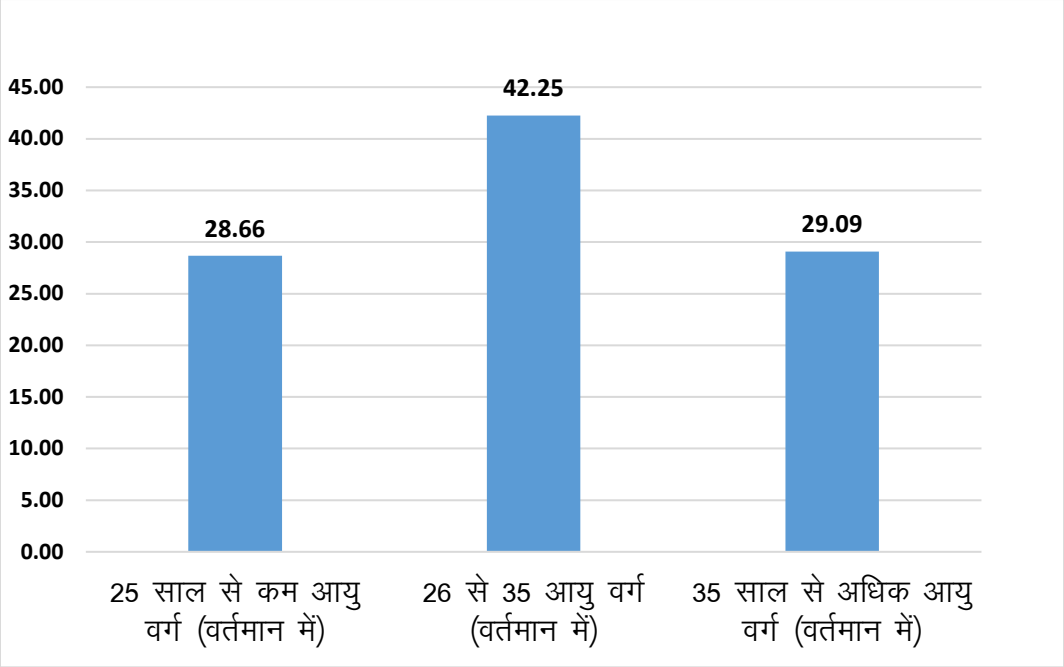

3.5 पलायन के गन्तव्य

ग्राम पंचायतों से हो रहे पलायन के गन्तव्य का विश्लेषण कर सामने आये आकड़ों को इस खण्ड़ में प्रस्तुत किया जा रहा है जिसमें स्पष्ट हुआ है कि राज्य के ग्राम पंचायतों से लगभग 35 प्रतिशत पलायन राज्य के अन्य जनपदों में है जबकि 28 प्रतिशत पलायन राज्य के बाहर हुआ है।

तालिका 3.11 विकासखण्ड वार ग्राम पंचायतों से पलायन के गन्तव्य

जनपद	विकासखण्ड	पलायन के परिणाम (प्रतिषत में)					
		नजदीकी नगर	जनपद मुख्यालय	राज्य के अन्य जनपद	राज्य के बाहर	देष के बाहर	योग
अल्मोड़ा	भैंसियाछाना	1.80	13.37	38.96	45.85	0.01	100.00
अल्मोड़ा	भिकियासैंण	5.38	9.98	23.67	60.65	0.33	100.00
अल्मोड़ा	चौखुटिया	8.71	7.16	30.90	53.03	0.20	100.00
अल्मोड़ा	धौलादेवी	4.02	15.66	44.23	36.09	0.00	100.00
अल्मोड़ा	द्वाराहाट	13.52	11.29	31.37	42.52	1.29	100.00
अल्मोड़ा	हवालबाग	6.25	12.50	35.00	46.25	0.00	100.00
अल्मोड़ा	लमगड़ा	13.94	25.91	40.23	19.52	0.40	100.00
अल्मोड़ा	सल्ट	10.38	11.69	27.46	50.15	0.31	100.00
अल्मोड़ा	स्याल्दे	1.53	9.76	29.04	59.61	0.07	100.00
अल्मोड़ा	ताकुला	2.31	15.04	29.80	52.67	0.18	100.00
अल्मोड़ा	ताड़ीखेत	8.60	9.97	32.65	47.76	1.01	100.00
कुल		**7.13**	**13.00**	**32.37**	**47.08**	**0.43**	**100.00**

तालिका 3.12 जनपद में ग्राम पंचायतों से पलायन के गन्तव्य						
जनपद	पलायन के परिणाम (प्रतिशत में)					योग
	नजदीकी नगर	जनपद मुख्यालय	राज्य के अन्य जनपद	राज्य के बाहर	देश के बाहर	
अल्मोड़ा	**7.13**	**13.00**	**32.37**	**47.08**	**0.43**	**100.00**

तालिका 3.13 राज्य में ग्राम पंचायतों से पलायन के परिणाम						
राज्य का नाम	पलायन के परिणाम (प्रतिषत में)					योग
	नजदीकी नगर	जनपद मुख्यालय	राज्य के अन्य जनपद	राज्य के बाहर	देष के बाहर	
उत्तराखण्ड़	19.46	15.18	35.69	28.72	0.96	100.00

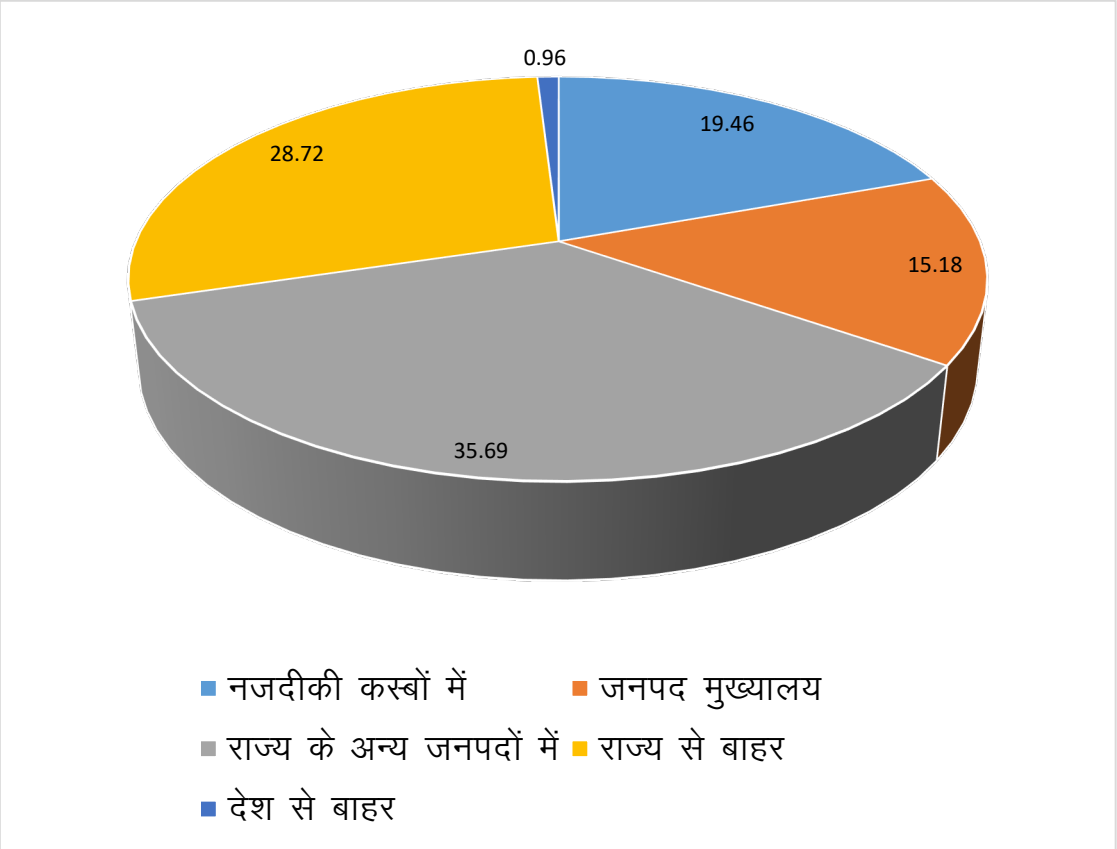

3.6 वर्ष 2011 के बाद निर्जन ग्रामों की संख्या

इस खण्ड में 2011 के बाद निर्जन हुए रजस्व ग्रामों/तोकों/मजरों का जनपद और विकासखण्ड वार सारांश प्रस्तुत किया जाता है तथा जिनमें सड़क सुविधा का अभाव, बिजली का अभाव, पेयजल का अभाव और पी.एच.सी उपलब्धता 1 किमी के अन्दर नहीं है एवं अंतर्राष्ट्रीय सीमा से 5 किमी हवाई दूरी वाले ग्रामों का विवरण निम्न तालिकाओं के माध्यम से स्पष्ट किया गया है।

तालिका 3.14 विकासखण्ड वार ग्राम पंचायत स्तर पर निर्जन हुए राजस्व ग्रामों/तोकों संख्या (2011 के बाद)		
जनपद	**विकासखण्ड**	**कुल राजस्व ग्राम/तोक/मजरा (वर्तमान में)**
अल्मोड़ा	भिकियासैंण	6
अल्मोड़ा	चौखुटिया	6
अल्मोड़ा	धौलादेवी	7
अल्मोड़ा	द्वाराहाट	4
अल्मोड़ा	हवालबाग	4
अल्मोड़ा	लमगड़ा	4
अल्मोड़ा	सल्ट	20
अल्मोड़ा	स्याल्दे	2
अल्मोड़ा	ताकुला	2
अल्मोड़ा	ताड़ीखेत	2
	योग	**57**

तालिका 3.15 जनपदवार ग्राम पंचायत स्तर पर निर्जन हुए राजस्व ग्रामों/तोकों संख्या (2011 के बाद)	
जनपद	**कुल राजस्व ग्राम/तोक/मजरा (वर्तमान में)**
अल्मोड़ा	57
उत्तराखण्ड	734

तालिका 3.16 जनपद और विकासखण्ड वार ग्राम पंचायत स्तर पर राजस्व ग्रामों/तोकों की संख्या (सड़क की सुविधा नहीं है)		
जनपद	**विकासखण्ड**	**कुल राजस्व ग्राम/तोक/मजरा (वर्तमान में)**
अल्मोड़ा	भिकियासैंण	5
अल्मोड़ा	चौखुटिया	3
अल्मोड़ा	धौलादेवी	7
अल्मोड़ा	द्वाराहाट	1
अल्मोड़ा	हवालबाग	2
अल्मोड़ा	लमगड़ा	3
अल्मोड़ा	सल्ट	15
अल्मोड़ा	स्याल्दे	2
अल्मोड़ा	ताकुला	2
अल्मोड़ा	ताड़ीखेत	2
योग (अल्मोड़ा)		**42**
उत्तराखण्ड		**482**

तालिका 3.17 जनपद और विकासखण्ड वार ग्राम पंचायत स्तर पर राजस्व ग्रामों/ तोकों की संख्या (बिजली की सुविधा नहीं है)		
जनपद	**विकासखण्ड**	**कुल राजस्व ग्राम/तोक/मजरा (वर्तमान में)**
अल्मोड़ा	भिकियासैंण	1
अल्मोड़ा	चौखुटिया	2
अल्मोड़ा	धौलादेवी	2
अल्मोड़ा	द्वाराहाट	1
अल्मोड़ा	हवालबाग	2
अल्मोड़ा	लमगड़ा	4
अल्मोड़ा	सल्ट	5
अल्मोड़ा	स्याल्दे	2
अल्मोड़ा	ताड़ीखेत	2
योग		**21**

तालिका 3.18 जनपदवार ग्राम पंचायत स्तर पर पर राजस्व ग्रामों/तोकों की संख्या (बिजली की सुविधा नहीं है)	
जनपद	**कुल राजस्व ग्राम/तोक/मजरा (वर्तमान में)**
अल्मोड़ा	21
उत्तराखण्ड	358

तालिका 3.19 जनपद और विकासखण्ड वार ग्राम पंचायत स्तर पर राजस्व ग्रामों/ तोकों की संख्या (1 किमी के अन्दर पेयजल सुविधा नहीं है)		
जनपद	**विकासखण्ड**	**कुल राजस्व ग्राम/तोक/मजरा (वर्तमान में)**
अल्मोड़ा	भिकियासैंण	1
अल्मोड़ा	चौखुटिया	2
अल्मोड़ा	धौलादेवी	2
अल्मोड़ा	द्वाराहाट	4
अल्मोड़ा	हवालबाग	2
अल्मोड़ा	लमगड़ा	4
अल्मोड़ा	सल्ट	12
अल्मोड़ा	स्याल्दे	2
अल्मोड़ा	ताड़ीखेत	1
	योग	**30**

तालिका 3.20 जनपदवार ग्राम पंचायत स्तर पर राजस्व ग्रामों/तोकों की संख्या (1 किमी के अन्दर पेयजल सुविधा नहीं है)	
जनपद	**कुल राजस्व ग्राम/तोक/मजरा (वर्तमान में)**
अल्मोड़ा	30
उत्तराखण्ड	**399**

तालिका 3.21 जनपद और विकासखण्ड वार ग्राम पंचायत स्तर पर राजस्व ग्रामों/ तोकों की संख्या (पीएचसी सुविधा नहीं है)		
जनपद	**विकासखण्ड**	**कुल राजस्व ग्राम/तोक/मजरा (वर्तमान में)**
अल्मोड़ा	भिकियासैंण	6
अल्मोड़ा	चौखुटिया	6
अल्मोड़ा	धौलादेवी	7
अल्मोड़ा	द्वाराहाट	4
अल्मोड़ा	हवालबाग	4
अल्मोड़ा	लमगड़ा	4
अल्मोड़ा	सल्ट	17
अल्मोड़ा	स्याल्दे	2
अल्मोड़ा	ताकुला	2
अल्मोड़ा	ताड़ीखेत	1
	योग	**53**

तालिका 3.22 जनपदवार ग्राम पंचायत स्तर पर पर राजस्व ग्रामों/तोकों की संख्या (पीएचसी सुविधा नहीं है)	
जनपद	**कुल राजस्व ग्राम/तोक/मजरा (वर्तमान में)**
अल्मोड़ा	53
उत्तराखण्ड़	**660**

3.7 ऐसे ग्राम जहां अन्य दूसरे ग्रामों/कस्बों/तोकों से पिछले 10 वर्षो में लोग पलायन कर निवास कर रहे हैं–

यह भाग उन ग्रामों का जिले एवं विकासखण्डवार संख्या का विवरण प्रस्तुत करता है, जहां दूसरे ग्राम/कस्बों/तोकों के लोग पलायन कर बस गए हैं।

तालिका 3.23 : जनपद और विकासखण्ड वार कुल ग्रामों/तोकों की संख्या जहां अन्य दूसरे/ग्रामों/कस्बों/तोकों से लोग पलायन कर पिछले 10 वर्षो से निवास कर रहे हैं		
जनपद	**विकासखण्ड**	**ग्रामों/तोकों की संख्या जहां अन्य दूसरे/ग्रामों/कस्बों/तोकों से लोग पलायन कर पिछले 10 वर्षो से निवास कर रहे हैं**
अल्मोड़ा	भैंसियाछाना	1

तालिका 3.23 : जनपद और विकासखण्ड वार कुल ग्रामों/तोकों की संख्या जहां अन्य दूसरे/ग्रामों/कस्बों/तोकों से लोग पलायन कर पिछले 10 वर्षो से निवास कर रहे हैं		
जनपद	विकासखण्ड	ग्रामों/तोकों की संख्या जहां अन्य दूसरे/ग्रामों/कस्बों/तोकों से लोग पलायन कर पिछले 10 वर्षो से निवास कर रहे हैं
अल्मोड़ा	भिकियासैंण	8
अल्मोड़ा	चौखुटिया	2
अल्मोड़ा	धौलादेवी	7
अल्मोड़ा	द्वाराहाट	12
अल्मोड़ा	हवालबाग	NA
अल्मोड़ा	लमगड़ा	1
अल्मोड़ा	सल्ट	5
अल्मोड़ा	स्याल्दे	1
अल्मोड़ा	ताकुला	1
अल्मोड़ा	ताड़ीखेत	1
	योग	**39**

तालिका 3.24 : जनपदवार कुल ग्रामों/तोकों की संख्या जहां अन्य दूसरे/ग्रामों/कस्बों/तोकों से लोग पलायन कर पिछले 10 वर्षो से निवास कर रहे हैं	
जनपद	कुल राजस्व ग्राम/तोक/मजरा (वर्तमान में)
अल्मोड़ा	39
उत्तराखण्ड	**850**

3.8 ऐसे गांव जहां 2011 की जनगणना के बाद 50% तक पलायन हुआ है–

यह खण्ड उन राजस्व ग्रामों/तोकों की संख्या को जनपद और विकासखण्ड वार सांराश का विवरण प्रस्तुत करता है जिनमें मोटर मार्ग का अभाव, विद्युत का अभाव, एक किमी तक पानी का अभाव, पी0एच0सी0 की अनुपलब्धता, और अन्तर्राष्ट्रीय सीमा से 5 किमी हवाई दूरी वाले ग्राम शामिल हैं, जिनकी जनसंख्या 2011 के बाद 50 प्रतिशत कम हुई है।

तालिका 3.25 : जनपद और विकासखण्ड वार कुल ग्रामों/तोकों की संख्या जहां 2011 की जनगणना के बाद 50% जनसंख्या कम हुई है।		
जनपद	विकासखण्ड	कुल ग्राम/तोक/मजरा
अल्मोड़ा	भिकियासैंण	18
अल्मोड़ा	चौखुटिया	11
अल्मोड़ा	धौलादेवी	18

तालिका 3.25 : जनपद और विकासखण्ड वार कुल ग्रामों/तोकों की संख्या जहां 2011 की जनगणना के बाद 50% जनसंख्या कम हुई है।		
जनपद	**विकासखण्ड**	**कुल ग्राम/तोक/मजरा**
अल्मोड़ा	द्वाराहाट	5
अल्मोड़ा	हवालबाग	2
अल्मोड़ा	सल्ट	23
अल्मोड़ा	स्याल्दे	1
अल्मोड़ा	ताड़ीखेत	2
	योग	**80**

तालिका 3.26 : जनपद और विकासखण्ड वार कुल ग्रामों/तोकों की संख्या जहां 2011 की जनगणना के बाद 50% जनसंख्या कम हुयी है।	
जनपद	**कुल राजस्व ग्राम/तोक/मजरा (वर्तमान में)**
अल्मोड़ा	80
उत्तराखण्ड	**565**

तालिका 3.27 : जनपद और विकासखण्ड वार कुल ग्रामों/तोकों की संख्या जहां 2011 की जनगणना के बाद 50% जनसंख्या कम हुयी है। (सड़क की सुविधा नहीं है)		
जनपद	**विकासखण्ड**	**कुल राजस्व ग्राम/तोक/मजरा (वर्तमान में)**
अल्मोड़ा	भिकियासैंण	15
अल्मोड़ा	चौखुटिया	4
अल्मोड़ा	धौलादेवी	15
अल्मोड़ा	द्वाराहाट	3
अल्मोड़ा	हवालबाग	2
अल्मोड़ा	सल्ट	21
अल्मोड़ा	स्याल्दे	1
अल्मोड़ा	ताड़ीखेत	2
	योग	**63**

तालिका 3.28 : तालिका 3.29 : जनपद और विकासखण्ड वार कुल ग्रामों/तोकों की संख्या जहां 2011 की जनगणना के बाद 50% जनसंख्या कम हुयी है। (सड़क की सुविधा नहीं है)	
जनपद	**कुल राजस्व ग्राम/तोक/मजरा (वर्तमान में)**
अल्मोड़ा	63
उत्तराखण्ड़	**367**

तालिका 3.29 : जनपद और विकासखण्ड वार कुल ग्रामों/तोकों की संख्या जहां 2011 की जनगणना के बाद 50% जनसंख्या कम हुयी है। (बिजली की सुविधा नहीं है)		
जनपद	**विकासखण्ड**	**कुल राजस्व ग्राम/तोक/मजरा (वर्तमान में)**
अल्मोड़ा	भिकियासैंण	7
अल्मोड़ा	चौखुटिया	2
अल्मोड़ा	धौलादेवी	1
अल्मोड़ा	सल्ट	1
	योग	**11**

तालिका 3.30: जनपद और विकासखण्ड वार कुल ग्रामों/तोकों की संख्या जहां 2011 की जनगणना के बाद 50% जनसंख्या कम हुयी है। (बिजली की सुविधा नहीं है)	
जनपद	**कुल राजस्व ग्राम/तोक/मजरा (वर्तमान में)**
अल्मोड़ा	11
उत्तराखण्ड	**119**

तालिका 3.31 : जनपद और विकासखण्ड वार कुल ग्रामों/तोकों की संख्या जहां 2011 की जनगणना के बाद 50% जनसंख्या कम हुयी है। (1 किमी के अन्दर पेयजल सुविधा नहीं है)		
जनपद	**विकासखण्ड**	**कुल राजस्व ग्राम/तोक/मजरा (वर्तमान में)**
अल्मोड़ा	भिकियासैंण	7
अल्मोड़ा	चौखुटिया	6
अल्मोड़ा	धौलादेवी	3
अल्मोड़ा	द्वारहाट	4
अल्मोड़ा	सल्ट	14
	योग	**34**

तालिका 3.32 : तालिका 3.27 : जनपद और विकासखण्ड वार कुल ग्रामों/तोकों की संख्या जहां 2011 की जनगणना के बाद 50% जनसंख्या कम हुयी है। (1 किमी के अन्दर पेयजल सुविधा नहीं है)	
जनपद	**कुल राजस्व ग्राम/तोक/मजरा (वर्तमान में)**
अल्मोड़ा	34
उत्तराखण्ड	**203**

तालिका 3.33: जनपद और विकासखण्ड वार कुल ग्रामों/तोकों की संख्या जहां 2011 की जनगणना के बाद 50% जनसंख्या कम हुयी है। (पीएचसी सुविधा नहीं है)		
जनपद	**विकासखण्ड**	**कुल राजस्व ग्राम/तोक/मजरा (वर्तमान में)**
अल्मोड़ा	भिकियासैंण	17
अल्मोड़ा	चौखुटिया	11
अल्मोड़ा	धौलादेवी	14
अल्मोड़ा	द्वारहाट	4
अल्मोड़ा	हवालबाग	2
अल्मोड़ा	सल्ट	20
अल्मोड़ा	स्याल्दे	1
अल्मोड़ा	ताड़ीखेत	2
कुल	**योग**	**71**

तालिका 3.34: जनपद और विकासखण्ड वार कुल ग्रामों/तोकों की संख्या जहां 2011 की जनगणना के बाद 50% जनसंख्या कम हुयी है। (पीएचसी सुविधा नहीं है)	
जनपद	**कुल राजस्व ग्राम/तोक/मजरा (वर्तमान में)**
अल्मोड़ा	71
उत्तराखण्ड	**510**

अध्याय IV

वर्तमान ग्रामीण सामाजिक–आर्थिक विकास कार्यक्रम

यह अध्याय वर्तमान समय में जनपद अल्मोड़ा के अर्न्तगत विभिन्न सरकारी विभागों द्वारा किए गये सामाजिक–आर्थिक कार्यक्रमों का सांराश प्रस्तुत करता है।

4.1 ग्राम्य विकास

तालिका 4.1 ग्राम्य विकास विभाग द्वारा चलाई जा रही विभिन्न प्रकार की योजनाओं और कार्यक्रमों को प्रदर्शित करती है।

तालिका संख्या 4.1: जनपद अल्मोड़ा में ग्राम्य विकास विभाग की योजनाएं (धनराषि लाख में)

क्रं0 सं0	योजना का नाम	01.04.2016 को शेष धनराषि	बजट की तुलना में खर्च की गई धनराषि (3)	वित्तीय वर्ष 2016–17 के लिए बजट	वित्तीय वर्ष 2016–17 में अवमुक्त धनराषि	कुल अवमुक्त धनराषि की तुलना में व्यय धनराषि	कुल उपलब्ध धनराषि	कुल व्यय	लक्ष्य	इकाई	पूर्ति
1	**2**	**3**	**4**	**5**	**6**	**7**	**8**	**9**	**10**	**11**	**12**
1	मनेरगा	6.90	0.00	2930.20	3950.18	3961.95	3968.44	3961.95	14	लाख मानव दिवस	13.99
2	आजीविका	0	0	0	0	0	0	0	0	वित्तपोशित	0
3	पी0एम0ए0वाई / आई0ए0वाई	0	0	234	92.20	92.20	92.20	92.20	180	संख्या	85
4	डी0यू0जी0ए0 वाई0	4.51	4.02	48.75	0.00	0.00	4.58	4.02	65	संख्या	17
5	सी0एस0एस0	0.53	0	24.50	0	0	0.53	0	245	संख्या	0
6	बायो गैस	2.42	2.32	2.42	0	0	2.42	2.32	25	संख्या	22
7	डी0पी0ए0पी0	0	0	0	0	0	0	0	0	हे0	0
8	आई0डब्ल्यू0 डी0पी0	0	0	0	0	0	0	0	0	हे0	0
10	विधायक निधि	2764.01	1340.93	2250	2250	302.83	5014.01	1643.76	..	संख्या	..
11	सांसद निधि	456.61	327.47	500	0	0	456.61	327.47	..	..	..
12	उत्तराखण्ड सीमान्त और पिछड़े क्षेत्र विकास	80.96	9.23	0	0	0	80.96	9.23	..	..	..

स्रोत : ग्राम्य विकास विभाग, उत्तराखण्ड,

तालिका 4.2 जनपद अल्मोड़ा के विकासखण्डों में एन.आर.एल.एम के तहत गठित एस.एच.जी (स्वयं सहायता समूह) के प्रकार और संख्या को प्रदर्शित करती है।

तालिका 4.2: स्वयं सहायता समूहों का सामाजिक श्रेणी वार विवरण (विकासखण्ड वार)												
क्र0 सं0	विकासखण्ड	कुल एस0एच0जी	एस0एच0जी सदस्य श्रेणी वार			अल्पसंख्यक सदस्य श्रेणी वार					
			नये	रिवाइव	एन.आर.एल.एम. से पूर्व	एस0 सी0	एस0 टी0	अल्पसंख्यक	अन्य	योग	दिव्यांग
1	चौखुटिया	45	0	40	5	8	0	0	37	45	0
2	भिकियासैंण	44	0	37	7	7	0	0	37	44	18
3	ताकुला	50	0	48	2	7	0	0	43	50	8
4	सल्ट	149	91	51	7	41	0	0	107	148	9
5	भैंसियाछाना	63	0	49	14	17	0	0	46	63	0
6	धौलादेवी	79	1	56	22	30	0	0	49	79	73
7	द्वाराहाट	142	75	57	10	29	0	0	112	141	19
8	लमगड़ा	27	0	26	1	3	0	0	24	27	0
9	स्याल्दे	36	3	31	2	3	0	1	32	36	1
10	ताड़ीखेत	287	258	21	8	106	0	1	180	287	43
11	हवालबाग	61	0	46	15	14	0	0	47	61	14
	कुल योग	**983**	**428**	**462**	**93**	**265**	**0**	**2**	**714**	**981**	**185**

स्रोत :www.nrlm.gov.in

सल्ट, स्याल्दे, भिकियासैंण जैंसे विकासखण्डों में एस0एच0जी की संख्या बहुत कम है। और इन विकासखण्डों में कोई भी नया स्वयं सहायता समूह नहीं है।

4.1.1 आजीविका:

उत्तराखण्ड राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन द्वारा आई.एफ.ए.डी. के सहयोग से आई.एल.एस.पी. (एकीकृत आजीविका सहयोग परियोजना) नामक एक कार्यक्रम चलाया जा रहा है। यह कार्यक्रम खाद्य सुरक्षा और आजीविका संवर्धन, वाटरशेड डेवलपमेंट, लाइवलीहुड फाइनेंसिंग और प्रोजेक्ट मॉनिटरिंग घटकों पर केंद्रित है, जो उत्पादक समूहों के गठन, फसल और पशुधन उत्पादन में समर्थन, बैकवर्ड और फॉरवर्ड लिंकेज, संग्रह केंद्रों एवं प्रशिक्षण जैंसी विभिन्न गतिविधियों को पूरा करता है। इस कार्यक्रम के तहत, कृषि में मशीनीकरण की सुविधा के लिए विकासखण्ड स्तर पर कई कृषि मशीनरी बैंक स्थापित किए गए हैं। इस कार्यक्रम के तहत कृषि, वनोपज, कौशल विकास आदि जैसे विभिन्न क्षेत्रों में तकनीकी विशेषज्ञता प्रदान करने के लिए स्थानीय एजेंसियों, विशेष क्षेत्र आधारित/विकासखण्ड स्तर में काम किया जाता है।

आई.एल.एस.पी. कार्यक्रम भिकियासैंण, चौखुटिया, हवालबाग, सल्ट, स्याल्दे, ताड़ीखेत और द्वाराहाट विकासखण्डों में चलाया जा रहा है। निम्न तालिका जनपद अल्मोड़ा में इस कार्यक्रम की विस्तृत सूचना को दर्शाती है।

तालिका4.3 :जनपद अल्मोड़ा में आई.एल.एस.पी कार्यक्रम के अर्न्तगत आच्छादित परिवार

क्रं0सं 0	प्रोत्साहित ग्रामों की संख्या	प्रोत्साहित समूहों की संख्या	पी.जी. / वी.पी.जी. के अर्न्तगत प्रोत्साहित परिवारों की संख्या (प्रथम)	पूंजीगत प्रोत्साहित परिवारों की संख्या(प्रथम)	एल.सी की संख्या (पंजीकृत)
1	112	322	2916	328	6
2	115	316	3011	420	5
3	102	323	3163	621	6
4	88	308	3165	823	6
5	94	355	3339	324	5
6	121	367	3261	339	6
7	128	341	3007	196	6
कुल 760		**2332**	**21862**	**3051**	**40**

स्रोत : डीपीएमयू–आईएलएसपी, अल्मोड़ा,

हाट बाजार

स्थानीय बाजार के विचार के साथ सहकारी समितियों में हाट बाजार की स्थापना की है, जिससे सहकारी समिति के सदस्यों को बाजार की सुविधा प्रदान हो सके। इन खुले बाजारों को मुख्य रूप से जनपद के शहरी केन्द्रों जैसे हवालबाग, चौखुटिया, भिकियासैंण आदि के पास साप्ताहिक रूप से आयोजित किया जाता है, इस तरह के बाजार की उपलब्धता के कारण स्थानीय सदस्यों को नियमित आय अर्जित हो रही है।

आई.एल.एस.पी. (एकीकृत आजीविका सहयोग परियोजना)

आई.एफ.ए.डी. ने आईएलएसपी कार्यक्रम के माध्यम से जनपद अल्मोड़ा में कई स्वयं सहायता समूहों के फेडरेशन का गठन किया है। विकासखण्ड हवालबाग के 10 ग्रामों के 46 उत्पादक समूहों के 501 सदस्यों द्वारा डेयरी, टेक होम राशन, मवेशी चारा, राखी बनाना आदि आर्थिक गतिविधियां की हैं।

बीज उत्पादन

ग्राम्या योजना के तहत, 17 FIGs "किसान हित समूह" गठित किये गए और वर्ष 2015 में "जागनाथ कृषि बीज उत्पादक संघ" आर्तोला के रूप पंजीकृत किए गए हैं। इस महासंघ के पास "तराई बीज और विकास निगम" TDC द्वारा प्रमाणित और नये बीज बेचने का प्रमाण पत्र उपलब्ध है। उत्तराखण्ड़ राज्य बीज प्रमाणक एजेंसी, USSCA द्वारा किसानों को बीज उत्पादन में प्रशिक्षित किया है और उनके द्वारा उत्पादित बीज को TDC द्वारा प्रदान की गई मोबाइल बीज प्रसंस्करण वैन द्वारा एकत्र किया जाता है। 2017 खरीफ सीजन में धान, मंडुआ, रामदाना, गहत और भट्ट किस्मों के प्रजनक बीज VPKAS, TDC और राज्य सरकार से खरीदे गये थे। महासंघ 132 क्विंटल बीज का उत्पादन करने में सफल रहा।

स्रोत : संवाद– आजीविका पत्रिका, अक्टूबर2018

4.1.2 मनरेगाः तालिका 4.4, जनपद अल्मोड़ा में मनरेगा की स्थिति को प्रदर्शित करती है। इस योजना के तहत वित्तीय वर्ष 2017–18 में पूरे जनपद के लिए कुल व्यय रू. 3,935.25 लाख है, जो कि वित्तीय वर्ष 2016–17 के लिए रू. 3,545.74 लाख था (मजदूरी और सामग्री अंश दोनों को मिलाकर)। कुल व्यय पिछले 3 वित्तीय वर्षो में बढ़ रहा है।

तालिका संख्या 4.4: मनरेगा की स्थिति(31.12.2018)			
कुल विकासखण्डों की संख्या	11		
कुल ग्राम पंचायतों की संख्या	1,168		
I. जॉब कार्ड			
कुल जारी किए गए जॉब कार्डो की संख्या (लाख में)	1		
कुल श्रमिकों की संख्या (लाख में)	2.09		
कुल सक्रिय जॉब कार्डो की संख्या(लाख में)	0.58		
कुल सक्रिय श्रमिकों की संख्या(लाख में)	0.82		
(i) सक्रिय श्रमिक में एस.सी. श्रमिक (%)	20.94		
(ii) सक्रिय श्रमिक में एस.टी. श्रमिक (%)	0.08		
II.प्रगति	**वर्ष 2018–2019**	**वर्ष 2017–2018**	**वर्ष 2016–2017**
स्वीकृत मजदूरी बजट(लाख में)	13.08	14	10
अब तक श्रृजित मानव दिवस(लाख में)	10.04	14.14	11.77
कुल मजदूरी बजट का %	76.76	100.98	117.76
मजदूरी बजट आनुपातिक के अनुसार (%)	91.47	..	..
कुल मानव दिवसों में एस.सी मानव दिवस का %	21.06	21.07	21.64
कुल मानव दिवसों में एस.टी मानव दिवस का %	0.13	0.08	0.09
कुलदिवसों में महिला मानव दिवस (%)	58.33	57.61	56.28
प्रति परिवार प्रदान किए गए रोजगार के औसत दिन	34.44	38.03	32.73
प्रति दिन प्रति व्यक्ति औसत मजदूरी दर (रू.)	175	174.98	173.98
कुल परिवारों की संख्या जिनके द्वारा 100 दिनों का रोजगार दिवस पूरे किए गए	606	1,124	1,427
कार्य करने वाले कुल परिवार(लाख में)	0.29	0.37	0.36
कार्य करने वाले कुल व्यक्ति(लाख में)	0.38	0.5	0.46
अलग–अलग काम करने वाले व्यक्ति	46	42	13
III.कार्य			
ग्राम पंचायतों की संख्या जिनमें कोई व्यय नहीं	106	38	16
निमार्ण कार्यो की कुल संख्या(नये+ पिछले) (लाख में)	0.07	0.11	0.1
प्रगतिशील कार्यो की संख्या (लाख में)	0.03	0.04	0.06
पूर्ण कार्यो की संख्या	3,421	6,789	4.449
एन.आर.एम व्यय का % (सार्वजनिक+ व्यक्तिगत)	64.74	58.61	46.62
बी श्रेणी के कार्यो का %	37.84	24.82	14.2

कृषि और कृषि सम्बन्धी कार्य पर व्यय का %	74.45	72.33	53.44
IV.वित्तीय प्रगति			
कुल व्यय (रू0 लाख में)	2,600.64	3,935.25	3.545.74
मजदूरी (रू0 लाख में)	1,815.57	2,544.02	2.626.57
सामग्री और कुशल मजदूरी (रू0 लाख में)	693.99	1,175.12	783.96
सामग्री (%)	27.65	31.6	22.99
कुल प्रशासनिक व्यय (रू0 लाख में)	91.08	216.11	135.21
प्रशासनिक व्यय (%)	3.5	5.49	3.81
प्रति दिन प्रति व्यक्ति औसत लागत (रू0में)	263.66	251.67	226.3
ई0एफ0एम0एस0 के माध्यम से कुल व्यय का (%)	99.79	99.99	99.97
15 दिनों के भीतर जनरेट भुगतान का (%)	99.8	94.15	58.46

Source: http://mnregaweb4.nic.in/netnrega/all_lvl_details_dashboard_new.aspx

4.1.3 ग्राम्याः यह कार्यक्रम राज्य जलागम निदेशालय द्वारा संचालित किया जाता है। यह सामुदायिक स्तर पर ग्राम पंचायतों, एस.एच.जी. और कमजोर समूहों के साथ काम करता है, निम्नलिखित तालिका जनपद अल्मोड़ा में ग्राम समूहों में वित्त पोषण वितरण को दर्शाती है।

तालिका 4.5: ग्राम्य योजना के अर्न्तगत ग्राम समूहों में वित्त पोषण

क्रं0सं0	गतिविधि	वित्तपोषित समूहों की संख्या	धनराषि
1	बुनाई का काम	1	10,000
2	बेकरी	1	50,000
3	केटरिंग	1	60,000
4	संग्रह / ग्रेडिंग / पैकेजिंग	16	1,70,000
5	मसाला चक्की (पिसाई)	4	1,90,000
6	पत्तल / कटोरियां बनाना	1	1,00,000
7	पैकेजिंग	1	1,00,000
8	रस्सी बनाना	1	30,000
9	साउंड सिस्टम	5	2,50,000
10	छोलिया नृत्य समूह	5	2,90,000
11	चौलाई के लड्डू बनाना	1	25,000
12	टोकरी बनाना	6	2,20,000
13	टेन्ट बनाना	19	13,70,000
14	लोहार का काम	1	50,000
कुल		**63**	**29,15,000**

Source: District Administration, Almora

इस योजना के अर्न्तगत संग्रह/ग्रेडिग/पैकेजिंग और टेन्ट वनाने जैसी गतिविधियों स्पष्ट रूप से पसंदीदा विकल्प के रूप में उभर रहा है।

4.2 लघु और मध्यम उद्योग

4.2.1 KVIB, अल्मोड़ा

तालिका 4.6 : जनपद अल्मोड़ा में PMEGP के तहत प्रगति (धनराषि लाख में)

क0स0	विकासखण्ड	2015–16			2016–17			2017–18			2018–19		
		इकाई	धनराषि	रोजगार	इकाई	धनराषि	रोजगार	इकाई	धनराषि	रोजगार	इकाई	धनराषि	रोजगार
1	ताकुला	7	28	18	3	12.5	8	10	45.5	46	5	25	25
2	हवालबाग	12	39	25	13	85	57	22	37.5	38	17	86	86
3	भेसियाछाना	3	15	10	2	10	6	3	11.5	12	4	18	18
4	धौलादेवी	7	30.5	19	5	29	20	6	17	17	6	28	28
5	लमगड़ा	5	15	10	2	15	10	6	21	21	4	16.65	17
6	द्वाराहाट	1	5	3	0	0	0	1	6.25	6	1	2.5	3
7	चौखुटिया	1	8	5	1	10	6	1	4	4	0	0	0
8	ताड़ीखेत	1	10	6	0	0	0	4	22	22	0	0	0
9	सल्ट	0	0	0	1	5	3	0	0	0	0	0	0
10	स्याल्दे	1	3	2	0	0	0	0	0	0	0	0	0
11	भिकियासैंण	0	0	0	1	5	3	1	5	5	0	0	0
	योग	**38**	**153.5**	**98**	**28**	**171.5**	**113**	**54**	**169.75**	**171**	**37**	**176.15**	**177**

स्रोत : खादी ग्रामोद्योग, अल्मोड़ा

तालिका 4.7: अल्मोड़ा में व्यक्तिगत ब्याज सब्सिडी योजना के तहत प्रगति (धनराषि लाख में)													
क्रं.स.	विकासखण्ड	2015-16			2016-17			2017-18			2018-19		
		इकाईयां	वित्तपोषण	रोजगार	इकाईयां	वित्तपोषण	रोजगार	इकाईयां	वित्तपोषण	रोजगार	इकाईयां	वित्तपोषण	रोजगार
1	ताकुला	6	25	16	7	19.5	13	1	5	5	0	0	0
2	हवालबाग	32	81.5	50	34	101.5	67	4	13	13	0	0	0
3	भैंसियाछाना	3	14	10	6	20	15	0	0	0	0	0	0
4	धौलादेवी	18	57.5	35	21	61.5	40	3	8	8	0	0	0
5	लमगड़ा	5	11.5	8	6	22	17	7	31	31	0	0	0
6	द्वाराहाट	4	14	9	1	2	1	0	0	0	0	0	0
7	चौखुटिया	4	15.5	10	0	0	0	1	5	5	0	0	0
8	ताड़ीखेत	1	5	3	7	20	13	0	0	0	0	0	0
9	सल्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
10	स्याल्दे	2	8	5	7	28.5	19	1	5	5	0	0	0
11	भिकियासैंण	1	4	2	0	0	0	0	0	0	0	0	0
	कुल	**76**	**236**	**148**	**89**	**275**	**185**	**17**	**67**	**67**	**0**	**0**	**0**

स्रोत : खादी ग्रामोद्योग, अल्मोड़ा

उपर्युक्त दोनों तालिकाएं जिला खादी विकास बोर्ड (के.वी.आई.बी.) के अर्न्तगत दो अलग–अलग योजनाओं के आंकड़ों को प्रदर्शित करती हैं, जनपद के भीतर इन सूक्ष्म औद्योगिक इकाइयों की उपस्थिति में असमानता प्रतीत होती हैं। इन दोनों योजनाओं की लगभग 50% से अधिक इकाईयां विकासखण्ड हवालबाग, ताकुला तथा धौलादेवी में स्थापित हैं, पिछले तीन वित्तीय वर्षो में हवालबाग में सबसे अधिक इकाईयां स्थापित हुई हैं। यह इसलिए हुआ है क्योंकि यह सभी विकासखण्ड जनपद अल्मोड़ा मुख्यालय के आसपास हैं। जबकि इस योजना के तहत दूरदराज के विकासखण्डों जैसे स्याल्दे, सल्ट, भिकियासैंण, चौखुटिया आदि में इस योजना का प्रदर्शन खराब है। उद्यमिता और आजीविका उत्पादन का सर्मथन के लिए इन विकासखण्डों में ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता है।

उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रमों के तहत जनपद स्तर पर जिला उद्योग केन्द्र द्वारा सैकड़ों युवाओं को विद्युत कार्य, खाद्य प्रसंस्करण, कृषि, फल संरक्षण, सिलाई, बांस हस्तशिल्प आदि का प्रशिक्षण दिया गया है।

खादी और ग्रामोद्योग बोर्ड)KVIB) ऊन उत्पादन के लिए एक कारखाना संचालित करता है। जिसमें कच्चे माल अर्थात ऊन की खरीद हर्षिल (उत्तरकाशी, उत्तरखण्ड) और उच्च गुणवत्ता की सामग्री के हेतु ऑस्ट्रेलिया एवं न्यूजीलैंड से की जाती है। इस कारखाने में प्रसंस्करण, कताई, बुनाई का काम किया जाता है, एवं उत्पादों की मांग के अनुसार विभिन्न स्थानों पर भेजा जाता है। उत्पादों को प्रदर्शित करने और बेचने के लिए अल्मोड़ा बाजार में उनकी एक दुकान भी है। कारखाने में कई उत्पादों जैसे शॉल, कंबल, टोपी, स्कार्फ, जैकेट, स्वेटर आदि का निमार्ण कार्य करवाया जाता है। नीचे दी गई तालिका इसका विवरण प्रदर्शित करती है।

तालिका 4.8: रिवर व्यू फैक्ट्री अल्मोड़ा का उत्पादन विवरण

क्र.स.	वर्ष	उत्पादन (रू0 लाख में)	राजस्व (रू0 लाख में)	रोजगार	मजदूरी (रू0 लाख में)
1	2015–16	20.21	80.55	206	7.49
2	2016–17	27.11	96.35	195	3.19
3	2017–18	29.90	77.26	195	4.93
4	2018–19 (दिसम्बर 2018 तक)	26.94	30.61	195	5.66

स्रोत : रिवर व्यू कारखना, KVIB अल्मोड़ा

उपरोक्त रिवर व्यू फैक्ट्री की क्षमता तथा इससे जुड़े रोजगारों को बढ़ाया जा सकता है।

4.3 कृषि :– वर्तमान में जनपद अल्मोड़ा के अर्न्तगत कृषि विभाग द्वारा अनेक प्रकार की योजनाएं संचालित की जा रही हैं।

4.3.1 केन्द्र प्रायोजित योजनाएं

क. राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिषन (National Food Security Mission)–

भारत सरकार द्वारा अक्टूबर, 2017 में शुरू की गई इस योजना का उद्देश्य खाद्यान्नों का वार्षिक उत्पादन बढ़ाना है। केन्द्र और राज्य के मध्य धनराशि वितरण का अनुपात 90:10 है। इस योजना के तहत चावल, गेहूं, मोटे अनाज (मक्का, जौ), न्यूट्री अनाज (मंडुआ, झंगोरा, रामदाना आदि), दलहन (उड़द, गहत, चना मटर आदि), तिलहन (सोयाबीन, सरसों आदि) को बढ़ावा दिया जा रहा है।

ख.राष्ट्रीय संपोषणीय कृषि मिषन (National Mission for Sustainable Agriculture)-

विशेषकर वर्षा आधारित क्षेत्रों में एकीकृत कृषि, जल उपयोग दक्षता, मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन और संसाधन संरक्षण पर ध्यान केन्द्रित कर कृषि उत्पादकता बढ़ाने के लिए राष्ट्रीय मिशन फॉर सस्टेनेबल एग्रीकल्चर (NMSA) के तहत कार्ययोजना तैयार की जाती है। इस योजना के अर्न्तगत निम्नलिखित कार्यक्रम किये जाते हैं–

ख.1. वर्षा आधारित कृषि विकास योजना :– केन्द्र और राज्य के मध्य 90:10 के अनुपात में प्रायोजित कायक्रमों का उद्देश्य एकीकृत कृषि प्रणाली, जल उपयोग दक्षता, मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन और प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन के माध्यम से वर्षा आधारित कृषि को बढ़ावा देना है। इस कार्यक्रम के भीतर कई कृषि प्रणालियों को अपनाया जाता है, जैसे बागवानी आधारित कृषि प्रणाली, पशुधन आधारित कृषि प्रणाली, डेयरी आधारित कृषि प्रणाली, मत्स्य आधारित कृषि प्रणाली, सिल्वी–चारागाह आधारित कृषि प्रणाली/NTFP पोपलर, कृषि वानिकी आधारित कृषि प्रणाली, मूल्य संवर्द्धन और संसाधन संरक्षण।

ख.2. पारंपरिक कृषि विकास योजना

ख.3. मृदा स्वास्थ्य प्रबंधनः–मृदा परीक्षण प्रयोगशालाओं की स्थापना और किसानों को मृदा स्वास्थ्य कार्ड निःशुल्क प्रदान करना इसका उद्देश्य है।

ग. कृषि विस्तार और प्रौद्योगिकी पर राष्ट्रीय मिशन :–

ग.1 बीज और रोपण सामाग्री पर उप–मिशन

ग.2. कृषि यांत्रिकीकरण पर उप–मिशन

ग.3. ए.टी.एम.ए

घ. राष्ट्रीय तिलहन और पाम मिषन

च. प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना (Prime Minister Crop Insurance Scheme)–किसानों को फसल बुवाई से फसल कटाई तक प्राकृतिक जोखिमों से होने वाले नुकसान की भरपाई हेतु व्यापक कवरेज देने के उद्देश्य से फरवरी, 2016 में योजना शुरू की गयी है।

छ. **राष्ट्रीय कृषि विकास योजना (RKVY)--** राष्ट्रीय कृषि विकास योजना भारत सरकार की एक योजना है जिसे 2007 में जनपद/राज्य कृषि योजना के अनुसार राज्यों को अपने स्वयं के कृषि और संबद्ध क्षेत्र विकास गतिविधियों को चुनने की अनुमति देकर कृषि और संबद्ध क्षेत्र का समग्र विकास सुनिश्चित करने के लिए शुरू किया गया है। RKVY दिशानिर्देशों को RKVY-RAFTAAR- चौदहवें वित्त आयोग की शेष अवधि के लिए कार्यक्रम की दक्षता, प्रभावकारिता और समावेशिता बढ़ाने के लिए फिर से शुरू किया गया है।

छ.1. एकीकृत कीट प्रबंधन

छ.2. एकीकृत बहुउद्देषीय जल संरक्षण कार्यक्रम

छ.3. जैविक कृषि कार्यक्रम

छ.4. घेरबाड़ योजना– खेतों और फसलों को जंगली जानवरों जैसे बंदर, जंगली सुअर आदि से बचाने के लिए वर्ष 2014–15 में शुरू की गई।

छ.5. किसान मेला– पशुपालन, मत्स्य पालन, बागवानी, रेशम जैसे कई अन्य विभागों के सहयोग से न्याय पंचायत स्तर पर किसान मेलों का आयोजन किया जाता है। ये मेले किसानों के लिए विभिन्न योजनाओं की जानकारी उपलब्ध कराने के साथ–साथ प्रदर्शनी भी लगवायी जाती है।

छ.6. फार्म मषीनीकरण– इस कार्यक्रम के तहत किसानो को रियायती दर पर कई कृषि उपकरण उपलब्ध कराए जा रहे हैं।

छ.7. प्राकृतिक आपदा

ज. **प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना–**इस योजना का उद्देश्य सिंचाई संरचनाओं को विकसित करना, सिंचाई के तहत क्षेत्र मे वृद्धि करना, जल स्रोतों का एकीकरण, जल वितरण, जल संरक्षण और भूजल पुनर्भरण का उपयोग करना है।

ज.1. प्रतिबूंद अधिक फसल

ज.2. एकीकृत जलग्रहण प्रबंधन कार्यक्रम

झ. मृदा परीक्षण लैब (बोरान विश्लेषण कार्यक्रम)

4.3.2. राज्य प्रायोजित योजनाएं

अ. **अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति गांवों में कृषि विकास कार्यक्रम–** इस योजना का उद्देश्य अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति आबादी वाले गांवों में कृषि और संबद्ध गतिविधियों को बढ़ावा देना है। इन समुदायों के किसानों को बीज मिनी किट वितरण, कृषि उपकरणों का वितरण, जल संरक्षण और कटाई, मुर्गी पालन, मत्स्य पालन, पॉली–हाउस और अन्य विस्तार सेवांए जैंसी कई प्रकार की योजनाएं प्रदान की जाती है।

ब. **पंप सेट, स्प्रिंक्लर, खेत कार्यान्वयन कार्यक्रम**

4.3.3 जिला स्तरीय योजनाएं

अ. **पौध सुरक्षाः**—किसानों को पौध संरक्षण इनपुट जैसे कि शाकनाशी, कीटनाशी, सूक्ष्म पोषक तत्व, प्रकाश तथा फेरोमोन ट्रैप आदि उपलब्ध करवाये जाते हैं।

ब. **बीज मिनी किट वितरणः**—किसानों को अनाज, दालें, तिलहन, सब्जियां आदि के उच्च गुणवत्ता वाले बीज प्रदान किए जाते हैं।

स. **सिंचाई विकास कार्यक्रमः**—इस कार्यक्रम के अर्न्तगत सिंचाई की सुविधा के लिए पानी की टंकियों और सिंचाई संरचनाओं का निर्माण किया जाता है। मनरेगा जैसे अन्य कार्यक्रमों के साथ युगपतिकरण भी किया जाता है।

द. **वर्मी खादः**—यह कार्यक्रम बर्मी कम्पोस्टिंग और कृषि में इसके उपयोग के माध्यम से जैविक खाद उत्पादन की सुविधा प्रद्रान करवाई जाती है।

य. **फार्म—मषीनीकरणः**— कृषि यंत्र जैसे टैक्टर, थ्रेसर, आदि किसानों को अनुदान दर पर प्रदान किये जाते हैं। इस कार्यक्रम के अर्न्तगत विभाग के पास सामुदायिक स्वामित्व वाले कस्टम हायरिंग सेन्टर और फार्म मशीनरी बैंक भी हैं।

कृषि विभाग ने जनपद में किसानों की आय को दोगुना करने के लिए चयनित ग्राम पंचायतों (विकासखण्ड वार) में क्लस्टर बनाए हैं।

तालिका 4.9: किसानों की आय योजना के तहत चयनित क्लस्टर

विकासखण्ड	क्लस्टर का नाम	ग्राम पंचायत
हवालबाग	फलसीमा	माल, सरसों, बख, झासियाटाना, दुगलाखोला, चौसली, बल्टा, भुनड़ा, बिन्तोला
ताड़ीखेत	तिपोला	टूनाकोट, बमस्यूं, उपराड़ी, बजोल, बजीना, भड़गांव, चौकुनी, मौना, मकुडों, गैरड़
लमगड़ा	मोतियापाथर	नातादोल, भगादेवाली, मोर पतयूड़ी, धौरा, थान्त, बलिया, बेगानिया, आन्यूली, मेरगांव
द्वाराहाट	द्वाराहाट	कोतयूडा, मटेला, दुधोली, नायल, टोदड़ा, रतखान, मनेला, रावलसेरा, ऐराड़ी
धौलादेवी	आरासल्पड	आरासल्पड़, ग्योली, काभड़ी, चितौला, फाराखोली, भगरतोला, पपगाड़, नैलपड़, चमुवाखालसा
भैंसियाछाना	भैंसियाछाना	कुजबरगल, डुंगरी, धमोली, पेठशाल, बजोली
स्याल्दे	बारंगल	कलियालिंगुड, जैखाल, बंरगल
	सराईखेत	सराईखेत, उन्याल, कफलगांव, सकरगांव, बुरांशपानी
सल्ट	भौनखाल	अजोली तल्ली, आसुतले, देवायल, बधर, बौडामल्ला, बड़ेत, भकराकोट
	कुड़ीधार	कुड़ीधार, वरकीन्डा, बेसर, बगड़, बुॅगीधार

भिकियासैंण	सिनौडा	सिनौड़ा, पन्तगांव, दनपों, लौकोट, हरनोली, पालीथौली, मोहनरी
ताकुला	बसोली	हडौली, बसोली, चुराड़ी, भैसोड़ी, भकूना, सुनोली
	अमखोली	डोटियालगांव, थापला, पनेरगांव, अमखोली, बीना, काण्डे
चौखुटिया	वेतनधार	वेतनधार, गनाई, भनोती, भट्टकोट, रीठाचौरा, ढौन, टिम्टा, हाट झल्ला
	आदिग्राम फुलोड़िया	आदिग्राम फुलोरिया, आदिग्राम कनोड़िया

स्रोत : कृषि विभाग, अल्मोड़ा

इन क्लस्टरों में पारंपरिक कृषि, बागवानी, मत्स्य पालन, कृषि–वानिकी, डेयरी, मसाले, आदि जैसी आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा दिया जा रहा है। निम्न तालिका चयनित समूहों में बीज उत्पादन कार्यक्रम को प्रदर्शित करती है।

तालिका4.10: बीज उत्पादन कार्यक्रम– अल्मोड़ा में गेंहूँ क्लस्टर

क्रं.स.	विकासखण्ड	क्लस्टर का नाम	बोया क्षेत्रफल (हे0)
1	स्याल्दे	कुमालेश्वर	10
		उदयपुर / केहड़गांव	10
2	चौखुटिया	झलाहाट	10
		ताडकताल	10
3	ताकुला	सोनकोटली	10
		चनौली / नैकाना	10
4	धौलादेवी	बमनस्वाल	10
5	भैंसियाछाना	छानी	10
कुल			**80**

स्रोत : कृषि विभाग, अल्मोड़ा

तालिका 4.11: गतिविधियों के आधार पर प्रति किसान आय (रू0 हज़ार में)

क्रं.स.	चयनित विकासखण्ड	क्लस्टर का नाम	वर्ष (2017–18)			
			कृषि	बागवानी	पषुधन	कुल
1	हवालबाग	फलसीमा	0.085	0.07825	0.05688	**0.22013**
2	ताकुला	बसोली	0.1433	0.08025	0.1129	**0.33645**
		अमखोली	0.12175	0.08825	0.1035	**0.3135**
3	ताड़ीखेत	तिपोला	0.10531	0.0985	0.14262	**0.34643**
4	स्याल्दे	बारंगल	0.0067	0.11175	0.11598	**0.23443**
		सराईखेत	0	0.117	0.1425	**0.2595**
5	धौलादेवी	आरासल्पड	0.08675	0.10625	0.16672	**0.35972**
6	लमगड़ा	मोतियापाथर	0.20025	0.1375	0.10504	**0.44279**

7	भैंसियाछाना	भैंसियाछाना	0.08183	0	0.13938	**0.22121**
8	द्वाराहाट	द्वाराहाट	0.14733	0.10325	0.16552	**0.4161**
9	सल्ट	भौनखाल	0	0.11425	0.15225	**0.2665**
		कुड़ीधार	0	0.10625	0.07036	**0.17661**
10	चौखुटिया	वेतनधार	0.14	0.14	0.1361	**0.4161**
		आदिग्राम फुलोड़िया	0.15	0.09325	0.18785	**0.4311**
11	भिकियासैंण	सिनौडा	0.02858	0.10375	0.23451	**0.36684**
कुल			**1.2968**	**1.4785**	**2.03211**	**4.80741**

मोबाइल एग्री–क्लिनिक वैन

यह एग्री–क्लिनिक वैन अक्टूबर 2018 में आरम्भ की गई है, जो कि विभिन्न सरकारी लाइन विभागों जैसे कृषि, बागवानी, पशुपालन आदि से लाभ और संबंधित सूचनाओं को घर–घर तक उपलब्ध कराना है एवं कृषि उत्पादन को बाज़ार तक पहुँचाना है। यह वैन एक माध्यम के रूप में सरकार की नयी योजनाओं और जागरूकता सम्बन्धी विस्तार सेवाओं के लिए भी इस्तेमाल की जाती है। यह पहल किसानों और ग्रामीण जनता के लिए समग्र विकास के लिए एक अच्छी पहल है।

इस योजना को वर्ष 2018–19 से वर्ष 2021–22 तक 3 साल के लिए प्रस्तावित किया गया है। NMAET, जिला योजना, कृषि विभाग, युवा कल्याण विभाग और पी.आर.डी. के माध्यम से वित्तीय रूप से स्थापित है। राज्य के अन्य पहाड़ी जनपदों में भी ऐसी ही पहल की जाने की आवश्यकता है।

स्रोत : कृषि विभाग, अल्मोड़ा

4.4 बागवानी

तालिका 4.12: उत्तर–पूर्व एवं हिमालयी राज्यों के लिए बागवानी मिषन

विकासखण्ड	वित्तीय वर्ष (2015–16)		वित्तीय वर्ष (2016–17)		वित्तीय वर्ष (2017–18)	
	स्वीकृत धनराशि	व्यय धनराशि	स्वीकृत धनराशि	व्यय धनराशि	स्वीकृत धनराशि	व्यय धनराशि
हवालबाग	3.9065	3.9065	6.0502	6.0502	4.8891	4.8891
धौलादेवी	8.639	8.639	7.976	7.976	19.5802	19.5802
भैंसियाछाना	2.28707	2.28707	1.937	1.937	2.6793	2.6793
द्वाराहाट	5.6255	5.6255	4.1985	4.1985	2.4226	2.4226
चौखुटिया	5.5665	5.5665	2.2056	2.2056	3.6331	3.6331
भिकियासैंण	3.2465	3.2465	3.214	3.214	1.9127	1.9127
स्याल्दे	3.7365	3.7365	11.0835	11.0835	4.6836	4.6836
सल्ट	7.27201	7.27201	12.716	12.716	11.4625	11.4625

लमगड़ा	4.539	4.539	3.4333	3.4333	3.6257	3.6257
ताड़ीखेत	8.348	8.348	15.3309	15.3309	4.999	4.999
ताकुला	3.699	3.699	3.4125	3.4125	2.06498	2.06498
कुल	**56.87**	**56.87**	**71.56**	**71.56**	**61.95**	**61.95**

स्रोत : उद्यान विभाग, अल्मोड़ा

तालिका 4.13: जनपद अल्मोड़ा में विभिन्न बागवानी योजनाओं पर खर्च धनराशि			
विकासखण्ड	**वर्ष (2015–16)**	**वर्ष (2016–17)**	**वर्ष (2017–18)**
	खर्च धनराषि	**खर्च धनराषि**	**खर्च धनराषि**
हवालबाग	6.62	4.842	7.989
धौलादेवी	4.052	1.917	5.705
भैंसियाछाना	2.065	1.464	2.973
द्वाराहाट	5.82	7.098	4.521
चौखुटिया	3.202	4.406	3.968
भिकियासैंण	2.639	1.749	3.939
स्याल्दे	3.086	3.055	3.903
सल्ट	3.194	4.737	4.169
लमगड़ा	3.532	1.905	5.465
ताड़ीखेत	9.11	6.527	8.15
ताकुला	2.585	3.3	2.148
कुल	**45.905**	**41**	**52.93**

स्रोत : उद्यान विभाग, अल्मोड़ा

तालिका 4.14 : जनपद अल्मोड़ा में बागवानी विभाग की योजनाएं				
क्रं.स.	**जिला स्तरीय योजनाएं (2017–18)**	**व्यय (लाख में)**	**इकाई**	**आंकड़े**
1	अनुसूचित जाति की आबादी वाले क्षेत्र में बागवानी विकास	2.513	हे0	7
2	पॉली हाउस का निमार्ण (90% सब्सिडी) (30X11x9) फीट	24.183	सं0	475
3	प्लास्टिक क्रेट्स वितरण (50% सब्सिडी)	2.04	सं0	1673
4	फल एवं सब्जी प्रसंस्करण पर प्रशिक्षण (महिलाएं)	0.401	सं0	176
5	कीटनाशक वितरण (60% सब्सिडी)	3.399	हे0	1404
6	कुरमूला कीट नियंत्रण (75% सब्सिडी)	2.725	हे0	507
7	बागवानी संबन्धित उपाय (50% सब्सिडी)	4.905	सं0	741
8	बागवानी निवेश पर माल ढुलाई प्रभार (100% सब्सिडी)	12.764	--	--

स्रोत : उद्यान विभाग, अल्मोड़ा

तालिका 4.15 : जनपद अल्मोड़ा में बागवानी विभाग की योजनाएं				
क्रं.स.	राज्य स्तरीय योजनाएं (2017–18)	व्यय (लाख में)	इकाई	आंकड़े
1	मौजूदा बागों की बाड़	2.75	हे0	2.75
2	पॉली हाउसों की चादरें बदलना	1.401	सं0	3733
3	फलों के पौधों का रोपण	2.75	सं0	11,835
4	बेमौसमी सब्जी उत्पादन	1.401	हे0	10
5	मसाला खेती के लिए अनुदान	1.837	क्विंटल	94.67
6	वर्मीकम्पोस्टिंग इकाईयों का निमार्ण	3	सं0	38
7	सेब मिशन	2.348	हे0	0
8	अखरोट एवं अन्य सूखे फलों का विकास	9.5	हे0	3
9	फल नर्सरी विकास	0	सं0	0
10	बागों का नवीनीकरण	0	हे0	0

स्रोत : उद्यान विभाग, अल्मोड़ा

4.1. औषधीय पौध इकाईः– बागवानी विभाग के अर्न्तगत यह इकाई सुगंधित और औषधीय पौधों को बढ़ावा दे रही है। यह इकाई औषधीय पौधों के प्रशिक्षण कार्यक्रमों, वितरण एवं रोपण तथा विपणन का काम भी करती है। ऐसे वृक्षारोपण के क्लस्टर को निम्न तालिका में दिखाया गया है। यह इकाई पहले 2007 तक सहकारी समिति का हिस्सा थी, जहां उनके पास PACS के माध्यम से ग्राम स्तरीय संग्रह और एकत्रीकरण किया जाता था। इन उत्पादों का विपणन सहकारी समितियो के माध्यम से किया जाता था, क्योंकि अब इस इकाई को बागवानी विभाग में मिला दिया गया है, जहां कर्मचारियों की बुनियादी कमी है जिस वजह से किसानों को परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

तालिका4.16: जनपद अल्मोड़ा में औषधीय पौध रोपण				
वर्ष	विकासखण्ड	कल्स्टर का नाम	गांव का नाम	पौध रोपण
2014–15	लमगड़ा	ढ़ेली	3	तेजपात
		कलतानी	3	तेजपात
	सल्ट	ढुंगामोहन	1	तेजपात
2015.–16	सल्ट	कोथलगांव	1	तेजपात
		कोटली तल्ली	1	तेजपात
		जाख कोटली	1	सर्पगन्धा
	भैंसियाछाना	उतिया	1	बड़ी इलाईची
	हवालबाग	थपलिया	1	तेजपात
2016–17	धौलादेवी	ध्याड़ी	5	तेजपात
		गरूड़ाबाज	4	तेजपात
		नैनी	1	तेजपात

		चेलचैना	3	तेजपात
	द्वाराहाट	ईड़ा	2	तेजपात
	लमगड़ा	फूटा	1	तेजपात
2017–18	भिकियासैंण	जीनापानी	5	तेजपात
	धौलादेवी	धासपड़	2	तेजपात
	स्याल्दे	ऐराड़ी बिष्ट	7	तेजपात
	भैंसियाछाना	खाकरी	1	तेजपात
		पल्यों	1	तेजपात
2018–19	ताकुला	निराई	1	तेजपात
	लमगड़ा	दोल	1	तेजपात
	सल्ट	तोल्यूं	1	तेजपात
		बाकुड़ मल्ला	1	तेजपात
	भैंसियाछाना	कुंज बरगाल	1	बड़ी इलाईची
	सल्ट	ढुंगामोहन	1	बड़ी इलाईची
		कोथलगांव	1	बड़ी इलाईची
		पीनाकोट	1	बड़ी इलाईची
	योग		**52**	

औषधीय पौधों का रोपण किसानों के खेतों में किया जाता है तथा उत्पाद को किसान अपनी स्वेच्छा से बेचता है। इस तरह की गतिविधियां अन्य ग्रामों तथा विकासखण्डों में भी शुरू किया जा सकता है।

5. पषुपालन विभागः–

पशुपालन विभाग के तहत जनपद में कई योजनाएं चल रही हैं। निम्न तालिका विभाग की विभिन्न योजनाओं के तहत लाभार्थियों की संख्या को प्रदर्शित करती है।

तालिका 4.17: जनपद अल्मोड़ा में पषुपालन विभाग के तहत योजनाएं

क्र.सं.	योजना का नाम	2015–16	2016–17	2017–18	2018–19
1.	दुधारू पशु (गाय)	46	35	59	**28**
2.	बकरी पालन	18	9	20	**19**
3.	अहिल्याबाई होल्कर बकरी पालन	9	12	18	**..**
4.	बकरी पालन (महिलाओं के लिए)	..	..	15	**..**
5.	मुर्गी पालन	1720	1019	1158	**1000**

स्रोत : पषुपालन विभाग, अल्मोड़ा

5.1. डेयरीः– पशुपालन कृषि के साथ–साथ आजीविका के सबसे महत्वपूर्ण स्रोतों में से एक है, लेकिन जनपद की आबादी का केवल 3.66% जनसंख्या ही उनके मुख्य व्यवसाय के रूप में डेयरी व्यवसाय से जुड़ी हुई है। निम्नलिखित तालिका जनपद में दुग्ध संगठनों की स्थिति को प्रदर्शित करती है।

तालिका 4.18: जनपद अल्मोड़ा में दुग्ध संगठन के आंकड़े					
क्र.सं.	विवरण	2015–16	2016–17	2017–18	2018–19
1	सामाजिक संघ	..	..	6	6
2	कार्यात्मक समाज	226	236	238	242
3	औसत दुग्ध उत्पादन (ली0)	10208	18607	12643	13500
4	मवेशी चारा बिक्री	297	840	871	890
5	प्राथमिक पशु चिकित्सालय	..	542	1068	1100
6	पशु चिकित्सा सेवायें	800	960	980	795
7	शुद्ध दुग्ध उत्पादन संगोष्ठी	..	..	25	13
8	दूध बेचने वाले व्यक्ति	4751	4431	5090	5640
9	गंगा–गाय	80	80	90	..

स्रोत : दुग्ध उत्पादक सहकारी समिति संघ लि0, अल्मोड़ा

तालिका 4.19: जनपद अल्मोड़ा में विकासखण्डवार दुग्ध संगठन				
क्र.सं.	विकासखण्ड	कुल गठित समाज	कार्यात्मक समाज	गैर–कार्यात्मक समाज
1	लमगड़ा	71	27	44
2	धौलादेवी	81	48	33
3	हवालबाग	51	24	27
4	ताड़ीखेत	72	58	14
5	भिकियासैंण	31	18	13
6	द्वाराहाट	41	34	7
7	चौखुटिया	25	19	6
8	सल्ट	52	23	29
9	स्याल्दे	2	0	2
10	भैंसियाछाना	13	2	11
11	ताकुला	2	0	2
कुल		**441**	**253**	**188**

स्रोतः दुग्ध उत्पादक सहकारी समिति संघ लि0, अल्मोड़

विकास खण्ड स्यालदे, भेसियाछाना तथा ताकुला पर अधिक ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता है।

4.6. मत्स्य पालन– जनपद अल्मोड़ा में मत्स्य पालन विभाग के तहत तीन योजनाएं कार्य कर रही है।

- कोल्डवाटर मत्स्य पालन विकास योजना
- अनुसूचित जाति के लिए मत्स्य पालन उप–योजना
- पहाड़ी क्षेत्रों के लिए मत्स्य तालाब योजना का निर्माण

तालिका 4.20: जनपद अल्मोड़ा में मत्स्य तालाबों की संख्या					
क्र.सं.	विकासखण्ड	मत्स्य तालाबों की संख्या			
		2015–16	2016–17	2017–18	2018–19
1	लमगड़ा	11	3	3	0
2	धौलादेवी	8	6	2	2
3	ताकुला	12	2	2	8
4	हवालबाग	5	6	3	5
5	चौखुटिया	17	0	1	5
6	द्वाराहाट	10	13	5	7
7	सल्ट	7	3	0	0
8	ताड़ीखेत	2	4	0	2
9	भिकियासैंण	4	2	1	1
कुल		**76**	**39**	**17**	**30**

स्रोत : मत्स्य विभाग, अल्मोड़ा

4.7. पर्यटन– पर्यटन विभाग के अर्न्तगत जिला योजना, राज्य और केन्द्र प्रायोजित योजनाओं के तहत विकास परियोजनांए हैं। विभाग की दो मुख्य योजनाएं होम स्टे स्कीम तथा वीर चन्द्र सिंह गढ़वाली स्वरोजगार योजनाएं है। ग्रामीणों द्वारा होमस्टे संचालन करना उनकी आय में वृद्वि कर रहा है। विकास खण्ड हवलबाग के कसार देवी क्षेत्र में जनपद के अधिकतम होमस्टे है। मुख्यतः पूर्व में संचालित गेस्टहाऊसो को ही होमस्टे में बदला गया है। होमस्टे संचालन ग्रामीणों का मुख्य व्यवसाय न होकर अतिरिक्त आय का साधन है। एक होमस्टे मालिक महीने में 4–5 अतिथियों से रू0 7000 से रू0 10000 तक की आमदनी करता है। वर्ष के मार्च–जून तथा दिसम्बर–फरवरी माहों में अतिथियों की अच्छी संख्या रहती है, अन्य माहों में ये संख्या न के बराबर होती है। होमस्टे मालिक अपनी इस अतिरिक्त आय से खुश है तथा सरकार से कुछ आशायें रखती है, जिन्हें आध्याय 5 में विस्तार से बताया गया है।

तालिका 4.21: अल्मोड़ा में होम स्टे की संख्या			
क्र.सं.	विकासखण्ड	होम स्टे की संख्या	होटलो की संख्या
1	हवालबाग	58	56
2	भैंसियाछाना	3	..
3	चौखुटिया	1	3
4	धौलादेवी	11	18
5	द्वाराहाट	9	3
6	सल्ट	5	16
7	ताकुला	10	16
8	ताड़ीखेत	10	29
9	भिकियासैंण	..	1
कुल		**107**	**142**

स्रोत : पर्यटन विभाग, अल्मोड़ा

भैंसियाछाना, चौखुटिया, सल्ट विकासखण्डों में बहुत कम या कोई भी होमस्टे नहीं है।

4.8. सम्भागीय परिवहन विभागः— परिवहन कार्यालय ने वर्ष 2017—18 में 209 सड़क परिवहन परमिट जारी किये गये हैं जो वर्तमान वित्तीय वर्ष में 381 हो गये है।

तालिका 4.22 : अल्मोड़ा में वर्षवार पंजीकृत वाहनों की संख्या					
वर्ष	माल वाहन	टैक्सी	मैक्सी	अन्य	कुल
2015—16	123	109	152	2595	2979
2016—17	106	133	134	1115	1488
2017—18	106	180	140	3422	3848
2018—19 (दिसम्बर-18)	101	138	86	2588	2913

स्रोत : संभागीय परिवहन विभाग, अल्मोड़ा

4.9. चाय विकास बोर्ड, अल्मोड़ाः—उत्तराखण्ड चाय विकास बोर्ड अल्मोड़ा द्वारा धौलादेवी, ताकुला और चौखुटिया तीन विकासखण्ड में चाय के बागान स्थापित किये गये हैं।

तालिका 4.23 : चाय विकास बोर्ड के तहत रोजगार				
वर्ष	चाय क्षेत्र	कुल व्यय	रोजगार	लाभान्वित परिवार
2015—16	54	96.44	422	104
2016—17	66	96.96	343	141
2017—18	82	100.55	458	175
2018—19	104	81.09	454	214
कुल	**306**	**375.04**	**1677**	**634**

स्रोत : उत्तराखण्ड चाय विकास बोर्ड, अल्मोड़ा

जनपद अल्मोड़ा में चाय बोर्ड द्वारा चाय बागान के लिए विकासखण्ड़ भैसियाछाना, भैकियासैंण, लमगड़ा और स्याल्दे में अन्य स्थानों की पहचान की गई है। अभी तक का उत्पादन काफी कम होने के कारण जनपद में प्रसंस्करण केन्द्र/संयत्र की अनुपलब्धता थी जिस कारण वर्तमान उत्पादन को प्रसंस्करण के लिए बागेश्वर जनपद के कौशानी स्थित कारखाने में भेजा जाता है। आने वाले वर्षों में विकासखण्ड़ धौलादेवी में एक चाय फैक्ट्री स्थापित करने का प्रस्ताव है जिससे जनपद में टी—टूरिज्म को भी बढ़ावा मिलेगा।

सन्दर्भः–

- https://almora.nic.in/
- Department of Rural Development, Almora, Uttarakhand
- Department of Agriculture, Almora, Uttarakhand
- www.nrlm.gov.in
- Department of Horticulture, Almora, Uttarakhand
- Department of Tourism, Almora, Uttarakhand
- Ministry of MSME, GoI
- District Industries Center, Almora, Uttarakhand
- RTO, Almora, Uttarakhand
- District Khadi Udhyog Department, Almora, Uttarakhand
- River View Factory, Almora, Uttarakhand
- Uttarakhand Tea Development Board, Almora, Uttarakhand
- Department of Animal Husbandry, Almora, Uttarakhand
- Department of Fisheries, Almora, Uttarakhand
- Home stay owners in District Almora

अध्याय V

विष्लेशण और सिफारिषें

राज्य के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का लगभग 5.57% का हिस्सा जनपद अल्मोड़ा का है। 2011 की जनगणना के अनुसार जनपद की कुल जनसंख्या 6,22,506 है, जिसमें पुरूष जनसंख्या 2,91,081 और महिला जनसंख्या 3,31,425 है। इस जनपद की आबादी, राज्य की आबादी का लगभग 6.15% है और इस आबादी का 90% से अधिक ग्रामीण क्षेत्रों में रहता है, हालांकि जनपद की जनसंख्या वृद्धि दर –1.64% है, लेकिन ग्रामीण आबादी के लिए यह वृद्धि दर –4.20% है जो स्पष्ट रूप से यह दर्शाता है कि ग्रामीण आबादी शहरी केन्द्रों की ओर पलायन कर रही है।

2001 से 2011 के बीच ग्रामीण आबादी में परिर्वतन की दर विकासखण्ड़ भिक्यिासैंण में –21.78%, स्यालदे में –9.17%, सल्ट –8.86% और चौखुटिया –6.08% ऋणात्मक रही है, दूसरी ओर लमगडा विकासखण्ड़ में ग्रामीण आबादी का परिवर्तन दर 10.18% था, इस अवधि के दौरान जनपद की शहरी आबादी में लगभग 25% की वृद्धि देखी गई है।

20 से 49 वर्ष का आयु समूह कुल जनसंख्या का लगभग 38% है, जो कि कामकाजी आबादी है और राज्य, देश, विदेश के शहरी केन्द्रों में आजीविका, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि में बेहतर अवसरों के लिए पलायन कर रही है। 20 वर्ष से कम आयु वर्ग की आबादी, कुल आबादी का 41.42% है और वर्तमान सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों में सुधार न होने पर, निकट भविष्य में जनपद से प्रवासियों की आने वाली पीढ़ी है।

अल्मोड़ा एक पूरी तरह से पहाड़ी जनपद है, जहां अर्थव्यवस्था का अधिकांश हिस्सा पारंपरिक कृषि, बागवानी, पशुधन पर निर्भर करता है। मौजूदा कीमतों पर अर्थव्यवस्था का आकार यानी GDDP वर्ष 2011–12 में रू0 4,28,018 लाख, वर्ष 2012–13 में रू0 4,90,303 लाख, वर्ष 2013–14 में रू0 5,63,108 लाख अनुमानित हैं। वर्ष 2014–15 में 5,58,426 लाख, वर्ष 2015–16 के लिए रू0 5,98,345 लाख और वर्ष 2016–17 के लिए रू0 6,60,378 लाख है। प्रतिशत वृद्धि के संदर्भ में अर्थव्यवस्था का आकार वर्ष 2012–13 में 14.55%, वर्ष 2013–14 में 14.85%, वर्ष 2014–15 में –0.83%, वर्ष 2015–16 में 7.15%, और वर्ष 2016–17 में 10.37% क्रमशः पिछले वर्ष के सम्बन्ध में बढ़ा है। अर्थव्यवस्था की वृद्धि अर्थात GDDP स्थिर कीमतों पर वर्ष 2011–12 में रू0 4,28,018 लाख, वर्ष 2012–13 में रू0 4,58,385 लाख, वर्ष 2013–14 में रू0 5,06,155 लाख, वर्ष 2014–15 में 4,88,369 लाख, वर्ष 2015–16 के लिए रू0 5,11,911 लाख और वर्ष 2016–17 के लिए रू0 5,45,139 लाख है। प्रतिशत वृद्धि के संदर्भ में, GDDP स्थिर मूल्य पर वर्ष 2012–13 में 7.09%, वर्ष 2013–14 में 10.42%, वर्ष 2015–15 में 14.5%, वर्ष 2015–16 में 4.82% और पिछले वर्ष के सम्बन्ध में क्रमशः 2016–17 में 6.49% की वृद्धि दर्ज की गई, 2016–17 में राज्य का औसत GDDP 7.9% है

HDR 2018 में बताया गया है कि जनपद में गरीबी रेखा से नीचे की आबादी 30.70% है, जबकि राज्य का औसत 15.60% है।

अल्मोड़ा जनपद की प्रति व्यक्ति आय वर्ष 2011–12 में रू0 60,550, वर्ष 2012–13 में रू0 70,056, वर्ष 2013–14 में रू0 79,866, वर्ष 2014–15 में रू0 80,512, वर्ष 2015–16 में रू0 86,961, जो 206–17 के लिए रू0 96,786 है। प्रतिशत वृद्धि के संदर्भ में वर्तमान मूल्य पर प्रति व्यक्ति NDDP वर्ष 2012–13 में 15. 70%, वर्ष 2013–14 में 14.00%, वर्ष 2014–15 में 0.81%, और पिछले वर्ष के सम्बन्ध में प्रति व्यक्ति आय में क्रमशः वर्ष 2015–16 में 8.01% एवं वर्ष 2016–17 में 11.30% वृद्धि हुई है। 2016–17 के लिए जनपद की प्रति व्यक्ति आय रू0 96,786 है जबकि हरिद्वार के लिए यह रू0 2,54,050 है यानी जनपद अल्मोड़ा से 2.5 गुना अधिक हैं।

जनपद की साक्षरता दर 80.47% है, जिसमें पुरूष और महिला साक्षरता क्रमशः 92.86% और 69.93% है। जनपद के विकासखण्ड हवालबाग और ताड़ीखेत में साक्षरता दर क्रमशः 83.69% और 83.36% सबसे अधिक है। विकासखण्ड ताड़ीखेत और हवालबाग में कोई पॉलिटेक्निक संस्थान नहीं है। विकासखण्ड स्यालदे और चौखुटिया में पॉलिटेक्निक संस्थान हैं, लेकिन छात्रों की अनुपलब्धता होने के कारण गैर–कार्यात्मक हैं। सम्पूर्ण जनपद में 748 पॉलिटेक्निक सीटों में से केवल 441 सीटों पर ही छात्र हैं, अर्थात् 58.95% की प्रवेश हुए। आईटीआई के लिए भी 1764 सीटों में से केवल 856 सीटों पर ही प्रवेश हुए, अर्थात् 48.52% छात्रों द्वारा ही प्रवेश लिया गया। ये संस्थान छात्र संख्या की दृष्टि से अपनी क्षमता एवं दक्षता के अनुरूप कार्य करने में असमर्थ हो रहे हैं।

पिछलों 10 वर्षों में 1022 ग्राम पंचायतों के कुल 53,611 लोग अर्ध–स्थाई आधार पर पलायन कर चुके हैं, हालांकि वे समय–समय पर गांवों में अपने घरों में आते हैं और स्थाई रूप से पलायन नहीं करते हैं। पिछले 10 वर्षों में 646 ग्राम पंचायतों से 16,207 जनसंख्या ने स्थाई रूप से पलायन किया है। आंकड़ें बताते हैं कि राज्य के सभी जनपदों में स्थाई प्रवासियों की तुलना में अधिक अर्ध–स्थाई प्रवासी हैं। 42% से अधिक प्रवासियों की आयु 26 से 35 वर्ष के बीच है।

5.1 सामान्य सिफारिषें

5.1.1 ग्रामीण अर्थव्यवस्था में सुधारः–यह महसूस किया जाता है कि ग्रामीण क्षेत्रों से पलायन की समस्या का समाधान जनपद की ग्रामीण अर्थव्यवस्था, विशेषकर विकासखण्ड और ग्राम पंचायतों में सुधार में निहित है, जहां से पिछले वर्षों में अधिक लोग पलायन कर चुके हैं।

ग्रामों या ग्रामों के समूह के स्तर पर एक जीवंत अर्थव्यवस्था ग्राम पंचायत या ग्राम पंचायतों के समूह में सामाजिक–आर्थिक विकास के लिए एक नाभिक के रूप में कार्य करेगी। ग्रामीण आय को बढ़ावा देने के लिए प्रत्येक ग्राम पंचायतों या ग्राम पंचायतों के समूह की विशेषताओं का निर्माण किया जाना चाहिए। जनपद में ऐसे कई स्थान हैं जहां पर्यटन को बढ़ावा दिया जा सकता है, विशेष रूप से मौजूदा पर्यटन और धार्मिक स्थलों के पास।

अल्मोड़ा और रानीखेत जैसे शहरी केन्द्रों के पास ग्राम पंचायत या ग्राम पंचायतों का समूह स्थानीय लाभ उठा सकता है और आर्थिक विकास को बढ़ावा दे सकता है। अगले पाँच से दस वर्षों के लिए जनपद के विभिन्न हिस्सों में ग्राम या ग्राम पंचायत स्तर की अर्थ व्यवस्था को बढ़ावा देने के लिए रेखीय विभागों का ध्यान केन्द्रित किया जाना चाहिए, विशेष रूप से ग्राम पंचायतों में जहां से पलायन अधिक हुआ है। गांवों में रहने वाले स्थानीय समुदायों को भी स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने पर ध्यान देने की

आवश्यकता है जिससे अतिरिक्त आजीविका का सृजन होगा, इस प्रकार पलायन को कम करने में मद्द मिलेगी।

5.1.2. कृषि और गैर–कृषि आय पर ध्यान केन्द्रित करना :– जनपद के आर्थिक आंकड़ों का विश्लेषण स्पष्ट रूप से इंगित करता है कि पारंपरिक कृषि से किसान दूर हो रहे है। केवल कृषि और बागवानी पर ध्यान केन्द्रित करने के बजाय प्राथमिक, माध्यमिक और तृतीयक क्षेत्रों में ग्रामीण आय को बढ़ावा देने की आवश्यकता है। आंकड़ें बताते है कि जनपद की अर्थव्यवस्था में तृतीयक क्षेत्र का योगदान वर्षों से लगातार बढ़ रहा है। इसे आने वाले वर्षों में और बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

5.1.3. ग्राम विषिष्ट नियोजनः– ग्रामों के समूहों, जिनकी भूमि उपयोग, भौगोलिक परिस्थितियों, पलायन की स्थिति, वातावरण की परिस्थितियां, सड़क मार्ग की उपलब्धता, पीने और सिंचाई के पानी की उपलब्धता के सम्बन्ध में समान हों, की योजना तैयार की जानी चाहिए। विशेषज्ञों की देखरेख में विभिन्न रेखीय विभागों की एक टीम द्वारा योजनाएं तैयार करने की आवश्यकता हैं। सरकारी विभाग आर्थिक गतिविधियों को करने में इच्छुक व्यक्तियों को सहयोग प्रदान करें ताकि ग्रामीण सरकारी योजनाओं का लाभ उठा सकें, जिनके बारे में वे अक्सर जागरूक नहीं होते हैं।

ग्रामों के समूहों के लिए विशिष्ट योजनाएं तैयार की जा सकती हैं और राज्य या केन्द्र सरकारों द्वारा वित्तपोषण किया जा सकता है या बाहरी परियोजनाओं के माध्यम से भी मद्द ली जा सकती है।

5.1.4. बुनियादी सुविधाएं :– कई ग्राम पंचायतों में बुनियादी सुविधाओं की कमी की समस्या है, जिनमें पीने और सिंचाई दोनों के लिए पानी की समस्या शामिल है, स्वास्थ्य सेवायें, सड़क, गुणवत्ता शिक्षा आदि की कमी देखी गई है। विशेष रूप से ग्राम पंचायतों में विभिन्न योजनाओं से धनराशि प्राप्त कर इन पर ध्यान दिया जाना चाहिए, जहां से पलायन अधिक हुआ है।

5.1.5. जलवायु परिवर्तन के साथ सम्बन्ध :–जलवायु परिस्थितियों में बदलाव से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बड़े पैमाने पर प्रभावित करने की आशंका है, विशेष रूप से जनपद के उप–उष्णकटिबन्धीय भागों में। इससे फसल उत्पादन के तरीकों में बदलाव होगा, हालांकि पर्यटकों की आगमन में वृद्धि की भी उम्मीद की जा सकती है। ग्रामीण सामाजिक–अर्थव्यवस्था के विकास को जलवायु परिवर्तन के अपेक्षित प्रभावों को ध्यान में रखना चाहिए। इन्हें जलवायु परिवर्तन पर राज्य कार्य योजना में लाया जाना चाहिए।

5.1.6. कौषल विकास :– कौशल विकास कार्यक्रमों में उन कौशल को सुधारने पर ध्यान केन्द्रित किया जाना चाहिए जो स्थानीय आर्थिक आवश्यकताओं के अनुरूप हों। ये उन्नत कृषि प्रौद्योगिकियों पर हो सकते हैं, बेमौसमी फसलें, खाद्य/फल प्रसंस्करण, डेयरी, दुग्ध उत्पादों के प्रसंस्करण और पर्यटन आदि क्षेत्रों में जनपद में ग्रामीण सामाजिक–अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने की अपार सम्भावनाएं हैं। कौशल विकास कायक्रमों को सामान्य कौशल के बजाय, स्थानीय परिस्थितियों को ध्यान में रखना चाहिए।

5.1.7. अभिसरण :– सरकार के सभी कार्यक्रमों और योजनाओं को ग्राम स्तर की अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने पर ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता है। उन्हें इस आकस्मिक आवश्यकता को ध्यान में

रखते हुए अपने कार्यक्रमों को परिवर्तित करने की आवश्यकता है, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों से पलायन को कम किया जा सकें।

5.1.8. महिला केन्द्रित योजना :– उत्तराखण्ड में पहाड़ी जनपदों के सभी ग्रामीण क्षेत्रों में पुरूषों की तुलना में महिलाओं की आबादी अधिक है। कई ग्रामों में महिलाएं अपने घरों में पुरूषों का काम करती हैं। इसलिए यह ध्यान रखना जरूरी है कि महिलाएं ग्राम और ग्राम पंचायत स्तरों पर सामाजिक–अर्थव्यवस्था के विकास को बढ़ावा देने में एक प्रमुख भूमिका निभा सकती है। भूमि का स्वामित्व पुरूषों के पास है जबकि वास्तविक किसान महिलाएं हैं। पुरूष काम के लिए शहरों की ओर पलायन करते हैं जबकि महिलायें खेत में मजदूर के रूप में काम करती है। महिला किसानों को भी जमीन का हक देने वाली नीति होनी चाहिए। यह संस्थागत स्रोतों से कृषि ऋण जुटाने के लिए महिलाओं को सुनिश्चित करेगा। सामाजिक–आर्थिक विकास में महिलाओं को शामिल करने पर ध्यान देना चाहिए। यह उनके कठिन परिश्रम को कम करने में भी मद्द करेगा।

5.1.9. विकास केन्द्र :– उत्तराखण्ड सरकार ने हाल ही में विकास केन्द्रों की सुविधा के लिए एक प्रक्रिया अपनाई है। जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों की सामाजिक–अर्थव्यवस्था के विकास को इन केन्द्रों के साथ विकसित करने की आवश्यकता है। किसान उत्पादक संघठनों (FPOs) तथा किसान हित समूहों को बढ़ावा दिये जाने की ओर होना चाहिए, ताकि विपणन योग्य फसलों का उत्पादन किया जा सके और अतिरिक्त आय हो सके। किसानों के लिए मौसमी सब्जियों, फलों और अन्य कृषि उत्पादों का विपणन के लिए सिर्फ 3 घण्टे की दूरी पर निकटतम मण्डी और रेलवे स्टेशन है।

5.1.10. जिला नीति ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के लिए कार्यनिति और दृष्टिकोणः– जिला मजिस्ट्रेट और मुख्य विकास अधिकारी को जनपद की ग्रामीण अर्थवयवस्था को बढ़ावा देने के लिए कार्यवितियों की योजना बनाने और कार्यान्वित करने की अग्रणी भूमिका निभानी होगी। जिसमें ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बढ़ावा दिये जाने के लिए जिला नीति और रणनीति तैयार करनी चाहिए और इसे अगले 10 वर्षों में लागू करना चाहिए।

5.2 क्षेत्र विषेष सिफारिषें

5.2.1. ग्रामीण विकास :–

जनपद में ग्रामीण विकास में कई विभाग और योजनाएं शामिल हैं। ग्रामीण विकास विभाग की कई योजनाओं/कार्यक्रमों के माध्यम से ग्रामीण विकास किया जा रहा है। राज्य वन विभाग की देखरेख में जलागम निदेशालय और JICA वित्त पोषित परियोजना चलाई जा रही है। इनमें महात्मा गांधी ग्रामीण रोजगार गारण्टी अधिनियम (MGNREGA), ग्रामीण आजीविका (AJEEVIKA), प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना (PMGSY), प्रधानमंत्री आवास योजना (PMAY), एकीकृत जलग्रहण विकास परियोजना और JICA वित्त पोषित परियोजना है।

जनपद में कुल 983 स्वयं सहायता समूह स्थापित किये गये हैं, जिनमें से 428 नये SHGs हैं, 462 SHGs को पुनःनिर्मित किया गया है और 93 समूह NRLM से पहले के हैं। हालांकि स्वयं सहायता समूह का विकासखण्ड वार वितरण एक समान नहीं है क्योंकि जहां एक ओर विकासखण्ड़ ताकुला में 287 और लमगड़ा में 142 SHGs हैं वहीं दूसरी ओर विकासखण्ड़ सल्ट, स्याल्दे और भिकियासेंण में 44 SHGs हैं

जो कि बहुत कम हैं। विकासखण्ड़ सल्ट, भिकियासैंण, भैंसियाछाना, चौखुटिया और ताड़ीखेत में कोई भी नये SHGs नहीं हैं हालांकि इन्हें ग्राम्या के तहत कवर किया जा रहा है।

वर्ष 2017–18 के दौरान वर्ष 2016–17 में 11.77 लाख के मुकाबले मनरेगा के तहत उत्पन्न सृजित मानव दिवसों की संख्या 14.14 लाख हुई है। यह दर्शाता है कि मनरेगा पर ग्रामीण श्रम की निरन्तर निर्भरता है, क्योंकि 55% मानव दिवस महिला श्रमिकों के द्वारा उत्पन्न किया गया है।

जलागम विकास निदेशालय द्वारा किये गये ग्राम्या कार्यक्रम के तहत 63 कमजोर समूह वित्त पोषित किये गये, जिनमें से कलेक्शन/ग्रेडिंग/पैकेजिंग और टेण्ट मेकिंग सबसे पंसदीदा गतिविधियां हैं।

जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक–आर्थिक विकास के लिए अग्रणी विकास को मजबूत करने के लिए निम्नलिखित सिफारिषें की गई हैं :–

अ. वे विकासखण्ड जहां ग्रामीण विकास के लिए योजनाओं में अपेक्षाकृत कम प्रगति है और उन पर ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता है। इसमें विकासखण्ड सल्ट, स्याल्दे, भिकियासैंण और भैंसियाछाना शामिल हैं।

ब. स्वयं सहायता समूह की संख्या को विकासखण्ड़ ताकुला में काफी हद तक बढ़ाया जा सकता है क्योंकि यह गतिविधि स्थानीय सामाजिक–अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने में मदद करती है। यह महिलाओं पर भी ध्यान केन्द्रित करता है क्योंकि मनरेगा के आंकड़ों से पता चलता है कि लगभग 55 प्रतिशत मानव दिवस महिलाओं द्वारा सृजन किये जाते हैं।

स. लमगड़ा विकासखण्ड़ के कुछ स्वयं सहायता समूह द्वारा टेक होम राशन का कार्य पूर्ण सफलता के साथ किया जा रहा है। यह जनपद स्तर पर दोहराया जा सकता है और यदि सफल होता है, तो राज्य के अन्य हिस्सों में भी लागू किया जा सकता है।

द. मनरेगा में स्थानीय श्रम के लिए स्वरोजगार पैदा करने पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।

य. ग्राम्या के तहत कमजोर समूहों के कवरेज को भी 63 के वर्तमान स्तर से बढ़ाया जाना चाहिए, क्योंकि यह हस्तक्षेप आर्थिक रूप से गरीब समूहों का समर्थन कर रहा है।

र. आजीविका पैदा करने पर आधारित योजनाओं को प्रत्येक विकासखण्ड और उप योजनाओं को पंचायत स्तर के लिए तैयार किया जाना चाहिए। इन योजनाओं का कार्यान्वयन ग्रामीण विकास और अन्य विभागों की मौजूदा योजनाओं के माध्यम से किया जा सकता है।

ल. ग्रामीण विकास विभाग में फील्ड स्टाफ की कमी है और कुछ ग्राम विकास अधिकारियों पर 25 से अधिक ग्राम पंचायतों के कार्यभार की जिम्मेदारी हैं, जिनमें से कई दूरस्थ और कठिन हैं। इस मुद्दे पर शीघ्र ध्यान देने की जरूरत है।

5.2.2. कृषि

कृषि जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों का मुख्य व्यवसाय है, हालांकि GSDP में इसका योगदान 2011–12 में 31% से घटकर 2016–17 में 21% हो गया है। 3,139 वर्ग किमी के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल में से केवल 17.11% खेती योग्य भूमि है। मंडुआ, धान, गेहूं, दलहन, तिलहन आदि प्रमुख फसलों की खेती जनपद में की जाती है। द्वाराहाट, चौखुटिया और ताकुला की सेरा (घाटियां) बहुत उपजाऊ हैं और अच्छी पैदावार एवं उत्पादन का क्षेत्र है। इन विकासखण्डों के किसानों को बीज उत्पादन के लिए बढ़ावा दिया जाना चाहिए, जिसका बाजार मूल्य बेहतर है।

75% अधिक किसान सीमांत किसान हैं, जिनके पास 1.00 हैक्टेयर से कम भूमि है और 95% से अधिक भूमि जोत 2.00 हेक्टेयर से कम हैं। इसके अलावा बड़ी भूमि जोत, अर्थात 2.00 हैक्टेयर से अधिक, कम हो रहे हैं और छोटे भूमि जोतो के, लोगों में वितरित हो रहे हैं।

पहाड़ी इलाकों के कारण बड़े पैमाने पर सिंचाई सम्भव नहीं है, लेकिन फिर भी नदियों से नहरों को जोड़कर जनपदों के घाटी वाले इलाकों में सिंचाई की जा रही है। जनपद में केवल 5751.00 हेक्टेयर क्षेत्रफल सिंचाई के अधीन है। कृषि की निर्भारता अधिकतर वर्षा पर है। पानी की कमी के अलावा, किसानों को जंगली जानवरों जैसे बंदर, जंगली सूअर आदि की समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। जिसके परिणाम स्वरूप जनपद के किसानों के बीच कृषि में निराशाजनक रूचि है।

गेहूं और मंडुआ जैसी फसलों की खेती के तहत सबसे बड़ा क्षेत्रफल है, अर्थात क्रमशः 33% और 31%। इसके बाद धान 16% है। तिलहन में सोयाबीन, सरसों और तिल की फसलें होती हैं। सल्ट और द्वाराहाट में अन्य विकासखण्ड़ों की तुलना में विभिन्न फसलों का काफी बड़ा क्षेत्रफल है।

जनपद में शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल 2013–14, 2014–15 और 2015–16 में लगभग 78,000 हेक्टेयर पर स्थिर बना हुआ है। इस अवधि में सकल बोया गया क्षेत्रफल भी 1,11,500 हेक्टेयर पर ही स्थिर बना हुआ है। इस अवधि के दौरान धान का क्षेत्रफल 15597 हेक्टेयर से बढ़कर 17526 हेक्टेयर हो गया है। जौ का क्षेत्रफल 2490 से 2790 हेक्टेयर, जबकि गेंहू का क्षेत्रफल समान रहा है, और आलू का क्षेत्रफल कम हो गया है, हालांकि धान और गेहूं की उत्पाकदता में कमी आई है।

लमगड़ा जैसे विकासखण्ड़ों में किसानों द्वारा पर्याप्त बड़े पैमाने पर सब्जियां उगाई जा रही है और बाजार व्यवस्था विकसित करने की आवश्यकता है। वर्तमान में उत्पादित अधिकांश सब्जी को हल्द्वानी की मण्डियों में ले जाया जा रहा है, जहां से इसे नैनीताल और अल्मोड़ा जैसे उपभोग केन्द्रों में वापस लाया जाता है। इस प्रकार, उम्पादक अपनी उपज के लिए पर्याप्त पारिश्रमिक प्राप्त करने में सक्षम नहीं हैं।

जनपद में कृषि क्षेत्र में विकास को बढ़ावा देने के लिए निम्नलिखित सिफारिशें की गई हैंः–

अ. किसानों के समूहों को आलू सहित अन्य सब्जियों को उगाने हेतु प्रोत्साहित कर उन्हें सामूहिक रूप से पर्याप्त मात्रा में उत्पादन करना होगा क्योंकि इससे उनकी उपज का विपणन करने में मदद मिलेगी, और पर्याप्त बाजार के रूप में आगे बढ़ने का रास्ता होगा।

ब. कृषि–प्रसंस्करण सुविधाओं की संख्या में कमी है और दालों के लिए कोई प्रसंस्करण सुविधा नहीं है। दालों और कृषि उत्पादों के लिए प्रसंस्करण इकाइयों को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है।

कृषि विभाग को जनपद के सभी ग्राम पंचायतों में कृषि फसलों के उत्पादन का एक व्यापक सर्वेक्षण करने और उत्पादन के प्रामाणिक आंकड़ों के साथ आगे आने की जरूरत है, ताकि सम्भावित निवेशकों को कृषि–उत्पादों की मात्रा पता चल सके।

स. ताकुला/सोमेश्वर के इलाको में आलू के लिए प्रसंस्करण इकाइयां स्थापित की जा सकती हैं।

द. जनपद के पांच विकासखण्ड़ों में ग्राम्या परियोजना के तहत किसान हित समूहों के माध्यम से बीज उत्पादक समूहों का गठन किया गया है। इस गतिविधि में अतिरिक्त आय उत्पन्न करने की क्षमता है और जनपद के सभी विकासखण्डों में इसे बढ़ाने की आवश्यकता है।

य. विपणन तरीकों का विश्लेषण प्रत्येक विकासखण्ड में किया जाना चाहिए, विशेष रूप से पारंपरिक के साथ–साथ नकदी फसलों के सम्बन्ध में और विपणन पैटर्न को सुव्यवस्थित करने से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने में मदद मिलेगी।

र. जनपद के कृषि विभाग ने कृषि, बागवानी और पशुपालन से सम्बन्धित विभिन्न विस्तार सेवाओं के लिए मोबाइल एग्री–क्लिनिक वैन सेवा प्रारम्भ की है। यह जनपद के प्रत्येक विकासखण्डों में विस्तृत होनी चाहिए।

ल. राज्य में कृषि विभाग में फील्ड कर्मचारियों की कमी है। यह स्पष्ट रूप से कृषि के विकास में बाधा है। मौजूदा रिक्तियों में कर्मचारियों को शीघ्र भरे जाने के लिए प्रयास किये जाने की आवश्यकता है।

5.2.3. उद्यान

अल्मोड़ा एक पहाड़ी जनपद है, फल और सब्जियों के लिए अनुकूल जलवायु है, लगभग 24,174 हेक्टेयर क्षेत्रफल उद्यान के अर्न्तगत है। फलों में प्रमुख बागवानी फसलें हैं सेब, नाशपाती, आड़ू, पुलम, खुमानी, अखरोट, आम और नीबू जबकि सब्जियों में मटर, बीन्स, गोभी, भिण्ड़ी, टमाटर आदि प्रमुख फसलें हैं। जनपद के तीन बागानों में से द्वाराहाट में एक बागान है तथा बाकी दो धौलादेवी में हैं। अन्य विकासखण्डों में एक भी बागान नहीं है। ताड़ीखेत में दो फल–प्रसंस्करण इकाइयां हैं और विकासखण्ड़ भिकियासैंण, द्वाराहाट, ताकुला और हवालबाग में एक–एक है। उद्यानीकरण में निरन्तर कमी हो रही है।

आंकड़ों से पता चलता है कि आम और खट्टे फलों की खेती के तहत अधिकतम क्षेत्रफल है, जबकि नाशपाती का खट्टे फलों के बाद अधिकतम उत्पादन होता है। जनपद के अर्न्तगत विकासखण्ड़ हवालबाग में केवल एक कोल्ड स्टोरेज है जो कार्यात्मक नहीं है।

अल्मोड़ा जनपद में बागवानी क्षेत्र को मजबूत करने के लिए निम्नलिखित सिफारिषें की गई हैं:–

अ. बागवानी के तहत सेब, नाशपाती, आड़ू, पुलम, खुबानी, अखरोट, नीबू और आम जैसे मुख्य फलों का क्षेत्रफल एवं उत्पादन वर्ष 2014–15, 2015–16 और 2016–17 में लगभग स्थिर रहा है। फलों के क्षेत्रफल को बढ़ाने की आवश्यकता है क्योंकि इसमें स्याल्दे, भिकियासैंण और सल्ट जैसे कई विकासखण्ड़ों में खेती योग्य भूमि के बड़े हिस्से उपलब्ध हैं।

ब. जनपद में फल नर्सरियों की संख्या केवल (वर्ष 2016–17) 8 है, जो स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि जनपद के बाहर से फल रोपण सामाग्री आ रही है। स्थानीय उद्यमियों को गुणवत्तापूर्ण रोपण सामाग्री के उत्पादन हेतु निजी नर्सरी स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है, क्योंकि इससे आजीविका उत्पन्न करने में मदद मिलेगी।

स. फल प्रसंस्करण इकाइयों की संख्या केवल (वर्ष 2016–17) 6 है और यह 2014–15 के बाद से पिछले तीन वर्षों से निरन्तर बनी हुई है। अलग–अलग मौसम में फलों की उपलब्धता के आधार पर प्रसंस्करण इकाइयों को स्थापित करने के लिए निजी उद्यमियों को प्रोत्साहित किया जा सकता है।

द. सब्जियों के लिए छोटे पॉली–हाउस ज्यादा लोकप्रिय हैं और इनकी संख्या बढ़ाने की आवश्यकता है।

य. उद्यान विभाग को मौजूदा फल उत्पादन को ध्यान में रखते हुए जनपद के लिए एक बागवानी विकास योजना तैयार करने की आवश्यकता है, जो गुणवत्ता (प्रजातियों सहित), विपणन तथा खामियों को इंगित करती हो। प्रत्येक विकासखण्ड में उन्नत बागवानी के विकास को ध्यान में रखना चाहिए, जो गुणवत्ता वाले रोपण सामाग्री से लेकर प्रसंस्करण और विपणन के उपयुक्त पैकेजों के लिए सही किस्म/प्रजातियों जैसे सभी पहलुओं को ध्यान में रखा जाना चाहिए।

5.2.4. औषधीय और सुगंधित पौधे :–

औषधीय और सुगंधित पौध रोपण को (MAP) उद्यान विभाग के माध्यम से बढ़ावा दिया जा रहा है, जिसमें सामूहिक रूप से वृक्षारोपण शामिल है, आवश्यकतानुसार प्रसंस्करण और प्रशिक्षण कार्यक्रम किये जा रहें है। ऐसे क्लस्टर लगभग 6 विकासखण्ड़ों में 52 गांवों को आच्छादित करता है और वर्ष 2000 से जनपद में गतिविधि चल रही है।

इस क्षेत्र को मजबूत करने के लिए निम्नलिखित सिफारिषें की जा रही हैं, जो ग्रामीण सामाजिक–अर्थव्यवस्था को बढ़ाने में योगदान कर सकती हैं, जिससे पलायन को कम किया जा सकता है :–

अ. MAP प्रजातियों की विविधता आसानी से बढ़ाई जा सकती है क्योंकि वर्तमान में फोकस केवल तेजपत्ता, सर्पगन्धा और बड़ी इलाची पर है। ग्रामीण परिवारों के लिए अतिरिक्त आय उत्पन्न करने के लिए प्रजातियों में विविधता और गांवों/क्लस्टरों की संख्या में पर्याप्त वृद्दि की जरूरत है।

ब. MAP को बढ़ावा देने हेतु सभी विकासखण्डों में ध्यान केन्द्रित करना चाहिए क्योंकि वर्तमान में यह गतिविधि मात्र 6 विकासखण्ड़ों के कुछ ही क्षेत्रों में चल रही है। यह गतिविधि आयुर्वेद उद्योग के लिए कच्चे माल का उत्पादन कर समुदाय के कल्याण में भी योगदान करेगी।

स. यह गतिविधि उद्यान विभाग के साथ होने के बजाय राज्य औषधीय पादप बोर्ड जैसी एक अलग एजेंसी के माध्यम से बेहतर चलाई जा सकती है, जहां यह गतिविधि उद्यान विभाग द्वारा लागू किए जाने वाले कई अन्य कार्यक्रमों के कारण ध्यान खो देती है।

5.2.5. डेयरी और पषुपालन :–

पशपालन जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के लिए अतिरिक्त आय का एक प्रमुख स्रोत है। वर्ष 2003 और वर्ष 2012 के बीच गाय, भैंस और भेड़ की संख्याओं में कमी आई है जबकि बकरियों, घोड़ों/टट्टू, सूअर और मुर्गियों की संख्या में वृद्धि हुई है। ताड़ीखेत, सल्ट, हवालबाग, धौलादेवी और भैसियाछाना जैसे विकासखण्ड़ों में बकरियों और मुर्गियों की संख्या अधिक है। यह इंगित करता है कि इन विकासखण्ड़ों और आसपास के शहरी क्षेत्रों में मांस और अण्डे की अधिक खपत है।

हवालबाग विकासखण्ड़ में 1000 चूजे के क्षमता वाला एक पोल्ट्री इकाई है। अल्मोड़ा में एक मिल्क यूनियन फेडरेशन है, जिसका प्रति दिन 20,500 लीटर दुग्ध का संग्रह है। महासंघ के पास 15,832 दुग्ध उत्पादकों के साथ 240 दुग्ध सोसायटियां हैं। वे दूध बेचकर अतिरिक्त आय अर्जित करते हैं। ऐसी डेयरियां भी हैं जो दूध का उत्पादन करती हैं और रानीखेत और अल्मोड़ा जैसे निकटतम शहरों में बेचती हैं।

जनपद में डेयरी और पषुपालन को बढ़ाने के लिए सिफारिषें हैं :–

अ. अधिकांश परिवारों के लिए दुग्ध उत्पादन आय का एक अतिरिक्त स्रोत है, हालांकि इसके लिए अधिक से अधिक परिवारों के लिए आय का मुख्य स्रोत बनना सम्भव तभी है जब पशुधन की गुणवत्ता में सुधार किया जाय। सभी विकासखण्ड़ों में कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र खोले जाने की आवश्यकता हैं।

ब. बेहतर लााभ के लिए दुग्ध उत्पादकों को उनकी उपज के प्रसंस्करण में पनीर, घी आदि का प्रशिक्षण दिया जा सकता है।

स. कई ग्राम पंचायतों में बकरी पालन और मुर्गीपालन किया जा सकता है। बकरियों की नस्ल को जनपद भर में सुधारने की आवश्यकता है क्योंकि इस गतिविधि में आय में काफी वृद्धि करने की क्षमता है।

द. इस विभाग को भी कर्मचारियों की कमी का सामना करना पड़ रहा है।

5.2.6. चाय :–

जनपद के मात्र तीन विकासखण्डों में उत्तराखण्ड चाय बोर्ड के चाय बागान हैं जो धौला देवी, ताकुला और चौखुटिया में कुल 306 हेक्टेयर क्षेत्रफल को आच्छादित करते हैं और लगभग 1677 व्यक्तियों को रोजगार प्रदान करते हैं। चाय बागान के लिए जनपद अल्मोड़ा में चाय बोर्ड द्वारा अन्य स्थानों की पहचान विकासखण्ड भैसियाछाना, भिकियासैंण, हवालबाग, लमगड़ा और स्याल्दे में की गई है। अब तक कुल उत्पादन कम है और जनपद में प्रसंस्करण केन्द्र/संयंत्र की अनुपलब्धता के कारण वर्तमान उत्पादन को कौसानी (बागेश्वर) कारखाने में प्रसंस्करण के लिए भेजा जा रहा है। आने वाले वर्षों में विकासखण्ड धौलादेवी में एक चाय फैक्ट्री स्थापित करने का प्रस्ताव है और इस तरह से टी टूरिज्म को भी बढ़ावा मिलेगा।

चाय बागानों की स्थापना स्थानीय किसानों से लीज पर ली गई भूमि पर की जाती है, जिसमें लीज किराया 7 से 8 वर्ष के बाद देय होता है।

इस क्षेत्र को मजबूत करने की सिफारिषें हैं :–

अ. चाय बागानों के अन्तर्गत क्षेत्र को बढ़ाने की आवश्यकता है।

ब. लीज किराये का भुगतान किसानों को शुरूआती वर्षों में भी देय हो, जब चाय बोर्ड को लाभ न हो रहा हा।

स. कर्मचारियों की भारी कमी है, इसे मजबूत करने की आवश्यकता है।

5.2.7. पर्यटन :–

हालांकि जनपद में दर्शनीय और धार्मिक रूचि के कई स्थान हैं, लेकिन पर्यटकों की संख्या पड़ोसी जनपद नैनीताल में आने वाले पर्यटकों की संख्या का केवल 20 प्रतिशत है। जनपद में लगभग 107 होमस्टे हैं, जो अधिकांश ग्रामीण क्षेत्रों में हैं। हालांकि, हवालबाग में लगभग 58, धौलादेवी के पास 11 होमस्टे हैं। भैसियाछाना में केवल 3 और सल्ट में 5 होमस्टे हैं, पर भिकियासैण में कोई भी होमस्टे नहीं है।

जनपद में ग्रामीण पर्यटन को मजबूत करने के लिए निम्नलिखित सिफारिषें की गई हैं :–

अ. प्रकृति आधारित पर्यटन (इको–टूरिज्म) के विकास की अपार सम्भावना है। प्रकृति–पर्यटन के लिए विशिष्ट गंतव्य और रमणीक स्थानों पर आधारित उप–योजनाएं विकसित की जा सकती हैं, जिसमें प्रकृति–पर्यटन में स्थानीय समुदायों की भागीदारी पर ध्यान केन्द्रित किया जाए ताकि उन्हैं लाभ मिल सके।

ब. जनपद की एक पर्यटन विकास योजना तैयार की जा सकती है जो पूरे जनपद के लिए एक व्यापक योजना को जोड़ते हुए विकासखण्ड स्तर पर विभिन्न स्थलों की पहचान करेगी। इसे आजीविका के अवसरों की पहचान करना और विभिन्न योजनाओं के तहत क्षमता निर्माण कार्यक्रमों के साथ अभिसरण करना चाहिए।

स. हाल ही में राज्य सरकार ने होम स्टे को बढ़ावा देने के लिए एक महत्वाकांक्षी योजना शुरू की है। आंकड़ें बताते हैं कि जनपद में मौजूदा समय में होमस्टे बहुत कम है और केवल हवालबाग में ही केन्द्रित हैं। इन्हें आसानी से जनपद के अन्य हिस्सों में बढ़ाया जा सकता है। होमस्टे को क्षमता निर्माण के रूप में समर्थन और वेबसाइट विकास और प्रबंधन की आवश्यकता है।

द. स्थानीय त्योहारों जैसे अल्मोड़ा राम लीला को अधिक से अधिक संख्या में पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए प्रचारित किया जा सकता है।

य. पर्यटन विभाग बहुत न्यून कर्मचारियों के साथ काम कर रहा है तथा इसमें तत्काल वृद्धि की आवश्यकता है।

पलायन आयोग द्वारा किये गये सर्वेक्षण पर आधारित होमस्टे पर सिफारिषें निम्न प्रकार से हैं

होमस्टे ने ग्रामीणों के वैकल्पिक आय का एक बड़ा स्रोत दिया है। गांवों में स्थित होमस्टे न केवल विदेशी पर्यटकों को अपनी ओर खींच रहें हैं, बल्कि हाल के दिनों में घरेलू पर्यटकों की संख्या में भी तेजी से वृद्धि हुई है।

अ. पर्यटक आमतौर पर होमस्टे में रहने के लिए एक मील या अधिक की दूरी पर चलना/चढ़ना पसन्द नहीं करते हैं, आने वाले पर्यटकों की सुविधा के लिए गांवों को मोटरमार्गों से जोड़ने की आवश्यकता है

ब. अल्मोड़ा शहर में पीने के पानी की समस्या है। होमस्टे मालिकों को कई बार पर्यटकों को किसी अन्य होमस्टे में भिजवाना पड़ता है।

स. होमस्टे एक गैर–वाणिज्यिक गतिविधि है, लेकिन मालिकों को बिजली, पानी और हाउस टैक्स के लिए वाणिज्यिक दरों का भुगतान करना पड़ता है।

द. होमस्टे स्वामियों को पर्यटन के सन्दर्भ में प्रशिक्षण देने की आवश्यकता है।

य. पर्यटन विभाग में कर्मचारियों की कमी के कारण होमस्टे पंजीकरण अथवा अन्य सेवाओं के पर्याप्त निर्वहन में विलम्ब होता है।

र. ऐसे क्षेत्र जहां कई होमस्टे हैं, वहां जंगल ट्रेल, ट्रैकिंग मार्ग और अन्य सुविधाएं विकसित होनी चाहिए।

5.2.8 सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योग

जिले में 3,949 औद्योगिक इकाइयां हैं, जिनमें लगभग 10,795 व्यक्ति (2017–18) कार्यरत हैं। वर्ष 2016–17 में SMEs की संख्या 164 थी, जो वर्ष 2017–18 में बढ़कर 184 हो गई हैं, जिसमें क्रमशः 523 से 613 व्यक्ति कार्यरत है। स्याल्दे और सल्ट विकासखण्ड की तुलना में हवालबाग और ताड़ीखेत विकासखण्ड में यह इकाइयां अधिक हैं। जनपद के मरचूला क्षेत्र में सिडकुल के तहत एक औद्योगिक एस्टेट है, जिसे अभी शुरू किया जाना बाकी है।

मुख्य रूप से जनपद में ऊन की कताई–बुनाई में लगे कई कारीगर समूह कार्यरत हैं, कताई–बुनाई, कालीन एवं ऊनी वस्त्र तथा उपयोगी सामग्री का निर्माण किया जाता है।

जनपद में एम.एस.एम.ई क्षेत्र को मजबूत करने की सिफारिषें निम्न प्रकार से है :–

अ. एम.एस.एम.ई. क्षेत्र में जिले के ग्रामीण क्षेत्रों के सामाजिक–अर्थव्यस्था को बदलने की उच्च क्षमता है। सूक्ष्म, लघु एवं कारीगर इकाइयों के प्रकार जो अपेक्षाकृत बड़ी संख्या में सामने आए हैं उनमें कृषि आधारित, रेडीमेड वस्त्र/कताई–बुनाई, कढ़ाई, लकड़ी आधारित, फर्नीचर, मरम्मत और सर्विसिंग इकाइयां आदि शामिल हैं। हालांकि जिले के सभी विकासखण्डों में उनका वितरण समान नहीं है। प्रत्येक विकासखण्ड में ऐसी इकाइयों की क्षमता की जांच की जा सकती है उन्हें

विकासखण्ड/ग्राम पंचायत स्तर की सामाजिक–अर्थव्यवस्था के रूप में बढ़ावा दिया जा सकता है।

ब. इस क्षेत्र के विकास को बढ़ावा देने के लिए अधिकारियो को स्थानीय परिस्थितियों के आधार पर सूक्ष्म, लघु एवं कारीगर इकाइयों को स्थापित करने की आवश्यकता है।

स. आंकडों से पला चलता है कि जिले के कुछ विकासखण्डों में एम.एस.एम.ई. का विकास कम या लगभग नगण्य है। सभी विकासखण्डों में सूक्ष्म, लघु एवं कारीगर इकाइयों के विस्तार के लिए विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

द. जिले में सूक्ष्म, लघु एवं कारीगर इकाइयों की आवश्यकताओं के अनुरूप जिले में क्षमता निर्माण कार्यक्रम भी होना चाहिए।

य. जिले में सूक्ष्म, लघु एवं कारीगर इकाइयों को बढ़ावा देने में फील्ड स्टाफ की कमी है। इस मुद्दे को तत्काल आधार पर संबोधित करने की आवश्यकता है । KVIB केवल 3 लोगों के साथ काम कर रहा है, भले ही इस क्षेत्र में वृद्धि की अपार संभावनाएं हैं।

र. जनपद अल्मोड़ा में एक स्थानीय ऊन प्रसंस्करण कारखाना है, जहां कर्मचारियों एवं विपणन एक बहुत बड़ी समस्या है। इस सुधारने की आवश्यकता है।

ल. उद्यमिता विकास कार्यक्रम आयोजित किए जा सकते हैं और विशेष रूप से ग्राम पंचायतों में किए गए उद्यमियों की देखरेख में जहां ऐसी इकाइयों की कमी है।

व. उद्यमिता विकास कार्यक्रम आयोजित किए जा सकते हैं, विशेष रूप से ग्राम पंचायतों में जहां ऐसी इकाइयों की कमी है, वहां वर्तमान उद्यमियों को सहयोग प्रदान किया जा सकता है।

5.2.9 वाणिज्यिक वाहन

आंकड़ों से पता चलता है कि जिले में पंजीकृत वाहनों की संख्या बढ़ रही है। यह आजीविका उत्पन्न करने में मदद कर रहे हैं। हालांकि हितधारकों के साथ विचार–विमर्श के दौरान यह पता चला है कि उनमें से कई वाहन मालिकों को पुनर्भुगतान और क्षमता के अभाव के साथ समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। इस क्षेत्र में अतिरिक्त आजीविका उत्पन्न करने की क्षमता है, इसके समर्थन के लिए एक कार्य योजना तैयार करने की आवश्यकता है। आर.टी.ओ. इस पहल का नेतृत्व कर सकते हैं।